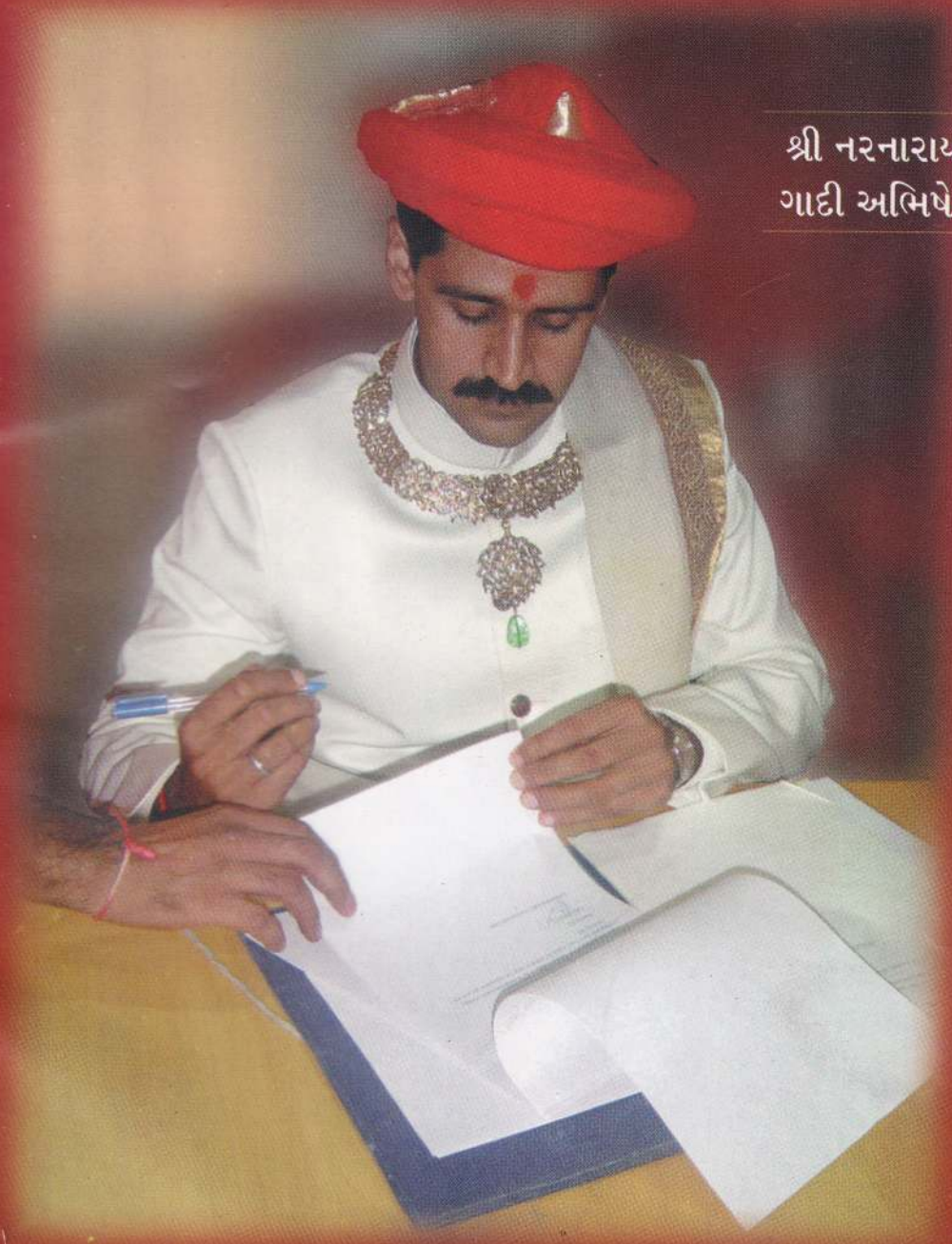
SHREE SWAMINARAYAN

શ્રી સ્વામિનારાયણ

NOVEMBER - DECEMBER 2004



શ્રી નરનારાયણદેવ દેશ ગાદી અભિષેક વિશેષાંક

પ્રકાશકઃ- શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧

Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1



११-०७



११-१४



११-१५



११-१६



११-१७



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)

पत्रिका (मासिक अंक) मूल्य
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश $ 100
प्रति कोपी ५-००

प्रकाशन समय
प्रति माह (मास) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र (प्रधान
पंडित) श्री स्वामिनारायण मंदिर,
अहमदाबाद

प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०,
२२१३६८१८.
फेक्स : २२१७६९९२.
Visit us : www.swaminarayan.info
E-mail : snndmandir@india.com

श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान का मुखपत्र

SHREE SWAMINARAYAN

श्री स्वामिनारायण

साल - ३ नवम्बर-डीसम्बर -२००४

अ नु क्र म णि का

१.	अस्मदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा एवं भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	३
३.	सप्तम पीठाधीश्वर	५
४.	आचरण ही उपदेश	७
५.	महिमा आचार्यपद की	९
६.	अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव पीठस्थान के आचार्यो	१०
७.	प.पू. महाराजश्री के प्रति आदर भाव	१८
८.	धन्य आचार्य देवो भव:	१९
९.	करुणासागर प.पू. महाराजश्री	२२
१०.	जो वह तेज है (ग.म.१३) वही यह तेज (Tej) है	२४
११.	तेज की किरण	२८
१२.	टोरेन्टो केनेडा में श्रीहरि के छठ्ठे वंशजकी पदार्पण	३३
१३.	श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान के सातवे आचार्यके अभिषेक	२४
१४.	महापुरुषों के मुखकी अमृतवाणी	३८
१५.	सवाया बनकर रहना हरिसुत	४२
१६.	सत्संग अभ्युदयार्थ आचार्य महाराजश्री का	४८
१७.	आचार्य पदकी महिमा	५०
१८.	श्री नरनारायणदेव पीठस्थान पदारोहण सन्मान समारोह	५२
१९.	NRI हरिभक्तोंकी सराहनीय निष्ठा	५६
२०.	समाचार वृत्तांत	५८

अस्मदीयम्

तन्त्रीश्री की तरफ से.....

जगत के सभी मनुष्यों को सुख और शांति की खोज में सम्पूर्ण जीवन खपादेना पडता है। सच्चे अर्थ में सुख कैसा हो, शाश्वत शांति कैसे मिले इसके लिए हजारो वर्ष से दुनिया के सभी लोग विचारों के चिंतन में लगे रहते हैं। संशोधन के बाद दार्शनिकोंने सांसारिक दुःख से दूर होने के लिए मोक्ष अर्थात् मुक्ति प्राप्त करना ही सार्वत्रिक सर्वमान्य सिद्धान्त स्थापित किया है। विविध प्रकार के धर्म सम्प्रदाय, दर्शन, चिन्तक, संशोधक, इत्यादिलोगों ने मोक्ष प्राप्ति के लिए अनेक प्रकारकी कल्पना की है। जिसमें भारतीय ऋषि मुनियों ने अतिश्रेष्ठ एवं आत्यंतिक मोक्ष के लिए परमेश्वर की प्राप्ति को ही अन्तिम लक्ष्य माना हैं। उसमें भगवान श्री स्वामिनारायण के मोक्ष का सिद्धान्त एकदम सरल तथा स्वाभाविक रीति से सर्वमान्य शिक्षापत्री में स्वयं कहते हैं "कृष्णमुक्तिश्च गम्यताम्" परमेश्वर के चरण कमळकी सेवा मिले यही मुक्ति। ऐसी सेवा अर्थात् साकारब्रह्म परमात्मा के स्वरुप की उपासना। भक्ति द्वारा परमात्मा को प्राप्त करने का मार्ग बताया है। श्रीहरि द्वारा स्थापित देव तथा आचार्य देनो से इह लौकिक पारलौकिक सुख सुलभ है, आत्यन्तिक कल्याण भी निहित है। देव अर्थात् श्री नरनारायणदेव। आचार्य अर्थात् धर्मवशं अर्थात् उन्हीं के वंश में जो उत्पन्न। स्वयं भगवान स्वामिनारायण ने अपने दत्तकपुत्र आद्याचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराज में अपने अपर स्वरुप का अधिष्ठान किया। वे तथा उनकी वंश परंपरा में वर्तमान समय में सप्तमाचार्य पद पर जिनकी वेदविधि से लाखों सन्तो हरिभक्तों की उपस्थिति में श्रीहरिके अपर स्वरुप छठ्ठे आचार्य श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने अपनी सुदीर्ध कीर्ति से शोभायमान प्रगट श्रीहरि की प्रतीक समा लालपगड़ी को अपने बरद हाथों से अपने औरस पुत्र को जो लाखों युवानों के मसीहा हैं सत्संग हृदय सम्राट पूज्य लालजी महाराजश्रीके मस्तक पर धारण करवाये तब से अब सातवें आचार्यपद पर पदारुढ हुए हैं। उनकी आज्ञा तथा उनसे प्रतिष्ठित देवों की पूजा अर्चना भक्ति करने तथा इन्ही का आश्रय ग्रहण करने से निश्चित ही जीवात्मा का आत्यन्तिक कल्याण होगा, मोक्ष का मोर्ग खुलजायेगा। इसमें लेशमात्र संदेह नहीं। अपने जीवन में ऐसी धन्य घडी आती रहे ऐसी सावधानी रखे एसी भगवान को प्रार्थना।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

– *शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का*

जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रु परेखा



अक्टूबर - २००४

१. विपुल कोठारी एन्ड कुं. (सी.ए.) की नई आफिस में पदार्पण, नवरंगपुरा । नारायणघाट मंदिर में पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण ।

प.भ. भरतभाई के श्रीहरि क्लीनीकमें में पदार्पण, नवरंगपुरा ।

३. प.भ. भगवानभाई नागरदास पटेल के यहाँ पदार्पण, नारणपुरा ।

प.भ. अनंतप्रसाद जेवेरीलाल पंड्या के यहाँ पदार्पण, नारायणपुरा ।

प.भ. नटवरलाल मगनभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, नारायणपुरा ।

प.भ. कृष्णकांत नागरभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, घाटलोडिया ।

प.भ. हरेशभाई जसभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, सेटेलाइट रोड ।

४ से १० तक बद्रिनारायण मंदिर में प.भ. नारायणभाई ईश्वरभाई पटेल द्वारा आयोजित पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

११. प.भ. बाबुभाई शिवराम ठक्कर के यहाँ पदार्पण, पालडी ।

१२. प.भ. सोमाभाई नरसीभाई पटेल और प.भ. कांतिभाई मनजीभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, घाटलोडिया

प.भ. श्रीधरभाई रावल के यहाँ पदार्पण, सेटेलाइट रोड ।

प.भ. कौशिकभाई चावडा और प.भ. करशनभाई परमार के यहाँ पदार्पण, घाटलोडिया.

प.भ. डॉ. हर्षदभाई कस्तुरचंद्र झिंझुवाडीया के यहाँ पदार्पण, नवरंगपुरा ।

प.भ. जयेशभाई डाह्याभाई ठक्कर के यहाँ पदार्पण, वस्त्रापुर ।

१३-१४ धूळकोट (मूली) में श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनो का) के भूमि पूजन के अवसर पर पदार्पण ।

१५. श्री नरनारायणदेव पीठ के सप्तम आचार्य का अभिषेक स्वयं कर प.पू. लालजी महाराज को पगड़ी पहनाई ।



भावी आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों.की रुपरेखा

अक्टूबर - २००४

७-८. वाली (राजस्थान) श्री स्वामिनारायण मंदिर में युवा शिबिर में पदार्पण ।

१०. कलीयाणा (विरमगाण) में सत्संग सभा में पदार्पण ।

प.पू.ध.धु. आचार्यश्री१००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा



१५ सर्वोपरि श्री नरनारयणदेव पीठ के ७वे आचार्य पद पर पदारुढ हुए ।

२३ प.पू. निवृत्त आचार्य महाराजश्री और प.पू. आचार्य महाराजश्रीकी उपस्थिति में राजकीय धार्मिक महानुभाव और देश-विदेश के हरिभक्त के उपस्थिति में गादी पदारोहण सत्कार समारंभ धामधूम से मनाया गया

२४ से १० नाईरोबी (केन्या) स्वामिनारायण मंदिर के सार्ध शताब्दी महोत्सव में पदार्पण ।

१० करजीसण मंदिर के पाटोत्सव में पदार्पण ।

११. अहमदाबाद मंदिर में श्री हनुमानजी का पूजन-अर्चन आरती अपने हाथो से किये ।

१२. सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव की आरती करने पधारे और शारदा पूजन किये ।

१३. नूतन वर्ष : श्रृंगार आरती करने पधारे ।
प.भ. वसंतलाल त्रिभोवनदास के यहाँ पदार्पण, पालडी ।

१४-१५ कच्छ भुज पदार्पण ।

१६. श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया बाल स्वरुप कष्टभंजन के अभिषेक के अवशर पर पदार्पण ।

१७-१८. रामपर (कच्छ) श्री स्वामिनारायण गुरुकुल में मूर्ति प्रतिष्ठा के अवशर पर पदार्पण ।

१९. प.भ. शंकरभाई पटेल के यहाँ पारायण पर पदार्पण मोखासण ।

२० से २५ छपैया तुलसी विवाह के अवशर पर पदार्पण .

२४. मकनसर मंदिर के पाटोत्सव पर पदार्पण ।

२५. प.भ. महेन्द्रभाई गंगाराम राजगौर के यहाँ पदार्पण, मेमनगर ।

२६. नारायणपुरा मंदिर में तुलसी विवाह पर पदार्पण ।

२७. जेतलपुर मंदिर (जौधरी लाभुभाई के आमंत्रण) पर पदार्पण ।

२८. गवाडा गाँव में प.भ. अमृतभाई धनजीभाई के यहाँ पारायण के अवशर पर पदार्पण .

२९. प.भ. विजयभाई चावडा के यहाँ पदार्पण, मेमनगर ।

३०. प.भ. मधुभाई चोडडीया के यहाँ पदार्पण, बापुनगर ।

सप्तम पीठाधीश्वर

– शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंतश्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदावाद)



सर्वावतारी सर्वोपरि पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण द्वारा स्थापित उद्धव संप्रदाय के (स्वामिनारायण) सर्वोच्च धर्मगुरु स्थान का आचार्यपद कहा जाता है। जो स्थान साक्षात् भगवान श्री स्वामिनारायण का है। उस स्थान पर अपने अपर स्वरुप से विराजमान होकर जगत के अनंत जीवों का आत्यंतिक मोक्ष हो ऐसी अति करुणाकरने के लिए एक नहीं दो-दो रुपों से विराजमान होकर भक्तों को दर्शन का सुख देते हैं । इस धर्मवंशी आचार्य पद के लिए कोई साधना, जप, तप या उपासना काम नहीं करती । कोई उलटे लटकर सोपारी पर मस्तक रखकर पंचाग्नि तप किया हो तो भी यह पद प्राप्त नहीं होता है। यदि ऐसा होता तो इस पद की प्राप्ति के लिए असंख्य इच्छुकों की लाइन लग जाती । तब कौन प्रथम होता कौन सर्व श्रेष्ठ होता इस तरह लंबी प्रक्रिया में से गुजरना होता। यहाँ तो भगवान के अपर स्वरुप में विराजमान होना है। यदि इसी तरह कोई जप-तप या कठिन साधना करलेने से यह सर्वोच्च पद प्राप्त करले तो कठोर तथा उग्र तपस्या करने वाला हरिण्यकशिपु जैसे इस पद पर विराजमान होकर न जाने कैसे-कैसे जीवों को अक्षरधाममें भेंज दे और किस प्रकार के मोक्षमार्ग की व्यवस्था करदे यह सब कल्पना का विषय है। इसी लिए तो इस पद पर कोई अन्य की शक्यता ही नहीं है कि इस पद पर विराजमान हो सके ।

परंतु यह पद तो स्वयं सर्वावतारी सर्वोपरि अनंत कोटी ब्रह्मांड के अधिपति परमेश्वर भगवान श्री स्वामिनारायण का ही है। इस पद पर स्वयं परमात्मा ही विविध स्वरुपधारण करके विराजमान होते है । लेकिन कोई भी जीव इस पद पर नहीं आ सकता है । यह शास्त्र सम्मत वात है

पंचरात्र आगममें कहा है कि -

शिलादिधीः कृष्णमूर्तौ
स्वगुरौनरधीस्तथा ।
वैष्णवजातिधीर्येषां
तेऽपराधवराजनाः ॥

गुरु स्थान पर विराजमान कोई मनुष्य है, कोई जीव है ऐसी बुद्धि हो तो भी वह अपराध है । स्वयं कोई गुरु बन बैठा हो, या अपने को गुरु मानता हो वह मनुष्य ही है, लेकिन यह तो स्वयं अपने इष्टदेव भगवानश्री स्वामिनारायणने हम सभी त्यागी (साधु-ब्रह्मचारी-पार्षद एवं गृही (चारोवर्णों के गृहस्थाश्रमियों) के गुरु स्थान पर विराजमान किया है। भगवान श्री स्वामिनारायणने शिक्षापत्री में आज्ञा किया हैं ।

मदाश्रितानां सर्वेषां धर्मरक्षण हेत वे ।
गुरुत्वे स्थापिताभ्यांच ताभ्यां दीक्ष्या मुमुक्षुवः ॥
(शि.प्र. १२८)

स्वयं भगवान स्वामिनारायणने अपने वाङ्मय स्वरुप महाग्रंथ में आज्ञा की है कि आप सभी के गुरु

स्थान पर.यें आचार्य है । भगवानने शास्त्रकी मर्यादा को ध्यान में रखकर जो आज्ञा की है उसमें शंका का कोई स्थान नहीं है । इन सभी बचनो से यह फलित होता है कि गीता - भागवतादि शास्त्रों में कथनानुसार अनंतरुप को धारण करनेवाले अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति भगवान स्वामिनारायण इस पृथ्वी पर मनुष्यशरीर धारण करके अपने अलौकिक सामर्थ्य को छिपाकर हमसभी के मोक्ष के स्थान पर विराजमान हुए हैं । जैसे मनुष्य जीव या देव जैसे नवलखा पर्वत के नवलाख योगियों को सुख देने हेतु, उतने ही स्वरुप को धारण करने वाले श्रीनीलकंठवर्णी योगियों के लिए करुणार्द्र होकर उतने ही स्वरुप को धारण करें तो इसमें क्या है ? अपने लिए तो जिसकी भक्ति से दर्शन करें, उनके चरणों में समर्पति हो, तो निश्चित ही करुणार्द्र होकर हम सभी के बीच में मनुष्यरुप को छिपा कर जगत के जीवों का कल्याण कैसे हो यह ध्यान रखकर दर्शन देते हैं । इसलिए भूल से भी कभी मनुष्यभाव की कल्पना नहीं करना । यही अपना कर्तव्य है ।

ऐसे श्रीजी महाराज के अपर स्वरुप आचार्य महाराजश्री जो अहमदाबाद गादी तथा वडताल गादी स्थान पर विराजमान हों उन्हीं के पास से मोक्षकी इच्छावाले मंत्र दीक्षा लें तथा उनसे प्रतिष्ठित मूर्ति की पूजा अर्चना करे भागवती दीक्षा उन्ही सेलें । इस प्रकारकी आज्ञा भगवानने शिक्षापत्री श्लोक सं. ६२ में की है -

आचार्येणैव दत्तं यद्यच्च तेन
प्रतिष्ठितम् ।
कृष्णस्वरुपं तत्सेव्यं वन्द्यमेवेतरत्तु
तत् ॥

आचार्यश्री द्वारा जिस मूर्ति की प्रतिष्ठा न हुई हो उस स्वरुप की सेवा पूजा उपासना नहीं करना, केवल वंदन करना, कीसी प्रकार का फल मिलता नहीं है ।

पंचरात्र में ऐसा लिखा है कि -

"विष्णुभक्तिरतान्साधून्दीक्षये
द्विधिना गुरु:" ।

विधिपूर्वक वैष्णव भक्त को भागवती महादीक्षा गुरुप्रदान करें । विधि अर्थात् वेदविधि जो यज्ञ होमात्मक हों । जिसमें अधिकार केवल गृहस्थाश्रमी को है । गृहस्थाश्रमी सिवाय वैदिक विधि से यज्ञ होम करने का अधिकार किसी को नहीं है। नैष्ठिक ब्रह्मचारी, साधु, त्यागी, सन्यासी, अपरणीत, विधुर, या त्यक्त को हवन करने का अधिकार नहीं है।

शंख स्मृति में लिखा है कि -

"आचार्यो निज शिष्याणां स्त्रीणां
तत्पतयस्तथा ।"

जैसे स्त्रियों की रक्षा उनका पति करता है, उसी प्रकार आचार्य भी अपने शिष्यों की रक्षा धर्ममार्ग से करें - धर्म पालन करने की शिक्षा दें जिससे धर्म के दृढ व्रती बन सकें ।

भागवती दीक्षा देने से मुमुक्षुओं को द्विजत्व प्राप्त होता है । उनका योग तथा नाम बदलजाता है । जन्म देना साधु या सन्यासी के धर्म-या आचरण में कभी भी न्याय संगत नहीं है । कोई समाज या राष्ट्र (राज्य) प्रशासन प्रणालिका में भी न्यायिक रीति से गृहस्थाश्रमी शिवाय कोई भी स्त्री हो या पुरुष हो उसे जन्म नियमत: नहीं दे सकता हैं । सांसारिक व्यवहार मार्ग में भी विवाह के विना व्यक्तिको जन्म देने का अधिकार नहीं हैं । उसी तरह अध्यात्म मार्ग में भी अग्नि को साक्षी करके विवाह के विना व्यक्ति को जन्म देनेका अधिकार नहीं है । दीक्षा यह द्विजन्म है । दूसरी बार का जन्म अर्थात् आध्यात्मिक जन्म, ऐसा दिव्य आध्यात्मिक जन्म अर्थात् दीक्षा के लिए जीवमात्र "आचार्येणैवदत्तं" आचार्य का आश्रय अवश्य ग्रहण करे । हम सभी को ऐसा आश्रय मिला है । उसी भगवान स्वामिनारायण के सातवे धर्मवंशी आचार्य जिसका विधिपूर्वक पीठारोहण पट्टाभिषेक किया गया है ।

आचरण ही उपदेश

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी
(जेतलपुर)



भगवान श्री स्वामिनारायण के जीवन मंत्र को प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने श्री नरनारायणदेव की गादी पर पैंतीस वर्ष तक पदारुढ होकर मूर्तिमंत विताया । "जीवन ही सन्देश" तथा "आचरण ही उपदेश" इस सूत्र को चरितार्थ किया। भगवानश्री स्वामिनारायण सतत विचरण करके सामान्यजन के लिए सुलभ बने थे । ठीक वैसे ही प.पू. आचार्य महाराजश्री प्रत्येक सत्संगी के लिए सरल तथा सुलभ बने । आपके लिये कोई अमीर-गरीब नहीं था । सर्व समभाव की भावना से सभी के घर घर, गाँव गाँव, नगर-नगर सभी के घर पर्दापण करके उनकी इच्छाओं को पूर्ण किये एक आदर्श पुरुष की तरह आपका व्यक्तित्व रहा । सामान्य व्यक्ति के साथ भी फोन पर बात करना, मिलना, उनके घर पदार्पण करना, कितनी सरलता यह तो देव पुरुष में ही संभव है जो आप प्रत्यक्ष दृष्ट हो रहे हैं । परिणाम स्वरुप सारा सत्संग आपके प्रताप से फला फुला और पल्लवित हुआ । कितने हरिभक्तों के मुख से सुनता हूँ कि [illegible] समय हो गया महाराजश्री को घर में पदार्पण किये फिर भी स्मरण वैसा ही बना हुआ, भुलाता नहीं । महाराजश्री की मूर्ति यदाकदा स्वप्न में भी दर्शन देती रहती है । बड़े व्यक्तित्ववाला छोटे के साथ मित्रता रखे तो उसकी पहचान बडे के रुप में होती है । प.पू. आचार्य महाराजश्री ने आमंत्रण देने आये हुए किसी भी हरिभक्त को अपमानित नही किया । प्रत्येक सत्संगी को न्यायदिया । भले ही वह निंदा या स्तुति करता हो, विना पक्षपात के उनके समभाव की स्थिति, यही देवत्व है ।

एक हरिभक्त जो निंदा का हजारो पन्ना छपवा था । खुलेआम गाली बोलता, आक्षेप करता, परिणाम स्वरुप उस हरिभक्त का व्यावहारिक, मानसिक, कौटुंबिक रीति से पतन होने लगा और पश्चाताप करने लगा । एकबार महाराजश्री के पास बडी नम्रता से हाथ जोड़कर घर पदार्पण करने का आमंत्रण दिया । महाराजश्रीने विना विचारे हाँ कर दिया और उसके घर पधारे । वह हरिभक्त महाराजश्री के चरण परगिरकर इतना रोया जिसका वर्णन नहीं हो सकता । लेकिन महाराजश्रीने कभी उसकी गल्ती को मन में ही नहीं लिया, बल्कि वह हरिभक्त भूल का पश्चाताप करके मांफी मांगने लगा । महाराजश्री उस पर प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिये कि भगवान आपका सब प्रकार से हित करेंगे ।

जीवाखाचर जैसी भूमिका वाले उस हरिभक्त की जीवन डोरी महाराजश्रीने पकड़ी और कल्याण हो गया । ऐसे अजात शत्रु तो भगवान ही हो सकते हैं ।

प्रतिदिन प्रात: ८ बजे अहमदाबाद मंदिर के सभा मंडप में जहाँ कथा वांची जाती है वहाँ जब तक कथा हो या आरती की घंटी बजे तब तक कथा श्रवण करना यह आवकी दैनिक चर्या रही है इसमें कभी व्यव धान यदि आया है तो कही बाहर जाने पर ही बाद में अपनी आफिस में १२ बजे तक बैठते क्योंकि हरिभक्त लोग दर्शनार्थ दूरदूर से आते उन्हे धक्का न हो इसलिये कभी निवास स्थान पर पहले नहीं जाते ।

गांवो के कार्यक्रमों में समय से पूर्व पहुँचने का आग्रह आप रखते, परिणाम स्वरुप ३५ वर्ष की उम्र में कोई भी ऐसा प्रसंग नहीं आया, जिस में आप विलम्बसे पहुँचे हों । बल्कि आयोजक ही बिलम्ब से आये हैं ऐसे उदाहरण बहुत हैं । यद्यपि गृहस्थाश्रमी होते हुए कभी गृहकार्य या व्यावहारिक कार्य वश सत्संग पर मंदिर के उत्सव में न आये हों ऐसा कभी बनाही नहीं क्योकि सत्संग को सर्वस्व मानते थे ।

विदेश के विचरण में काफी कष्ट होता हैं । समय की अदलाबदली तथा एक दूसरे स्टेशन से आने जाने की दूरी होने से समय अधिक लगता । ऐसे प्रश्नों को ध्यान में नहीं रखते, सत्संग के लिए आराम नहीं करते, अपने भोजन की भी चिन्ता छोड़ देते । कभी तो भोजनका समयबीत जाता इसलिए एक हीबार भोजन करते । कभी तो गाड़ी में ही रात्रि या दिन का आराम कर लेते । ऐसे कष्ट का निरन्तर सहन करके सत्संग को जागृत



किया है ।

एक-एक श्वांस सत्संग के लिए उपयोग किया है पैंतीस वर्ष तक एक छत्र धर्मराज्य करके भी कभी आपने किसी को उपेक्षित नहीं किया । तथा किसी से कोई अपेक्षा नहीं रखे । सत्संग के विकास में नि:स्वार्थ प्रयत्नशील रहे ।

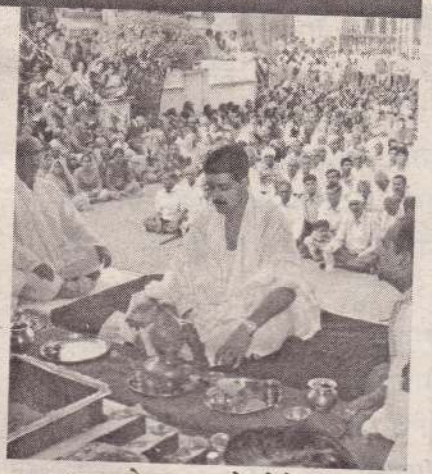
आचार्य पद पर प.पू.ध.धु. आचार्य श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने जिस प्रकार सिद्धि प्राप्त की उसी तरह लालजी महाराजके रुप में प.पू.ध.धु. कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने अद्वितीय सिद्धि प्राप्त किया है । जो भूतकाल में लालजी महाराज के रुप में ऐसा धर्मकुल को संयोग नहीं मिला । स्कूल जीवन के बाद सत्संग की प्रवृत्ति में तन मन से लग गये । विदेश के नये-नये देशों में ओस्ट्रेलीया, न्युझीलेन्ड, फीजी, थाईलेन्ड, आप्रिका के विभिन्न देशों में तथा गुजरात राज्य के बाहर के राज्यों में सत्संग प्रचार की प्रवृत्ति करके देश-विदेश में आज मंदिरो का जो निर्माण हुआ है या नव युवानों में जो नयी दिशा या नयी प्रेरणा मीली है यह आपके पुरुष प्रयत्न का ही परिपाक है ।

आपने दश दिन का जंगल जैसे एकान्तवाले वातावरण में शिबिर का आयोजन करके चाहे देश हो या विदेश इसके माध्यम से नयी चेतना

अनुसंधान पेज नं. २१

महिमा आचार्यपद की

- हरिकेशव शास्त्री



आप तो यहजानते होंगे कि अपने भारत के संविधान में राष्ट्रपति का सर्वोच्च स्थान है । सम्पूर्ण देश का सर्वोत्कृष्ट स्थान है । आप यहजानते हैं कि सुप्रीम कोर्ट किसी भयंकर गुनहगार को फांसी की सजा सुनाई हो यदि वह राष्ट्रपति की शरण में चला जाय और उसे राष्ट्रपति चाहे तो मृत्युदंड से बचा सकता है ।

हमें दूसरे प्रकार से कहना है हमें देश की नहीं समाज की नहीं बल्कि सत्संग की बात करनी है । थोडा विचार करना है कि मानव द्वारा जब इस प्रकार का निर्धारण हो सकता हैं तो अपने भगवान स्वामिनारायण द्वारा जिसका निर्धारण किया गया हो वह पद आचार्यश्री का पद जो धर्मका सबसे बड़ा पद है । जिस पद पर महाराजश्रीने आचार्य महाराजश्री की नियुक्ति की है। आपकी महत्ता अपरंपार है ।

चाहे जैसा कितना बडा पापी हो यमपुर चौरासी लाख नरक की यातना मिली हो परंतु इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण द्वारा संस्थापित आचार्य पद पर पदाधिरुढ आचार्य श्री यदि अभयदान कर दें तो जीव नरक चौराशीमें से मुक्त होकर यम यातना से रहित हो जायेगा और जीव का कल्याण हो जायेगा, अक्षरधामका अधिकारी हो जायेगा ।

ऐसे मोक्षदायी पद पर रहकर प.पू.ध.धु. आचार्य श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ने ३५ वर्ष तक लगातार विश्व के बहुतायत देशों में स्वामिनारायण भगवान के नाम की जयजयकार करवाया । अब उसी सर्वोच्च स्थानपर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराज विराजमान हुए है, आप अपने पिताश्री जो निवृत्त आचार्य हैं उनसे कहीं अधिक अपना स्थान तथा धर्मकीर्ति को फैलायेगे । सत्संग की सेवा करेंगे। भगवान स्वामिनारायण बल शक्ति ऐश्वर्य दें जिससे सत्संग की उत्तरोत्तर वृद्धि कर सकें ।

भक्तों ! याद रखना हम किस की शरण में है । स्वामिनारायण भगवान तथा स्वामिनारायण संस्थापित इस अनोखे सत्संग रुपी बन्धारण की शरण हैं । ऐसे अलौकिक शरण को प्राप्त करके सामान्य भक्त में भी अलौकिक व्यक्तित्व प्रगट होता है । इस बात को निष्कुलानंद स्वामी ने स्पष्ट लिखा है ।

गीलोडा गाँव के चार ब्राह्मण भक्त खेत में से घर आ रहे थे । गाँव में से किसी कुसंगी जीव को यमदूत लेकर जा रहे थे । इसे उन भाईयों ने देखा और मन में विचार किया कि अब क्या करें ? अपने गाँव का एक भक्तजीव यमपुरी में जा रहा है यह तो गांव की शोभा नही है । वे सब भगवान स्वामिनारायण का ध्यान किये और यमदूतों के सामने हो गये । हम भगवान के भक्त तभी कहलायेगें जब इन यमदूतों को वापस करदें । आवाज देकर यमदूतों को खडा किया । यमदूरों पर लकडी से प्रहार भी किया । यमदूतो को ख्याल आया कि धरती के मानव हमें लकडी से प्रहार कर रहे हैं अतः इनके भीतर जरुर कोई करिश्मा है । ये जरुर कोई शक्तिशाली मानव हैं। इनमें बहुत ताकत है । इन में से अभी एक ने ही लकडी का प्रहार किया है । तीन तो अभी पीछे हैं । यदि तीनो साथ में आ जायेंगे तो हम मे से कोई यमपुरी तक संदेश भेंजने वाला नहीं रहेगा ।

पश्चात् चमदूत उस जीवो को वहीं छोड़कर भागचले, इतनाही नहीं बल्की भक्तों से माफी मांगते गये और कहते गये

भक्त तमे साचा साचा स्वामी,
अमे जाईये छीये हार पापी ।

जिसके हाथ से पाणी जीव को छुडाया हो वे भक्त कितने प्रभावशाली होंगे । इतनी शक्ति किसके प्रताप से आयी ।

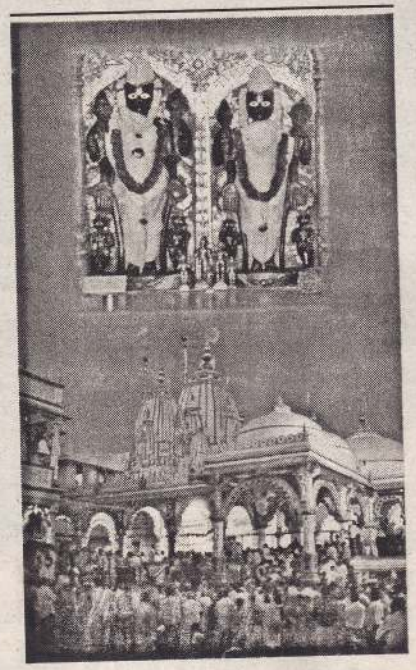
स्वामिनारायण भगवान की दृढ आस्था तथा उनसे निश्चित की गयी व्यवस्था विधि जैसे देव, आचार्य, संत, शास्त्र के प्रति दृढ विश्वास हो तो उसमें ईश्वर शक्ति का संचार होता ही है। उसका कल्याण तो होता ही है । परंन्तु दूसरे का भी कल्याण करता है। यदि शरणागति की या भक्ति की या निष्ठा की उत्तमविचारशरणी है ।

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव पीठस्थान के आचार्यो की परम्परा

– कोठारी सत्यप्रकाशदासजी

हिन्दू धर्म आचार्यों की परम्परा से गुंथा हुआ है । श्रीमद् शंकराचार्य, श्रीमद् रामानुजाचार्य, श्रीमद् निम्बार्काचार्य, श्रीमद् माध्वाचार्य, श्री मद् वल्लभाचार्य, ए पांच आचार्य तथा उनके सिद्धान्त - द्वैत - अद्वैत, शुद्धा द्वैत, द्वैताद्वैत, विशिष्टा द्वैत के मतानुसार अनेक सम्प्रदायों का विस्तार है ।

वि.स. १८९५ की जन्माष्टमी को श्री रामशर्मा का प्राकट्य अयोध्या नगरी में हुआ । जो श्रीकृष्ण के सखा उद्धवजी थे । वैराग्य धारण करके निराकारी संत आत्मानंद के शिष्य बन गाये थे । बाद में निराकार ब्रह्म की उपासना जानकर वहाँ से दक्षिण भारत के काबेरी गंगातट पर श्री रंगमक्षेत्र में श्रीमद् रामानुजार्य का मुख्य पीठ स्थान है । वहाँ चले गये । वहाँ जाकर श्री वैष्णव प्रपन्नामृत आदि शास्त्रों का अध्ययन किया । साक्षात् रामानुजाचार्य ने स्वप्न में



आकर उन्हें दीक्षा दी और "उद्धव" नाम के संप्रदाय को स्थापित करने की आज्ञा की । पश्चात् वृन्दावन में कुछ आश्रितों के बीच में "उद्धव नाम के वैष्णव" सम्प्रदाय की स्थापना की । जिस के आचार्य पद पर स्वयं रामानंद स्वामी, विराजमान हुए । रामानुजाचार्य द्वारा प्राप्त गुरु मंत्र से सभी शिष्यों को दीक्षा देते जिससे ब्रह्म के साक्षात्कार की अनुभूति होने लगी थी । करीब ५४ वर्ष तक संप्रदाय के आचार्य पद पर श्री रामानंद स्वामी विराजमान रहे । वि.सं. १८५६ में अपने लोज गाँव के आश्रम में आये हुए छपैया में प्रगट ब्रह्म श्रीनीलकंठवर्णी को योग्य शिष्यमानकर वि.सं. १८५७ कार्तिक शुक्ल प्रबोधिनी एकादशी को सम्प्रदाय की गद्दी पर आचार्य पद का अभिषेक किया तथा सहजानंद स्वमी एवं नारायणमुनि नाम रखदिया । निवृत्त आचार्य गुरु रामानंद स्वामी के अक्षरनिवासी होने के बाद सहजानंद स्वामीने २००० जितने वैराग्य मूर्ति संतो को दीक्षा दी । तथा अपने दिव्य तथा अलौकिक प्रभाव से दीक्षित संत ब्रह्मव्रत धारण करके गाँव गाँव घूमकर अमानवों को मानव

अहमदाबाद देश के आचार्यश्री का नाम	अभिषेक के समय उम्र	गादी परविराजमान (वर्ष)	कुल आयुष्य
१. आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री	१७	४२	५९
२. द्वितीयाचार्यश्री केशवप्रसादजी महाराजश्री	३३	२२	५५
३. तृतीयाचार्यश्री पुरुषोत्तमप्रसादजी महाराजश्री	२०	१२	३२
४. चतुर्थाचार्यश्री वासुदेवप्रसादजी महाराजश्री	३	३५	३८
५. पंचमाचार्यश्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री	१६	३२	४८
६. षष्ठाचार्यश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री	२५	३५	विराजमान हैं
७. सप्तमाचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री	३३	विद्यमान है७	

बनाकर जीवन को चरितार्थ किया । जिससे यह संप्रदाय प्रगति के गति पर अग्रसर रहा । ऐश्वर्य मूर्ति साक्षात् परब्रह्म श्री स्वामिनारायण परमात्मा के दिव्य सुख को भोगने लगे तथा प्रभु के सुख में संसार को असार समझ कर प्रभु ही एकमात्र प्राप्तव्य हैं इस तरह निर्व्यसनिक बनकर भगवत परायण हो गये । भगवान श्रीहरिने वि.स. १८८२ में अपने दोनों भाई श्री रामप्रतापजी तथा ईच्छारामजी के पुत्रों को क्रम से अयोध्याप्रसादजी तथा रघुवीरप्रसादजीको दत्तकपुत्र लेकर संप्रदाय के आचार्य पद पर विराजमान कर दिया । मोक्षमार्ग स्थापित करके स्वयं मनुष्य देह का परित्याग कर दिया । भगवान श्रीहरि की परम्परा में अहमदाबाद एवं वडताल की गादी पर जिन जिन समयों में जो आचार्यश्री विराजमान होते हैं उनसे सत्संग की उत्तम प्रवृत्ति होती हैं ।

ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री : अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव की गादी के प्रथम आचार्य के रुप में स्वयं स्वामिनारायण भगवान ने गादी अभिषेक किया । आदि आचार्य सं. १८८२ के कार्तिक शुक्ल एकादशी को अभिषेक हुए थे । जन्म सुवसीनी भाभी के कोख से सं. १८६५ को ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी को छपैया में हुआ था । उनका जीवन साधु जैसा था । उन्होने अपनी देह सत्संग के उत्कर्ष के लिए रखा था । श्रीहरिके साथ रहने के कारण उत्तम गुणो से युक्त थे । तीनो अवस्था में वे साक्षात् श्री स्वामिनारायण भगवान को देखते थे ।

एकबार संतोके साथ आचार्य महाराज जेतलपुर के पास गामडी



गाँव में पधारे थे तब सत्संगी आनंद युक्त हो गए थे । जिसकी विह्वलता पाकशाला (रसोई) तक चली गई । ब्राह्मण ने खीर में शक्कर की जगह नमक डाला और दूधपाक तैयार किया । ठाकुरजी को भोग लगा कर आचार्यश्री खाने बैठे, श्री हरि में अखंड वृत्ति के कारण वे दूधपाक खा गए । उनका मन भगवान की प्रसादी में शक्कर और नमक समान था । मुख पर जरा भी ग्लानी प्रदर्शित नही होने दी । जब दूसरे लोग खाने बैठे तब पता चला ।

सत्संगियों को दुःख हुआ और आचार्यश्री से माफी मांगी । आचार्यश्री प्रशन्नतापूर्वक कहने लगे भक्तो दुःखी मत हो इस देह को भाडा तो देना पडता है । और भगवान की प्रसादी में स्वाद की भावना नही रखनी चाहिए । ये था उत्तम निःस्वादी वर्तमान और आत्मनिष्ठा जिसे खुद पाला और दूसरों को बताया ।

एकबार महाराजश्री अवधभवन में मानसी पूजा करने बैठे थे । और श्रीहरि में लीन थे । उसी वक्त एक बिच्छु उनकी पीठ पर चढ गया और स्वभाव के मुताबिक डशने लगा । फिर भी एक घंटे तक मानसीपूजा में रहे । देह का भाव भी आने नही दिया । फिर पार्षद को कहा पीठ में कुछ काटा है । तब सेवको को बिच्छु मिला । पूरी पीठ डंक से लाल रंग का और सूज गया था । सभी को अति आश्चर्य और दुख हुआ । महाराजश्रीने कहा प्रत्येक प्राणी अपनी प्रकृति के मुताबिक ही आचरण करता है । उसने उसकी प्रकृति दिखाई लेकिन हम अपनी दैवी प्रकृति क्यो भूले ।

वे विद्यावान थे और विद्या के लिए सहानुभूति रखते थे । वे कवि भी थे और उनके द्वारा रचित कई कीर्तन मशहूर है । और ऐतिहासिक कलाकृति से युक्त हवेली का यह मकान उन्होने बनवाया था । डुंगरपुर, ईडर, सिद्धपुर, मांडवी और छपैया में भी मंदिरो की प्रतिष्ठा की थी । और शिक्षापत्री में श्रीहरि की आज्ञा से अहमदाबाद में श्री स्वामिनारायण संस्कृत पाठशाला प्रारंभ की और विद्वान पंडित को रखा, उस पाठशाला

से हजारो साधु, ब्राह्मण विद्वान हो कर गुजरात में प्रसिद्ध हुए। आजभी पाठशाला की वृद्धी की जा रही है।

ये आचार्य श्री सं. १९२७ के फाल्गुन शुक्ल सप्तमी को इस देह का त्याग कर श्रीहरि के पास चले गए। वे ४२ वर्ष श्री नरनारयणदेव पीठस्थान पर रहे और सत्संग की सेवा करी।

ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री केशवप्रसादजी महाराज : वे श्री अयोध्याप्रसादजी महाराज के औरस पुत्र थे। उनका जन्म १८८८ में अहमदाबाद में हुआ था। धर्मकुल



के संस्कार उनके रंग-रंग में था। और पिता के रास्तो पर चल कर धर्म के उत्कर्ष का काम संभाला। वे बहुत ही दयालु थे। सत्संग प्रचार के लिए जब जाते तब विद्वान साधु ब्रह्मचारी को साथ रखते थे।

"सत्संगीभूषण" ग्रंथ की भावार्थ प्रदीपिका नामकी संस्कृत टीका की रचना करवाई। १९४२ में हरिवाक्यसुधा सिन्धु नामके महान ग्रंथ पर सत्संग के लिए संस्कृत में अन्वय दीपिका की रचना की। खुद सौराष्ट्र और कच्छ विचरण कर राजाओं के राज्यो में सत्संग का प्रचार प्रसार किया। और संप्रदाय का रहस्य समझाया। उनके वंशजो में आजभी अपना धर्म पाला जाता है। करांची, प्रांतीज, माणसा, डभाण चराडवा, विसनगर में मंदिर बनाकर मूर्ति प्रतिष्ठा की। और अहमदाबाद मूली, धोलका, जेतलपुर मंदिर में काष्ठ कला से शोभायमान सभा मंडप का निर्माण करवाया।

इस प्रकार उस समय सत्संग का उत्कर्ष हुआ वे सत्संगरुपी वाटिका के उत्तम माली के रुप में १९२४ से १९४६ तक विहार किये और सत्संग रुपी वाटिका को नवलपल्लवित मनोहारि और दिव्य बनाये और २२ वर्ष तक पीठ स्थान पर रहने के पश्चात सं. १९४६ के चैत्र कृष्ण चौथ को अक्षरनिवासी हुए।

ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री पुरुषोत्तमप्रसादजी महाराजश्री : इनका जन्म सं. १९२६ के मार्गशीर्ष कृष्ण द्वितीया को हुआ था और गादी पर सं. १९४६ में बिराजमान हुए थे। वे सत्संग का गौणपण सहन नही करपाते थे। प्रतिवादियों पर वे कुछ मोहित कर देते थे। टेरा, तंबु, सैनिक के साथ ठाठ से गाँव-गाँव घूमते और सभाए करते, सत्संग को अद्‌भुद उत्साह हो ऐसा वातावरण बनाये और तद्‌अनुकुल उपदेश देते, और कारतिक से ज्येष्ठ तक आठ महीने पर्यन्त गाँव-गाँव घूम कर उपदेश देते और सत्संग में बढोतरी करते। और साहित्य को उत्तेजन देते थे। वचनामृत की सरलता के खतिर भावार्थ नामकी टीका बनवाये और वचनामृत का ग्रंथ छपवा कर समजने में सरल बनादिया था।

उन्होने अहमदाबाद मंदिर के काष्ठकला से शोभायमान ऐतिहासिक दरवाजे का निर्माण करवाया और तद्‌उपरांत साबरमती के तट पर घाट बनवा या। छपैया मंदिर के पास पत्थर से नारायण सरोवर बनवाया। और मूर्ति प्रतिष्ठा की।

खुद अपुत्र होने के कारण काशीप्रसाद पांडे के पुत्र श्री वासुदेवप्रसादजी महाराज को दत्तक लिया और उत्तराधिकारी बनाया और सं. १९५८ को कार्तिक कृष्ण अमावस्या के दिन अक्षरनिवासी हुए वे १२ वर्ष तक इस पीठस्थान पर रहे।

ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री वासुदेवप्रसादजी महाराजश्री : उनका जन्म छपैया गाँव में स्वामिनारायण भगवान के बडे भाई के वंश में श्री काशीप्रसाद हरिसहायजी पांडे के घर सं. १९५५ के अषाढ कृष्ण नवमी को हुआ था।

श्रीजी महाराज की इच्छा और सत्संग के सद्‌भाग्य से अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव की गादी के तीसरे

आचार्यश्री पुरुषोत्तमप्रसादजी महाराज अपुत्र होने के कारण स्वामिनारायण भगवान के लौकिक दृष्टि के अपने भतीजे और आदि आचार्य श्री



अयोध्याप्रसादजी महाराज के बडे भाई नंदराम पांडे के पुत्र हरिसहायजी पांडे के पांचवे पुत्र काशीप्रसाद काशीप्रसाद पांडे के जेष्ठपुत्र वासुदेवप्रसादजी पांडे को दत्तक के रुप में स्वीकार करके अपना उत्तराधिकारी बनाया ।

उसके बाद थोडे ही समय के बाद आचार्यश्री पुरुषोत्तमप्रसादजी महाराज अक्षरवासी हो गए ।

श्री वासुदेवप्रसादजी महाराजने संवत १९५८ के कार्तिक वद अमावास्या के रोज अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव की गादी के चोथे आचार्य के रुप में वेदविधिपुरस्मर बडी धामधूम से गादी पर आरुढ किए गए ।

आचार्यश्री गादी पर आए तब वे सगीर थे इस कारण संस्था का वहीवट उनकी तरफ से ट्रस्टी गण संभालते थे । पुख्त वय तक पहुँचे तब संस्था का वहीवट दक्षतापूर्वक खुद ही संभालने लगे ।

इस आचार्यश्रीने संस्कृत, प्राकृत ग्रंथो का सारा शिक्षण प्राप्त किया था । अंग्रेजी का भी अच्छा ज्ञान था। इन्सान को पहचानने की शक्ति इनमें गजब की थी । सत्संग के उत्कर्ष के कार्यो में गहराई से रस रखतें थे ।

उन्होंने वाली, अयोध्या, पेथापुर, बामरोली, छपैया जैसे जन्मस्थान में बालस्वरुप घनश्याम महराज के मंदिर बनवाया ।

अहमदाबाद, मूली, भुज, धोलका आदि शहरो के मंदिरो में श्रीजी महाराजके स्व हस्त से स्थापित देवो के शतवार्षिक पाटोत्सव वेदविधिपुरःसर बड़ी धामधुम से मनाया ।

इस आचार्यश्रीने स्वामिनारायण भगवान के लोककल्याण के लिए जो शिक्षापत्री लिखी गयी थी सं. १९८२ में सौ वर्ष पूरे होते ही इस प्रसंग का अहमदाबाद मंदिर में शिक्षापत्री शताब्दी महोत्सव मनाया था ।

इस आचार्यश्रीने "अखिल सनातम धर्म स्वराज्य संघ" को अहमदाबाद मंदिर में अधिवेश रखने का आमंत्रण देकर श्री नरनारायणदेव की छत्रछाया के नीचे वैष्णवाचार्य, शंकराचार्य, मंडलेश्वर, भारत के तमाम राज्यो के नामांकित पंडित, अहमदाबाद के मीलमालिक तथा भारतभर के धर्मप्रेमी अग्रगण्य के जन एकत्रित हुए थे । अधिवेशन में



इस आचार्यश्री ने 'स्नातं चन्दन चर्चितम्' इसे श्लोक से मंगलाचरण करके सुंदर शैली में प्रेरणात्मक प्रवचन दिया । मंदिर में अधिवेशन पूर्ण होने के बाद उत्तरोत्तर वैष्णव, स्मार्त आदि देवदर्शन अधिक लाभ प्राप्त करने लेग ।

आचार्यश्री संवत १९९३ के कार्तिक वद एकम के रोज अक्षरनिवासी हुए ।

उनकी कारकिर्दी संप्रदाय के इतिहास में अमर रहेगी ।

ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री : इस आचार्यश्री का जन्म अहमदाबाद मे संवत १९७८ के आश्विन सुदी पूर्णिमा के दिन हुआ था । शरद पूर्णिमा के दिन जन्म होने से शीतलता, अमृतत्व आह्लादकत्व आदि आदि, महान गुणो का आविर्भाव उनके जन्म से

ही उनमें दिखने लगे थे । इस आचार्यश्री का जन्म शरद पूर्णिमा को हुआ होने के कारण समग्र सत्संग का सर्वांगी विकास हुआ ।

इस आचार्यश्रीने संवत १९९६ के चैत्र सुदी के नवमी के दिन ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री वासुदेवप्रसादजी महाराजने बडे समारोह से और वेदविधि पुर:सर श्री



नरनारायणदेव के मंदिर के विशाल प्रांगण में उपवीत संस्कार दिया उस समय के कलेक्टर, कमिश्नर आदि आमंत्रित महेमान और सत्संगी उपवीत संस्कार का समारंभ देखकर प्रभावित हो गए । इस आचार्यश्रीने अपने पिताश्रीकी हाजरी में छोटी उंमर में संस्कृत विद्या का अभ्यास किया और संगीत का ज्ञान तो इस आचार्यश्री को स्वयंभू ही था । शरीर स्थूल होने के बावजूद जैसे ही घोड़े की लगाम पकडते घोडा स्वयं शांत बन जाता ।

संवत १९९३ की कारतक वदी एकम के दिन गादी पर आरुढ हुए । उस समय वे चौदह वर्ष के थे । पुख्त उमर में पहुंचने तक ट्रस्टी मंडल के हस्तक का कार्यभार स्वयं चलने लगा । उसके बाद सत्संगने बहुत संतोष पाया ।

आचार्यश्रीने यात्रालु सत्संगियों को रहने के लिए सुविधा रहे । ऐसी अद्यतन सुविधावाली संत-हरिभक्त दोनों को मदद कर सके मंदिर में ही आलिशान धर्मशाला तैयार करवाके यात्रालु सत्संगियों को संतोष दिया ।

इस आचारयश्रीने जेतलपुर, ईडर, छपैया, मांडवी और सिध्धपुर आदि शिखरबंध मंदिरोमें स्थापित उस देवों के शतवार्षिक पाटोत्सव को मनाकर, अखिल सत्संग को प्रफुल्लित किया ।

टोरडा में श्री गोपाल लालजी हरिकृष्ण महाराज की । देजो में बालस्वरुप घनश्याम महराज की तथा अंजार (कच्छ) में घनश्याम महराज की, वडनगर में श्री घनश्याम महाराज की तथा सापावाडा में घनश्याम महाराज की वेद विधिपुर: सह प्रतिष्ठा की । आचार्यश्रीने अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव के मंदिर के पास आलिशान एक घुम्मटवाला अक्षरभुवन बनाकर उसमें बाल स्वरुप घनश्याम महाराज की सं. २००९ के चैत्र सुद नवमी के दिन वेदविधि पुर:सर प्रतिष्ठा की और श्रीहरि की प्रसादीकी चीजों को दर्शन का लाभ सभी सरलता से एक साथ प्राप्त कर सके इस तरह अपने वारसे में प्राप्य या अप्राप्य प्रसादी की चीजों को देकर और उस चीजों का एक उमदा दृष्टांत पुरा किया ।

फाल्गुन में इस आचार्यश्री का रजत जयंती पाटोत्सव संवत २०१८ के सुद-३ के रोज समस्त सत्संगी समाजने भव्य समारोह मनाया । और उस में एकत्रित फंड मे से अपने मंदिर के द्वारा प.पू.ध.धु. महाराजश्री ने अपने संप्रदाय में सर्व प्रथम शिक्षण का एक नया सोपान श्री सहजानंद आर्टस कोर्मस कोलेज का निर्माण करवाके संप्रदाय को अर्पण किया । जो आज वटवृक्ष के समान शिक्षण का अमूल्य सेवा करता है ।

ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री : देवेन्द्रप्रसादजी महाराज के ज्येष्ठ पुत्र है । उनका जन्म सं. २००० के चैत्र कृष्ण तीज को हुआ इनमें धर्मकुल के संस्कार भरे पडे है और अंग्रेजी का शिक्षण इस युग में आवश्यक होने से उन्होंने उच्च शिक्षण भी प्राप्त किया है । ये धर्म की गादी के रक्षक है । पिताजीने उन्हे धर्म का यथार्थ शिक्षण मिले ऐसी व्यवस्था की थी । और धर्म, सत्संग की मर्यादा तथा नियम बताए थे, संस्कृत शिक्षण का प्रबंध भी किया था । जहाँ बडे समारंभ होते व हरिभकक्त उन्हे बुलाते तो अकेले या साथ पिताजी भी जाते ।

परदेश गमन - वस्तुस्थिति ऐसी है कि कोई भी मंडल के सभ्य या

मनुष्य किसी कारण से या स्वेच्छा से परदेश गमन करता है, या रहता है, तब सांप्रदायिक धर्म लेते जाते है । इसी प्रकार कई लोग आजीविका की खोज में आफ्रिका गए और पूर्व आफ्रिका में रहने लगें । और अपने धर्म का पालन करते जो बचपन से ही प्राप्त था । और वे यथोचित प्रकार से धर्म का पालन करते । नाईरोबी में उन्होने मिल कर सत्संग मंडल की स्थापना की और मंदिरकी स्थापना का संकल्प किया ।

दि. २६-१२-१९५७ को मूर्ति प्रतिष्ठा की पत्रिका महाराजश्री को भेजी गई और धर्मकी पुष्टी के लिए तत्कालीन आचार्यश्री देवेन्द्रप्रसादजी ने स्वीकार करके और प.पू. तेजेन्द्रप्रसादजी को वहाँ जाने की आज्ञा की तब उनकी उम्र केवल चौदह वर्ष की थी । धर्म के विस्तार और पोषण के लिए पुत्र को परदेश जाने की आज्ञा की ।

स्वामिनारायण संप्रदाय अब मातृभूमि भारत में ही नही बल्की समुद्रपार के देशोमें भी धीरे धीरे प्रकाशित हो रहा था । धर्मरुपी सूर्य का उदय होने लगा था । और परदेश में उसका प्रकाश हंमेशा के लिए होने लगा था ।

दि. २६-१२-१९५७ को प.पू. लालजी महाराज के कर कमलों से नाईरोबी मंदिर की मूर्ति प्रतिष्ठा धामधूम से संपन्न हुई । धर्म का विस्तार बढने लगा और परदेश में रहने वाले भारतीयो का धर्म के साथ संपर्क सदैव बना रहने लगा । नाम की तरह ही श्री लालजी महाराज सभी को प्रेरणात्मक, आशीर्वादात्मक वचनो से सत्संग को योग्य मार्गदर्शन देने लगें ।

श्री लालजी महाराज के रुप में उनके वचन में संप्रदाय की एकता और धर्म की अभिवृद्धि दिखाई पडती थी ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराज सं. २०२५ को अश्विन शुक्ल-१ को (१२-१०-१९६९) को अक्षरनिवासी हुए और उनके स्थान पर आश्विन शुक्ल-२ के दिन श्री नरनारायणदेव की गादी पर पदारुढ हुए और थोड़े समय में ही सम्प्रदाय के अनेकों कार्य किये और करवाये । आपने अपने परिवार की चिन्ता विना किये स्वास्थ्य की चिन्ता के विना समग्र सत्संग की चिन्ता किये । प्रचंड गर्मी हो या कड़ाके की ठन्ढी हो, या खूब वर्षा हो, दिन हो या रात हो लेकिन सत्संगकी यात्रा प्रारंभ की आज भी चालू है । अमीर गरीब छोटे-बडे का भाव समान रखकर भक्तों के घर पदार्पण करते रहे । अनेक पारायण या उत्सव में आप की उपस्थिति अनिवार्य होती थी । आपने आचार्यपद पर आरुढ होने के बाद विदेशों में अनेकों मंदिरो का कार्य प्रारंभ किया अपने देश में तो गिन्ती ही नही कितने बने - मथुरा नारायणघाट, नारणपुरा, गांधीनगर, खांण, लीमडी, कांकरिया, उनावा, सापावाडा, हिंमतनगर, बावणा, दिल्ही, बद्रिनारायण इत्यादि स्थलो पर मंदिर तथा धर्मशाला की व्यवस्था की गयी । जेतलपुर, चराडवा, छपैया आदि मंदिरों में घनश्याम महाराज की प्रतिष्ठा की गयी । अनगिनत मंदिरो का जीर्णोद्धार किया गया । अनेक पदयात्राओं का आयोजन करके हरिभक्तों के साथ तीर्थो की महिमा बढाया है । संप्रदाय के सत्संग के धर्मकी सीमा भारत में ही थी अब तो विदेश की धरती का भी अतिक्रमण कर गयी है । आफ्रिका, ईंग्लैंड, अमेरिका, केनेडा, सीसल्स, औस्ट्रेलिया, न्यूझीलेन्ड, मोरेश्यस इत्यादि देशो में सत्संग की वृद्धि की । अनुयायियों के अन्तर में श्रीहरि के भक्ति की दृढता हुई है । परिणाम स्वरुप विदेशो में नये भव्य मंदिरो का निर्माण हुआ । विदेशों में सत्संग संस्कार के रुप में ङ्कस्सह्र संस्था का निर्माण किया गया । धर्मप्रचार तथा संप्रदाय की पुष्टि के लिए सत्संग साहित्य का महत्व होता है । समय की मांग को ध्यान में रखकर आपने खूब सतर्कता वर्ती । परिणाम स्वरुप विदेशोमें - वचनामृत, शिक्षापत्री भाष्य, सत्संगिजीवन, सत्संगिभू,ण, हरिवाक्य सुधासिन्धु, जैसे श्रीहरि के सर्वोपरि मोक्षदायक शास्त्र लाखों हरिभक्तों के हाथ में पहुंच सका ।

संप्रदाय के बहुत सारे अप्राप्य ग्रंथो को प्रकाशित कराकर साहित्य की प्रवृत्ति को बल दिया। इसके अलांवा वास्तुकला, चित्रकला, के प्रकाशनों को "श्री स्वाममिनारायण" मासिक तथा "भक्तिसुधा" त्रैमासिक पत्रिकाओं के माध्यम से प्रकाशन कराकर साहित्य यज्ञ का विस्तार किया । स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय तथा देवेन्द्र संगीत शिक्षाभवन आदि देव भाषाओं का संकुल तो थाही साथ में - असारवा, जेतलपुर कोटेश्वर, जीलवाणा, चिलोडा, कलोल, बायड, सिद्धपुर, सोकली, माउन्ट आबु, हाथीजण, जयदेवपुरा, आबूरोड, सायला, वडनगर, विसनगर, वांसवाडा, ध्रांगध्रा, ऊंझा, चराडवा, कडभा, उपलेटा, भुज, मांडवी, गांधीधाम, रामपर, कवाजा, चोटीला, नरशीपरा, महादेवनगर इत्यादि स्थलों पर सिक्षण गुरुकुलों का निर्माण करवाया । आपकी आंज्ञा में एसभी गुरुकुल पल्लवित हो रहे है । ऋषियों की परम्परा इन गुरुकुलों में मिलती है - प्रदूषण से दूर निरान्तवातावरण में धार्मिक संस्कारों के साथ उच्च शिक्षण का केन्द्र ये सभी गुरुकुल आज समाज के विए उदाहरण बने हुए है ।•उच्च कोटि की शिक्षा को ध्यान में रखकर ध.धु. आचार्यश्री देवेन्द्रप्रसादजी केळवडी ट्रस्ट संचालित



श्री सहजानंद आटर्स कोमर्स कोलेज, वाणिज्य महाविद्यालय सहाजनंद बाल मंदिर से माध्यमिक तक का स्कूल उसी कैम्पस में आधुनिक शिक्षण का कार्य अहमदाबाद के अम्बावाणी विस्तार में क्रियान्वयन हो रहा है । हाल में ही नारायणपुरा विस्तारमें अंग्रेजी शिक्षण का नया सोपान ज्ञानगंगा का प्रारंभ कराकर आसपास के विस्तार के बच्चों को उच्च नई टेक्नोलोजी से शिक्षण की व्यवस्था की गयी है । शिक्षण के साथ उच्च संस्कार का सिंचन भी किया जाता है। सत्संग एवं शिक्षण सेवा के उपरांत सामाजिक अन्य सेवा के लिए आप जागृत रहे हैं । कहीं अतिवृष्टि, अनावृष्टि, आग, धरतीकंप, जलप्रलय, जैसी भी दैवी आपदा समाज में आयी आप की करुणाभरी सेवा तत्काल उपस्थित हुई है । कितने औषधालय, अन्नक्षेत्र के माध्यम से गरीबों की सेवा नित्य आष करते रहते हैं । इस प्रकार सत्संग के लिए जीवन समर्पित करके आने वाली आचार्य परंपरा के लिए प्रेरणादायी पवित्र सुवर्ण इतिहास तैयार किये है। आपका शुद्ध निर्मल, पवित्र तथा प्रेमालु, एवं दयालुजीवन सत्संग के लिए गौरवान्वित है । आप सम्प्रदाय के

आचार्यपद पर रहकर सत्संगकी सेवा साधना में रहकर पचीस वर्ष की रजतजयंती तथा पचास वर्ष की सुवर्णजयंती मनाने का सत्संग समाज को सुवर्ण अवशर दिया । परिणाम स्वरुप रजत-सुवर्ण जयन्ती में बची धनराशी से छपैया धाम में मंदिर को संगमरमर पत्थर से देदीप्यमान करके नया बना दिया गया है । इस के बाद ६ दशक पूर्ण करके ६० वर्ष में सम्पूर्ण सत्संग समाज ने आपकी "षष्टिपूर्ति महोत्सव" मनाया। जिसके दर्शन में तथा स्पर्श में प्रभु प्राप्ति का अनुभव मुमुक्षुओं को हुआ । इस उत्सव को मनाने के लिए भी एक शर्त महाराजश्रीने रखी और वह संकल्प भी श्रीहरिने पूर्ण कर दिया । वह संकल्प था श्रीजी महाराजके प्रसादी की वस्तुओं के रखरखाव हेतु एक म्युजियम आज वह संकल्प सभी के दृष्टि पथ पर चरितार्थ होने जा रहा है ।

६० वर्ष में त्याग की पराकाष्ठा स्वरुप में अपने सफलता को कीर्ति स्तम्भ तक पहुँचाने वाले "आचार्यपद" का स्वेच्छया त्याग करके अपने औरस पुत्र लालजी महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री को वि.सं. २०६० आश्विन शुक्ल द्वितीया ता. १५-१०-०४ के शुभ दिन अपने बरद हाथों से पट्टाभिषेक करके श्री नरनारायणदेव देश पीठ



स्थान के सप्तमाचार्य पद पर आरुढ किया । इस दिव्य प्रसंग पर शा.स्वा. निर्गुणदासजीने सुन्दर अद्वितीय आयोजन किया । देश-देश से संतलोग पधारे थे सैंकडो हरिभक्त पधारे ते । असंख्य मुमुक्षुओं ने ऐसे अद्‌भुत प्रसंग का दर्शन करके अपने हृदय में उतारकर अपने जीवन को चरितार्थ किया । परोपकारी भगवत्स्वरुप ऐसे महाराजश्री के चरणों में कोटि कोटि वंदन ।

ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का धर्मकुल गंगोत्री में सं. १९२८ के विजया दशमी मंगलवार के दिन जन्म हुआ था ।

बाल्यावस्था से ही तेजस्वी मेधा से युक्त आपका अध्ययन सेन्टजेवियर्स तथा सहजानंद कोलेज में अंग्रेजी माध्यम से हुआ।

सत्संग में बाल्यावस्था से ही पिता के साथ घूमकर सत्संग का स्नेह प्राप्त किया । युवा अवस्थामें श्री नरनारायणदेव युवक मंडल प्रवृत्ति द्वारा हजारों युवानों को सत्संग तथा सेवा के रंग में रंग दिया ।

ता. १५-१०-०४ आश्विन शुक्ल द्वितीया के दिन गादी पर विराजमान हुए । जो देश-विदेशमें सत्संग को पिताश्री के मार्ग पर खूब विकाश एवं प्रगतिशील करेंगे ऐसी सम्पूर्ण सत्संग समाज को प्रबल आशा है । सत्संग का नये महाराजश्री को कोटि-कोटि वन्दन ।



प.पू. महाराजश्री के प्रति आदर भाव

- स्वा. जगतप्रकाशदासजी (महंत श्री स्वामिनारायण मंदिर धोळका)

श्रीहरि के साक्षात् स्वरुप प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी द्वारा देश-विदेश में मूर्ति प्रतिष्ठा, पारायण, पदार्पण में अकल्पनीय साक्षात् दर्शन हुए है । अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का दर्शन कैसा भी हरिभक्त या अन्य कोई करे तो उससे हृदय और मानसिक पट पर उनकी स्मृति आजीवन रही है। श्रीहरि के आश्रितो के लिए चरण स्पर्श का महिमा अपरंपार है । किन्तु कई ऐसे प्रसंग देखे है जिन्हो ने कभी दर्शन भी न किए हो, अनायास ही दर्शन हो जाए तब उनके हृदय से महाराजश्री के प्रति आदरभाव उत्पन्न होता है । ऐसा ही एक प्रसंग देखते है ।

अपने एक हरिभक्त को वारंवार नारणपुरा के नामांकित डॉ. आयंगर साहब के पास, कन्सल्टींक के लिए जाना पडता था । डॉ. साहब मूल दक्षिण भारत के है । एम.डी. सर्जन डॉक्टर है । उनकी गणना अमदाबाद के गीने-चुने डॉक्टर में होती है । वे गरीब मरीजो की कन्सल्टींग फीस नही लेते । हंमेशा अस्पताल पर मरीजो की भीड लगी रहती है ।

एकबार डॉक्टर ने हरिभक्त से उसके बारे में जानकारी पूछी । फिर उन्होने जाना की स्वामिनारयण के भगत है । इसलिए डॉक्टर साबहने कहा कि अहमदाबाद में खूब ही प्राचीन सुप्रसिध्ध मंदिर है वहाँ दर्शन करने जाते हो । हरिभक्तने कहा हाँ, साहब उसी मंदिर में नित्य दर्शन करने जाता हूँ । डॉक्टर ने कहा मंदिर के आचार्य लाल पाग वाले प.पू. तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के युनिर्वसीटी के ग्राउन्ड पर बडे उत्सव प्रसंग में मुझे एक डॉक्टर मित्र साथ ले गए तब दर्शन किए । आप तो रोज दर्शन करते होगे ? तो आफ उनसे प्रार्थना करिये कि इस दर्द से मुक्ति मिल जाए । जिससे आपको मेरी सीढीयां नही चढनी पडे । फिर डॉक्टर ने कहा मेरे जैसे डॉक्टर के दवाई के पर्चे की अमेरिका जैसे देश में फाड़के फेक देते है । कहने का तात्पर्य यह है कि ये सब दवाए विपरीत असर करे वैसी होती है । इसलिए केवल महाराजश्री को प्रार्थना करिए तो रोग मिट जाए । एसे नामांकित सज्जन और गरीबो के तारण हार ने एक बार दर्शन करके ही महात्म्य को समझ लिया । हम तो हररोज दर्शन करते है लेकिन महात्म्य नही समझ पाते ।

कम्प्युटर के युग में अहमदाबाद के बहेतरीन डॉक्टर ऐसा कहते हो तो इससे बडा चमत्कार क्या होगा ! यह सत्य घटना है । कोई कल्पित घटना नही है । इसलिए महाराजश्री और इसपीठ की महिमा और महात्म्य जान कर दूसरो को समझाइए ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री निवृत्त हुए है । किन्तु निवृत्ति नामका शब्द उनके जीवन मेंनही है । इसलिए हमने जिस प्रकार प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी को माना है उसी प्रकार सप्तमां आचार्य प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी तथा प.पू. लालजी महाराजश्री १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री को माने और आज्ञा में रहकर जीवन सफल करे ।

धन्य आचार्य देवो भवः

- स्वामी घनश्यामप्रकाशदासजी (महंतश्री नारायणघाट)

अक्षरधाम के दिव्य तख्त पर बिराजमान एसे पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण भगवानने संकल्प किया "एकोऽहम् बहुस्याम" अद्‌भुद संकल्प का पालन कर खुद अपने समग्र समाज सहित इस ब्रह्मांड के अधिपत विराट नारायण की



अथक स्तुति को अनुग्रहीत कर अनगिनत जीवो के कल्याणकारी श्रेय के उपलक्ष्य में मृत्युलोक में मानुषी चेष्टा को अंगीकार (अपनाया) किया। माता भक्ति के दूध ने पिता धर्म के संस्कार के सहारे ज्ञान की गहनता में बचपत को भूल गये और किशोरावस्था में घोर तप कर वर्णी का वेश लेकर वनविचरण शुरु किया। पूर्व मे अवतार लिआ और बिना रुके पदारविंद से भारत भूमि के कोने-कोने घूम कर मुमुक्षुओ से भरी पश्चिम दिशा की सोरडी भूमि को अपनी कर्मभूमि का कल्याणकारी नाम दिया। यज्ञ की आहुतियों से प्रारंभ कर सदा व्रतो के द्वारा भूखे लोगो के भोजन में देव दर्शन और ज्ञानःध्यान के सभी जगह अखाडे शुरु हुए। संतो और परमहंसो को दीक्षा दान देते हुए समाजमें आज पर्यन्त न देखी हुई, और अकल्पनातीत असीम साधुता से छलकती साधुता समाज में चारो तरफ चलने लगी। पदयात्रा और घोडो के पैर से उडते रजकण, धुन भजन के रुप में, संगीत के सातो सुरो को गाँव-गाँव और शहर शहर में गुंजत किया समग्र सत्संगी समाज के शिरमौर्य पर भगवान स्वामिनरायण ने एकांतिक धर्म का स्थापन, प्रवर्तन और सफल संचालनकर इस ब्रह्मांड में आयुष्य पर्यन्त अक्षरवास का सरल मार्ग बताया। नव शिखरबद्ध मंदिरो में अलौकिक मूर्ति प्रतिष्ठा कर उनमें सदा अपना प्रकटरुप स्थापित किया।

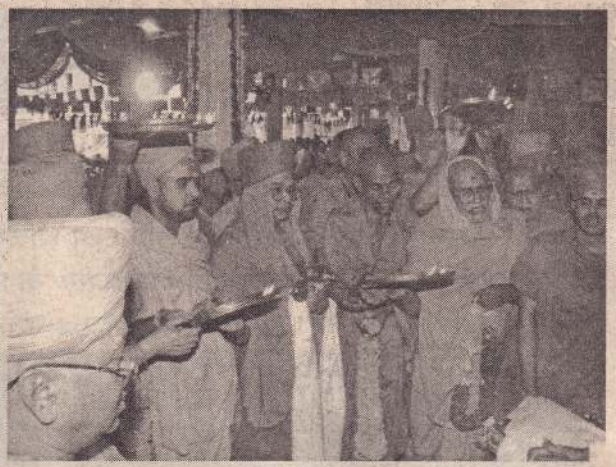
और धर्मकुल के दोनो भाई के श्रेष्ठ पुत्रो में आचार्य पद प्रदान कर उसी धर्मकुलकी गादी से मोक्षदायी भागीरथी का प्रवाह शुरु किया। तथा परम एकांतिक धर्म के द्वारा तथा अपनी वाणी को अपना स्वरुप बताकर स्वरचित शास्त्रो के द्वारा भी सदा प्रकट रहने का वादा कर और चारो तरफ मोक्ष के द्वार खोल कर अपने दिव्यतम संकल्प सिद्ध किया।

स.गु. श्री निष्कुलानंद स्वामीने पुरुषोत्तम प्रकाश में श्रीहरि के हृदयगत अभिप्रायो को लिखा है।

मारा धाममां आववा सारु रे,
केवा उपाय कर्या बहु रे,
सर्व उपाय किधा छे सारा रे,
तेमा तरसे छे जीव अवार रे,
पळ छेल्लो आ छे उपाय रे,
बहु जीव तरसे अमाय रे,
धर्मवंशी आचार्यज धार्या रे,
गुरु करी गादीए बेसाड्या रे,
काम कर्यं छे एवु सारु रे,
मन मान्यु छे बुह अमारु रे,
काजे ए छे धर्मनुं कुल रे,
माटे ए बातनुं छे उडुं मूळ रे,

श्रीहरिके ये गुंजन आज २००-२०० वर्ष पुराने हो गये है। फिर भी जैसे कल सुबह ही की बात हो वैसी तरोताज़ा और यही सत्संग दिन प्रतिदिन सभी क्षेत्रो पर सफलता की सीढी चढ रहा है। जिसका कारण





आचार्य परंपरा के छठ्ठे वंशज धर्म धुरंधर, संतजन रक्षक, सत्संग समाज के पोषक, अबाल वृद्धो के प्यारे, हृदय के सम्राट सर्वक्षेत्रो में सफळता के शिखर पर विराजमान श्रीहरि के रुप में आचार्यश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज पिताश्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराजकी छत्रछाया में बाल लालजी के रुप में शुरु की सत्संग सेवा, उनकी खेल तथा तरुणावस्था गंभीरता में परिवर्तित होने लगी, धीरे धीरे पदार्पण कार्य शुर हुआ । और पिता के खराब तबियत व स्वास्थ के कारण सत्संग मेंआती कमी को पूरी करने के लिए तरुणावस्था में प.पू. श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजने कमर कसी, अभ्यास के साथ साथ सत्संग की जिम्मेदारी उनके शिर पर आयी, समृद्धि और सुख में रहने के बजाय इस किशोर ने कठोर परिश्रम कर तन और मन से सेवा में लग कर आसमान छूने नीकल पडे । पच्चीस वर्ष की उम्र में शिर पर से पिता का छत्र छीन लिया गया । पिताश्री के अक्षरवास से आचार्य पद की सभी जिम्मेदारी अनायास ही उनके शिर पर आगयी । परंतु वे कठोर कर्मवीर अभी तक अर्ध शतक लगा चुके थे । त्यागी-गृही समस्त सत्संग समाज की सेवा में सदा तत्पर रह कर सभी का अप्रतिम प्रेम संपादन कर चुके थे । देश-परदेश में सर्वत्र उन्हे खूब आदर मिल रहा था । सत्ता के अहंकार से दूर रह कर नम्रता और ज्ञान गहन गंभीरता से महात्म्य सभर संचालन से अपने आपको अच्छी तरह जानने लगे । सार्वत्रिक दिव्यभाव से मंजिल आगे बढने लगी । नवयुवान उनके हाथो भागवती दीक्षा प्राप्त करने के अरमान रखने लगे । प्रत्येक गाँव में नव निर्मित मंदिर आकार लेने लगे और महाराजश्री से मूर्ति प्रतिष्ठाके लिए उतावले बने और पारायणो की परंपरा शुरु हुई । विद्वान संतो मे नये संचार के कारण सत्संग सभा के आयोजन और पुस्तको के प्रकाशन बढने लगे ।

उद्घाटन और पदार्पण का तो जैसे भंडार मिला हो । तब ऐसे लगा की मंदिर के दरवाजे पर उगता सूरज तो हंमेशा मंदिर पर ही अस्त होता था। कहते हैं कि सूर्योदय होते ही घर से निकलते थे और संपूर्ण दिन सत्संग सेवा में डूबे रहते थे । और शयन आरती के बाद ही घर वापस लौटते थे । इस प्रकार युवानी की आहुति सत्संग के लिए श्रीकृष्णार्पण कर दी । भगवान स्वामिनारायण के संदेश को देश-विदेश में प्रसारित करने के लिए कठोर परिश्रम तथा विचरण और विदेश यात्रा शहरो-गाँवो में सभाए प्रवचन और आशीर्वाद द्वारा सभी को पोषण दिया तथा मुलाकातो द्वारा सुख और प्रेरणा प्रदान की । समाज का सच्चा मित्र गरीबो का तारणहार, बुजुर्गो का हमसफर एसे श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज आज सचमुच श्रीहरि के तेज के कारण समग्र सत्संग को हृदय के पिताबन गये ।

षष्ठि पूर्ति महोत्सव की गूंज अभी तो सभी के कानो में गूंज रही है । तबीयत संपूर्णतः स्वस्थ और युवानो को भी देखते शर्म आये वैसी गतिमान कार्यशैली, तीव्र नीर्णय

शक्ति उनके पास है। चारो तरफ धर्म की यशश्वी पताका लहरा रही है। लोगो के दिलो में उनकी चाहना परम सीमा पर है और उसी समय अचानक निवृत होने का निर्णय ले कर अपनी सर्वक्षेत्रीय यशस्विता पर विराम लगा दिया। किंतु समाज में इस समाचार से सन्नाटा छा गया। गूंगे पशुओ की तरह हूंकारी भरने का भी समय नही मिला। क्योकि अचल राजाधिराज ने प.पू. लालजी महाराज को आगे रख दिया और प.पू. कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराज के हाथ में समग्र सत्ता दे दी। श्रीहरिने पुरुषोत्तम प्रकाश में कहा है कि -

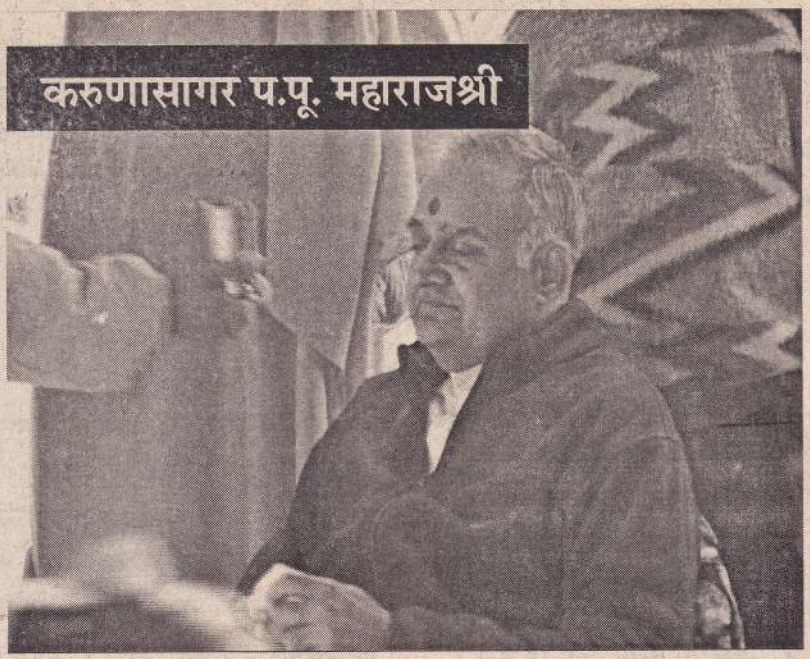
माटे सौ धर्मकुळ मानजो,
सौ करजो एनी सेव,
अन्यजन एवा एनही,
ए छे जाणजो मोटा देव,
एक ब्राह्मण ने जाणो भक्ति अती,
वळी कहावे अमारु कुळ
एने सेवता सोजन तमो,
पामशो सुख अतृप्त,
मन वांछित फल मळशे,
वळी सेवता एना चरण,
ए छे एअमारी आज्ञा,
सर्व काळ मा सुख करण,
मन कर्म वचने मानजो,
एमा नथी संशय लागर,
एक ह्राटे माटे अनेकनो,
आज करोव छे उद्धार।

संजीवनी जैसे ये अमृत वचन को उतारकर गद्‌गद स्वरो में पू. महाराजश्री के प्रति कृतज्ञता पूर्वकः प्रणाम कर नव आगंतुक प.पू.ध.धु. आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री से यही आशा रखते है कि श्रीहरिने अक्षरधाम रुपी तख्त पर से तेज के महासागर में डुबकी लगाकर और कोशल के किनारे दर्शन दिये है। तो हम भी उनका स्वागत करते है। हे घनश्याम महाराज आपने तो सिर्फ स्वरुप बदला है और नये अवतार में पुनः आगमन किया है। केवल रुप बदला है पर उसमे प्रदीप्त आत्मा तो उसी घनश्याम महाराज की है। बस यही निर्दोष बुद्धि, दिव्यभाव और अहोभाव पूर्ण दृढ निष्ठा रख श्रीहरि के नये स्वरुप की आराधना में लग जाये।

आचरण ही उपदेश अनुसंधान पेंज नं. ८नुं

सब में भरदी है। इन शिबिरों के माध्यम से भगवान का नियम, निश्चय, पक्ष आदि का उपदेश देकर करीब, एकलाख से भी अधिक युवानों का युवक मंडल आपकी छत्रछाया में सेवा कर रहे है।

गावों के हरिभक्तों में व्यावहारिकता के बहाने पक्ष में न्यूनाधिक्य करने वाले बुजुर्गो को नयी पीढी वाले पुनः जीवंत करने लगें हैं। विमुखों को दिशा दे रहे हैं। बड़ो को आदर देकर श्री नरनारायणदेव की निष्ठा को पुष्ट किये हैं। संम्प्रदाय की सेवा में विशाल युवानों की फौज तैयार किये हैं। सत्संग प्रचार, सभा, कीर्तन, भक्ति, धर्मोपदेश, व्यसनमुक्ति रैली तथा व्रत उत्सव अथवा मुख्य स्थान से बड़े बड़े उत्सवों का बागडोर सम्भाले हुए हैं। प.पू.ध.धु. आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने लाखों युवानों को सत्संग की सेवा में जोड़ा है प.पू.ध.धु. आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का जीवन अत्यन्त पवित्र, निर्मल, सादगी पूर्ण, एवं भक्ति परायण है। बाहर का दिखाव बहुत नहीं लेकिन भीतर का जीवन भागवत जीवन है। भगवान की जब बात आती है तब किसी की शर्म नहीं करते। सभा में जब विराजमान रहते हैं तब महामंत्र का अखंड जप करते रहते है, कीर्तन करते रहते हैं। पूजा में खूब ध्यानस्थ हो जाते हैं। निवास स्थान पर जब एकाकी रहते हैं तब माला जपते रहते हैं तथा नन्द संतो के कीर्तन गाते रहते हैं। ये प्रसंग हम सभी प्रत्यक्ष देखे हैं। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है। मंदिरो के निर्माण में खूब सूक्ष्म चिंतन अजोड़ है। इसके साथ ही व्यक्ति दो मिनिट में ही इनके व्यक्तित्व को पहचान जाता है। इन सभी सदगुणों को ध्यान से देखने के बाद यह निश्चित होता है कि सर्वोपरि भगवानश्री स्वामिनारायण द्वारा स्थापित सर्वोपरि स्थान पर सर्वोपरि धर्मवंशी आचार्य भगवान के अंश हैं। जिसके लिए कोई प्रमाण की आवश्यकता नहीं। निवृत्त आचार्य महाराजश्री तथा वर्तमान आचार्य महाराजश्री के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन।



– ब्र. स्वा. राजेश्वरानन्द (श्री नरनारायणदेव केपुजारी)

सर्वोपरि सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान का हमने प्रत्यक्ष तो दर्शन कियानहीं है, फिर भी संतो की वाणी सें तथा शास्त्रों के अभ्यास से हम जानते हैं । ऐसे दिव्य गुणों के भंडार श्रीहरि के छठ्ठे वंसज परम पूज्य आचार्य महाराजश्री के प्रत्यक्ष दर्शन से होता है । श्रीहरि जैसी सुन्दर धीमी चाल, अलौकिक मुखारविन्द के मुख का हास्य, चाहे कितना भी थके हों फिर भी मुख की चमकतो नई नई ही रहती है । छोटे से छोटे संत या हरिभक्त कोई भी इनके पास आवे तो उसे भी वही प्रेम-आदर मिलता है । कोई संत हरिभक्त विमार हो, कोई परेशानी हो तो महाराजश्री जो दया के सागर है वहाँ तक दौड़ जाते हैं । प.पू. आचार्य महाराजश्री किसी के दुःख को देख नहीं सकते । दयार्द्र हो जाते हैं । कोइ अस्पताल में हो तो देखने जाते हैं जहाँ दर्शनमात्र से उस भक्त का आधा रोग खत्म हो जाता है । अपने संत, अपने भक्त ऐसा मान रखकर गांव गांव तक दौड़जाते हैं । पदार्पण के तो हजारों उदाहरण देखने में मिलते हैं । मंदिर के नियमानुसार पदार्पण कराने वाला हरिभक्त मंदिर में पहले फार्म भरता है बाद में महाराजश्री के चरणारविंद उसके घरपदार्पण करते हैं। यह सभी तो टाईम टेबुल से ही होता है । किन्तु पदार्पण के समय अगल वगल के भक्तजन "लाल पगड़ी" को देखकर सत्संगी हो या न फिर भी मन में होता है कि ये दिव्य पुरुष मेरे घर पदार्पण करें तो मेरे जन्म जन्मान्तर का पाप धुल जायेगा । ऐसा मनही मन विचार करता रहता वह भक्त महाजश्री के सामने आता है और कहता है बापजी मेरा घर बगल में ही है मेरे घर भी आप पदार्पण करें ? तो महाराजश्री कहते कि जल्दी करना, एक के घर पदार्पण करें तो दूसरा भी तैयार हो जाता है । इतना ही नहीं बल्कि जब गाड़ी में बैठ जाते फिर आकर कोई कहता कि बापजी मेरे घर भी दया कीजिए । तब दया के सम्राट पू. महाराजश्री गाडी से उतरकर उस भक्त को प्रसन्न करते । इस तरह तो कितनेही प्रसंग होंगे । सामान्य संत या महात्मा या अन्य किसी धर्माचार्य के पास कभी ऐशा बना हो अथवा उसका परिणाम क्या होगा। लेकिन ये तो कोई सामान्य मनुष्य नहीं है, भगवान केपुत्र है, इसलिए भगवान ही हैं । इसमे दूसरा भाव नहीं लाना चाहिए ।

एक प्रसंग हमें याद है । एक गाँव में प.पू. महाराजश्री पदार्पण किये जिसके घर पदार्पण किये उसके घर पुत्र के विवाह की धूमधाम से तैयारी की गयी थी । नात, हीत, रिश्तेदार, हरिभक्त आदिजन वहाँ ऐकत्रिक थे । प.पू. महाराजश्री कला भाई के घर पदार्पण करनेवाले हैं यह समाचार सुनकर दूसरे भी अपने घर में तैयारी करने लगे, इसलिये कि इस अवशर का लाभ हमें भी मिल जाय । सभी अपने अपने घरों में आरती-पूजा

ढोल, मजीरा, उत्सव की सम्पूर्ण तैयारी करके सभी अपने अपने दरवाजे पर खड़े हो गये । प.पू. महाराजश्री की गाड़ी आई महाराजश्री नीचे उतरे उनके साथ संत, पार्षद मंडल भी नीचे उतरा कि भव्य स्वागत के गीत, धुनि, ढोल, मजीरा, आतिशबाजी द्वारा सारा वातावरण गूंज गया । महाराजश्री ने ठाकुरजीकी आरती उतारी तथा भक्तने महाराजश्री की आरती उतारी । पूजन अर्चन किया आशीर्वाद प्राप्त किया । सुन्दर कार्यक्रम सम्पन्न हुआ । वहाँ से पू. महाराजश्री अहमदावाद पधारे । परंतु गांव में जिसके घर प्रसंग था और जिसने पहले सेही फोर्म भरा था अहमदाबाद मंदिर में उसके घर पदार्पण हुआ या नहीं ? लेकिन मौका देखकर दूसरे ने यह लाभ ले लिया । प.पू. महाराजश्री को भी ऐसा कि इस गांव में एक ही प्रसंग है और उसी के घर पधारकर चले आये । लेकिन जिसके घर पदार्पणक रना था उसके घर हो नही पाया तो वह भाई आकुल व्याकुल हो गया । जब यह वृत्तान्त उस भक्तने जाना तो महाराजश्री को फोन करके प्रार्थना की और गांव की भाषा में बहुत कुछ कहा । तब दयालु तथा करुणा के सागर, श्रीहरिके साक्षात् रुप पूज्य महाराजश्रीने कहा कि अरे मेरे प्यारे भक्त ! मेरी भूल हो गयी है । जब आप कहो पुनः हम आने के लिए तैयार हैं । इसलिए आप निश्चिंत रहिए। हम तो अपने भक्तों के लिए गर्मी, शरदी, अर्थात् अथकपरीश्रम कुछ भी नहीं देखते । यह सब उस भाई ने सुना तो उसकी आँखो से आँसू गिरने लगे । अरे प्रभु आप भूल हो गयी ऐसा कहते हैं ? मेरे नाथ ! आप कभी भूल कर सकते हैं। आप कभी ऐसा नहीं बोलना । मेरा जीवन धन्य बन गया । इस पृथ्वी पर ऐसे दिव्य पुरुष हैं तो कोई आंच नहीं आ सकती ।

इस गाँव के हरिभक्तों को तथा सभी आमंत्रित मेहमानों से कहा कि अपना प्रसंग हो गया । क्योकि हम श्रीहरि के अपर स्वपरुप को पहचान गये अब हमारा जन्म सुधर गया । अब हम निश्चिंत हो गये हैं । धन्य उस भक्त को जिनहों ने प.पू. महाराजश्री को पहचाना है । इसलिए हमें भी यह ध्यान रखनें लायक है कि हमाराभी जन्म निरर्थक न चला जाय, सावधान होकर उन्हे तथा उनके स्थान पर विराजमान सातवें श्रीहरिं स्वरुप प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के साथ अपने जीव को जोड़कर और पहचान कर आत्यंतिक कल्याण सिद्ध कर लेना चाहिए ।

"आज धर्मवंशी ने द्वार आवो मोक्ष मांगवा रे लोल ।"

श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान पदारोहण सन्मान समारोह V.C.D. का प्रकाशन



श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के गादी अभिषेक तथा सत्कार समारंभ का भव्य, दिव्य, अलौकिक, ऐतिहासिक प्रसंग की 2 V.C.D. का सेट श्री स्वामिनारायण मंदिर अमदावाद द्वारा तैयार किया गया है, जो मंदिर के साहित्य केन्द्र से मिल सकता है ।

वही यह तेज (Tej) है

– प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल (अहमदाबाद)



सं. २०६० आश्विन शुक्ल द्वितीया ता. १५-१०-२००४ के दिन अहमदाबाद में श्री नरनारायणदेव के दरबार में भगवान श्री स्वामिनारायण द्वारा स्थापित श्री नरनारायणदेव गादी संस्थान के वर्तमान पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य शिरोमणी १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने सत्संग का उत्तरदायित्व श्रीहरि के सातवें वंशज प.पू. कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री को सौंपा है। इस धन्य समय का लाभ जिन्होंने लिया है वे निश्चय ही अक्षरधाम के अधिकारी हैं। इस अवशर का वर्णन करना अति कठिन है। भक्तिभाव से पूर्ण, प्रेमकी पराकाष्टा की अनुभूति, आध्यात्मिकता का साक्षात्अनुभव, त्यागी गृही की एकात्मभाव के आनंद तथा स्नेह का वर्णन अशक्य है। फिरभी आन्तरिक हृदय की प्रेरणा से उस समय का निरुपण करने का थोड़ा प्रयास कर रहा हूँ।

श्रीहरि के पांचवे वंशज प.पू. आचार्यश्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का उत्तर दायित्व रुप पगड़ी को धारण करके ३५ वर्ष तक (सं. २०२५ से सं. २०६०) इस उत्तराधिकार रुप पगडी को अपने ही मानस पुत्र श्रीहरिके सातवें वंशज श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराज को प.पू. आचार्यश्री महाराजने जब इस गादी पर पदारुढ किया तो सारा समाज नतमस्तक होकर हृदय में स्थापित कर लिया। जो महाराजश्री अपने जीवन को वाणी से नहीं बल्कि व्यवहार से उतार कर समाज में उदाहार्य रहे हैं। ऐसे इन धर्माचार्य को यह अबाधित सत्ता भी शरीर के ऊपर मल जैसी ही रही। जिसका आपने स्वेच्छया परित्याग करके मानव मात्र को उदाहरण दिया। संत, महंत, हरिभक्त सभी लोग गीता के अनाशक्ति योगका प्रत्यक्ष दर्शन किये। क्षुद्र स्थान का त्याग न करने वाले जीव इस महान गादी स्थान को क्षणभर में छोड़ते देखे। सभी आश्चर्यचकित रह गये। लोगों की वाणी मूक हो गयी। पैर आगे बढ नहीं सके। सभी लोग इस दिव्य घड़ीका दर्शन अपने नेत्रों से देख कर आनंदित हुए। सभी हरिभक्तो को भी इस उदाहरण को जीवन में उतारना चाहिए। महाराजश्री उत्तरदायित्व से हटे नहीं है, वे निवृत्त भी नहीं हुए हैं। बल्कि आपकी यह एक लीला ही हैं। आपने अपना सम्पूर्ण दैवत्व वारसा में देकर अपने आशीर्वाद को अन्य को दिया हैं। और स्वयं तो आत्मस्वरुप से निर्लेप है। "श्रीजी के अपर स्वरुप जिन्हे कहा जाता था वे श्रीजी के स्वरुप ही हो गये।"

सुख दुःख दोनो ही एक सिक्के के दो पहलू हैं यहाँ उसी का समन्वय किया गया। इस प्रसंग में लाखों हरिभक्तों के अश्रुजल बहे तो भी क्या महाराजश्री के सत्संग बगीचा में वहाये गये स्वेदकण के वरावर हैं ? लेखक तथा कवि कोई भी करुणार्द्र दुःख या सुख का

निर्णय नहीं कर सका । पूज्य महाराजश्रीने पगड़ी उतारी इसका तो सभी को दुःख हुआ लेकिन उससे कहीं अधिक आनन्दाश्रु बहे जब पगड़ी को अपने से सवाया पर पहनाये, और सभी के दुःख भूल गये । आनन्दकी लहर दौड़गयी । प.पू.ध.धु. आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी का जयघोष दिगदिगन्त तक व्याप्त हो गया । अतिनिर्मानी दिव्य विभूति पूज्य, श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री को उतना आनंद स्वयं की पगड़ी धारण में नहीं हुआ जितना पगड़ी उतारने में हुआ । (क्योंकि उन्हें अपने आत्मस्वरुप में आनन्द लेने का स्वभाव है) इससे अधिक आनंद सत्संग समाज को हुआ क्योंकि यह पगड़ी उत्तरोत्तर मेधावी, प्रतिभाशाली, प्रबुद्ध, गृहस्थ वैरागी, आर्षद्रष्टा महापुरुष के मस्तक पर सुशोभित हो रही है । ऐसे महापुरुष का शिष्यत्व प्राप्त करना पूर्वजन्म के पुण्य का ही फल है । लौकिक दृष्टि से अब पू. श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की निवृति को इतिहास में लिया जायेगा । स.गु. श्री निष्कुलानंद स्वामी का यह कीर्तन "मैं हूँ आदि अनादि आ तो सर्वे उपाधि" जिन्होंने अपने जीवन में एकक्षण भी विसारा नहीं, ऐसे दिव्य महापुरुष के लीला चरित्र को समझना हजारों जन्म भी कम पड़ेगा ।

सम्प्रदाय की शोभा, गरिमा तथा गौरव के समान आचार्यत्व के पगड़ी की महिमा अनूठी है । परात्पर परमात्मा श्री स्वामिनारायण भगवान ने ही धर्म वंशी आचार्य के मस्तक पर आरुढ करने का विधान किया है । यह सत्ता की निशानी नही, बल्कि उत्तरदायित्व है । इसका भार सभी सत्संगी के भौतिक तथा आध्यात्मिक वजन की अपेक्षा अधिक है । जितने प्रदेशों में श्रीजी का शुद्ध सत्संग प्रचारित है उतना ही इसका विस्तार समझना चाहिए ।लाल रंग तथा रेशमी यह सन्यासाश्रम (भगवा) तथा गृहस्थाश्रम (रेशमी) दोनो की गुरुता का स्थान महाराजश्री में है । आपने पगड़ी की महिमा को बताते हुए कहा कि हम भी इस पगड़ी को धारण करने से पूर्व बन्दन करते हैं । पीठाधिपति भी यदिइस पगड़ी की महिमा समझते हैं तो निश्चित ही यह पगड़ी पाप का नाश करने वाली है । ऐशी दिव्य महिमा वाली पगड़ी को धारण करने वाला कोई महापुरुष ही हो सकता है । इस पगड़ी को धारण करने की क्षमता वाले नवयुवान आचार्य प.पू.ध.धु. १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रासदजी महाराजश्रीने आचार्यत्व की पगड़ी को धारण करके सत्संग समाज के आत्यंतिक कल्याण का उत्तरदायित्व लेलिया । यह पगड़ी श्रीजी महाराज द्वारा प्राप्त है । इसलिए धर्मवंशी आचार्यो को सुशोभित होगी । श्रीजी महाराज के वचनानुसार जीव का कल्याण इस पगड़ी में निहित है।

आज के कलियुगमें वान प्रस्थाश्रम या सन्यासाश्रम में न जाकर केवल प.पू. आचार्य महाराजश्री से यह सीखलेकर व्यवहार करें तो निश्चित ही यह लोक तथा परलोक सुधर जायेगा । गादी त्याग के दिन जब मंदिर आये तो पगड़ी धारण करके आये बाद में पगड़ी विना गये । लेकिन दोनों समय मुखारविन्द में थोड़ा भी फर्क नहीं था । इसे ही त्याग की पराकाष्ठा कहते हैं । विसुकी गाय दान करने की अपेक्षा दुग्धा गाय का दान श्रेयष्कर है । महाराजश्री ने यह जगत के लिए उदाहरण दिया हैं । आज तो सत्ता या गद्दी प्राप्ति के लिए क्या क्या नहीं किया जा रहा है । उसी परिप्रेक्ष्य में इस धर्म की गद्दी पर अपने अनुगामी को गद्दी देने के लिए और लेने के लिए दोनों में निस्पृहता थी । जो दुनिया के लोगो के लिए हृदय स्पर्शी है ।

श्रीहरि ग.प. २१ वें वचनामृत में कहते है - किइस संसार में जिसे धन-दौलत-राज की जरुरत नहीं है वे ही सुखी हैं । महाराजश्रीने इस प्रकार का वर्तन करके समाज को एक बड़ी सीख दी है । खुद भगवान के वंशज होते

हुए तथा बाप की तरह बेटा भी आजतक बिना पगड़ी के युवा सत्संग समाज का दिल जीत कर सत्संगका खूब विकाश किया । कवि कलापी के शब्दों में "सुंदरता पामता पहेला सुंदर बनवुं पड़े" आचार्य बनने से पूर्व अविरत सेवा की धुनि जगा दिये थे ।

स्वामिनारायण भगवानने जो आज्ञा की है वैसा जीवन में आचरण करने वाले पूज्य श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज ने अपने पुत्र, श्रीहरि के सातवें वंशज का गादी अभिषेक करने का निर्णय लिया । आपका अकाट्य निर्णय पितापुत्र के सम्बन्ध से गुरु शिष्य के सम्बन्ध मे परिवर्तित करके और भी दृढ बना दिया । अहमदाबाद तथा वडताल दोनो देश के सन्त, महन्त, आचार्य, हरिभक्त भाई तथा बहनोकी, राजनेता, धर्मनेता तमाम वर्ग के लोगों की उपस्थिति में ब्राह्म मुहूर्त से लेकर ब्रह्मदेव, सूर्य, अग्नि की साक्षी में वेदमन्त्रोच्चार के साथ प.पू. श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज यथाविधि गादि पर स्थापित किये । सम्प्रदाय की प्रणालिका अनुसार वेदविधि से सभी कार्य सम्पन्न हुआ । देश-विदेश से आये हुए लाखो भक्तों के लिए पग रखने की जगह नहीं थी । भगवान श्री नरनारायणदेव के सन्मुख यहविधि सम्पन्न हुई। प.पू महाराजश्री खड़े हुए और श्रीहरि के स्वरुप में उन्हे अपनी पगड़ी पहना दिये । पू. लालजी महाराजश्री के मस्तक पर पगड़ी पहनाकर पारम्परिक उत्तरीय को ओढाकर आरती उतारे । पू. लालजी महाराजश्री के नेत्रजलकी धार बह पड़ी । भाव विभोर हो गये यह दृश्य सभी के लिए चिरविश्मरणीय बना रहेगा । गुरु तथा आचार्य श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजने उन्हे धैर्य बंधाया इस के साथ ही उनमें आचार्यत्व का तेज चमक उठा । परिणाम स्वरुप उनका दर्शन लालजी में से आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराज के रुप में सभीको हुआ, उनके जय जयकार से सारा गगन मंडल व्याप्त हो गया । जिसके ऊपर समर्थ आचार्यश्री के आशीर्वाद की वर्षा हो रही थी उसी पर सन्त महंत भी अपनी शुभकामना की वर्षा कर रहे थे ऐसे नव नियुक्त नये आचार्य की जय ध्वनि के साथ श्री नरनारायणदेव की गगनभेदी ध्वनि व्याप्त हो गयी ।

प.पू. महाराजश्रीने अपने पुत्र को सत्संग समाज को देकर सम्प्रदाय को उचित मार्गदर्शक देकर उम्र के अन्तिम क्षण में भी उपकार की भावना का एकमिशाल प्रज्ज्वलित किया ।

प.पू. कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री को पिताश्री के सन्मुख गादी ऊपर बैठना अच्छा नहीं लगता है ।

जिस महाराजश्रीके चरण स्पर्श के विना वर्तमान आचार्यश्री गादी पर नहीं बैठते थे आज उन्ही को गादी पर बैठाकर पिताने ही उनकी आरती उतारी और वह उन्नत स्थानपर प्रतिष्ठित किया । दोनो एख दूसरे के शिष्य होने में तत्पर हुए है लेकिन गुरुपद की नही, शिष्य पद की । यह उत्कृष्ट विवेक कहीं मिल नही सकता है । टोपी पहनाने वाला, टोपी बनाने वाला, पगड़ी देने वाला, पगड़ी बंधाने वाला तो दुनिया में अनेक होंगे लेकिन अनपी पगड़ी दूसरे के मस्तक पर रखकर उसे अपने जैसा बनाने वाला प.पू. तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के सिवाय कौन हो सकता है । शिख गुरु गोविन्दसिंहने अपने संप्रदाय के लिए जिस प्रकारचारयुवकों का बलिदान मांगा था । उसी प्रकार यह नव युवान आचार्य श्री धन्य है । जिन्होंने अपने मस्तक को आचार्यश्री के चरण में सम्प्रदाय के लिए रख दिया ।

सम्प्रदाय की रीति रसम तथा प्रणालिका के अनुसार विद्यमान गादीवालाने भी उसी समय पू. बहूजी को अपनी जगह पर स्थापित किया था । उनकी गन्धाक्षत से पूजा करके गादी पर प्रतिष्ठित किया । प.पू. गादीवालाने मंत्रदीक्षा विधि करके उन्हे मुमुक्षु बहनो तथा त्यागी

बहनों की दीक्षा का अधिकारी बनाया । पू. बहूजी महाराज सभी महिला मात्र के गुरुपद पर प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा, श्री गादीवाला महाराज के रुप में विराजमान हुई । प.पू. माताजी की वात्सल्यमयी मूर्ति सभी के समक्ष दृष्ट हुई । पू. बहुजी की बड़ी धन भाग्य है कि पू. माताजी एवं गादी वाला की कृपा एवं अमिट आशीर्वाद उनके ऊपर वरसता रहा है । स्वयं त्याग मूर्ति ऐसी बहूजी इस उत्तरदायित्व को सम्हालीं । उपस्थित त्याग-गृही सभी बहनों ने इन लक्ष्मीस्वरुपा गादीवाला का जयजयकार की ।

प.पू. महाराजश्री तो अक्षरधाम में ले जाने की सीढी थे, लेकिन नव नियुक्त आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराज ने उस मार्ग के लिए और सरल मार्गद्रष्टा मिले हैं । प.पू. महाराजश्री के धर्मशासन में ३५ वर्ष तक सम्पूर्ण सत्संग समाज ने देख रेखकी लेकिन महाराजश्री अकेले ही सारी दुनिया के सत्संगियो को हरपल हरक्षण अपनाया और रक्षण मनक्रम वचन से किया, यही तो उनकी महानता है । आप तो दत्तात्रेय के स्वरुप हैं । आपश्री हरिभक्तों के घर को तीर्थ मानकर विचरण करते रहे । फलस्वरुप आप स्वयं श्रीजी के स्वस्वरुप में सभी के यहाँ पदार्पण किये सभी ने जीवन में सुख और शांति का आनन्द दिपाया ।

स.गु. श्री रामानन्द स्वामीने धर्मगादी की धुरा जैसे नीलकंठ वर्णी को अर्पण करके जिस तरह स्वजीवन में वर्तन किये, ठीक यही स्थिति पू. महाराजश्रीने अपनेज ीवन में किया । उसी इतिहास का आवर्तन हुआ है । सभी सत्संगियों को प्रार्थना कि पू. महाराजश्री को अब शान्तिमय जीवन जीने में सहयोग करें तथा भगवान नरनारायणदेव को प्रार्थना करे कि वे स्वस्थ दीधार्यु मय जीवन विता सकें ।

जो तेज है (ग.म.१३) वही यह तेज है । सम्प्रदाय में वचनामृत महाग्रंथ श्रीहरि के वचनों का संकलन है । वह एक वेमिशाल ग्रन्थ है जो कहीं से अकाट्य है । उसमें कही छोडने योग्य नहीं है । वह श्रीहरि का तेज ही है ।

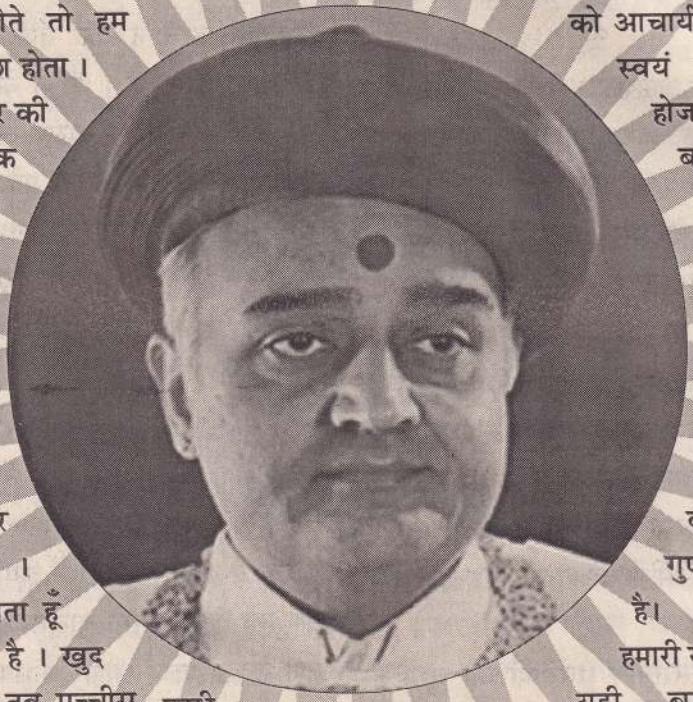
"मेरे हृदय में एक मात्र तेज ही व्याप्त हो रहा है उसमें से कुछ त्यागने के योग्य नहीं है । सम्पूर्ण ग्रन्थ में मेरातेज ही दिखाई देता है । जो अतिप्रकाशमय है वही घनश्याम की मूर्ति है फिरभी थोड़ी भी श्याम नहीं है वही तेज प्रत्यक्ष महाराज हैं ऐसा सभी मानना ।

प.पू. श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री भी जहाँ जहाँ हस्ताक्षर करते है वहाँ तेज ही लिखते हैं । खुद तो भगवान के पुत्र हैं । श्रीजी के अपर स्वरुप हैं । श्रीहरि की अखंड मूर्ति को धारण कर रहे हैं । बाल्यावस्था से आजतक वचनामृत विना पढे शयन नहीं करते हैं । इस शास्त्र का गहन अध्ययन आपने किया है । इसीलिए तो श्रीहरि की बनाई मर्यादा का उल्लंघन कभी नहीं किया । आचरण द्वारा ही समाज को उपदेश दिया, इसका साक्षी समाज ही है । लाखों बार लिखा गया तेज शब्द आज सभी के हृदय में तेज फैला रहा है जो कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता है । यही तेज हृदय को झंकृत करने वाला है । प्रज्ञा को प्रकाशित करने वाला, मोहमाया से दूर करने वाला, जीवन में सुषुप्तिसे जगाने वाला हृदय में प्रभु का दर्शन कराने वाला यह तेज है । इसीलिए तो यह तेज ऊद्धव शब्द श्रीहरि का पर्यायवाचक है । महापुरुष प्रलाप नहीं करते बल्कि मौन होकर जीवन में व्यवहार द्वारा समाज में उदाहरण बनकर आते है, जो पू. महाराजश्री में प्रत्यक्ष सभी ने देखा है । ऐसे महापुरुष के नाम स्मरण तथा दर्शन से संकल्पसिद्धि, आशीर्वाद से मृत्युमुख से जीव वाहर, इत्यादि वचन सिद्धि के उदाहरण इन के जीवन कवन की एक गाधा लिखी ज सकती है । ऐसे दिव्य पुरुष को समझकर तथा श्रीहरि के वचनामृत को शांति से वारंवार चिंतन करने से उपरोक्त शीर्षक की गाम्भीर्यता का अर्थघटन हो सकता है ।

तेज की किरण

- चंद्रकांत मोहनलाल पाठक (गांधीनगर)

लेकिन उन्होंने निवृत्ति अचानक लेलिया ? सभी को आश्चर्य में डाल दिया ! अरे भाई ? हमें तो खबर, हुई जब समाचार पत्र पढें । पांच सात वर्ष तक और रहे होते तो हम सत्संगियों के लिए अच्छा होता । महाराज तो साक्षात् ईश्वर की मूर्ति है । इनके प्रत्येक कदम में तीर्थ है । इनके दर्शन से दुःख दूर हो । इनकी कृपा से कल्याण हो । हमें तो आज भी विश्वास नहीं होता कि महाराजश्रीने कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजको गादी देकर निवृत्ति ले ली हों । आधीरात में जब जागता हूँ तब यह विचार आता है । खुद जब गादी ऊपर आये तब पच्चीस वर्ष के थे । उसी समय से प्रभावशाली व्यक्तित्व था । दर्शन करते ही आनंद मिलता । पिताश्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के धाम में जाने का प्रसंग अभी ताजा ही था कि उनके विरह का दुःख महाराजश्री के दर्शन से हल्का हो जाता था । यह सभी अनुभूत बाते हैं । करीब पैतीस वर्ष तक सत्संग में घूमते देखा है । श्रीजी महाराज ने मुक्तमुनि के लिये कहा था कि उनकी श्रद्धा तथा भगवान का माहात्म्य हमेशा नया का नया ही रहेगा । कभी न्यून नहीं हुआ।



उसी प्रकार अपने आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी का भी सत्संग के कार्य में, सत्संग की वृद्धि करने में उत्तरोत्तर उत्साह बढता ही रहा । भगवान की गद्दी पर भगवान जैसा ही सम्हाल सकता है । अपने महाराज तो सफलता पूर्वक सम्हाले और क्षणभर में ही अपना अधिकार छोड़दिये । कितने निर्मोही पुरुष है । स्वामिनारायण भगवानने अपनी गादी के साथ अपना देवत्व जोड़े हैं । अपने सामर्थ्य को उसमें सम्पृक्त किये हैं । विधिपूर्वक लायक व्यक्ति को आचार्यपद पर नियुक्ति होने पर स्वयं दैवी अंश आविर्भूत होजाते हैं । भगवान तो छोटे बड़े सभी के हृदय में रहते हैं । लेकिन पात्रता के अनुरुप सामर्थ्य में न्यूनताधिक्य होता रहता है । भगवान की गादी पर जब आचार्य आरुढ होते हैं तो भगवान का ज्ञान, शक्ति बल, ऐश्वर्य, वीर्य, तेज ये छ ईश्वरीय गुण उनमें उद्‌भूत हो जाते है।

हमारी सत्संग मडली में इस समय यही बात चलती है । श्रीतेजेन्द्रप्रसादजी की निवृत्ति के सन्दर्भ में । रामजीभाई, शामजीभाई, घनश्यामभाई, धीरजभाई, दिनमणी उपाध्याय, जगन्नाथ त्रिवेदी, हरिकृष्ण व्यास, छगन पटेल, विश्वनाथ, डायालाल गणेश भगत ये सभी हमारे मंडल के सदस्य हैं । महाराज के विषय में सभी अपने अपने अनुभव को व्यक्त किये ।

हमारे घनश्यामभाई से जब कुछ पूछा जाता तो श्रीजी महाराज तथा तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज में समानता बताते, और कहते कि जो कुछ श्रीजी महाराज के विषय में सुना है वह तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजमें प्रत्यक्ष दिखाई देता है । श्रीजी महाराज में एक अद्‌भुत आकर्षण था । इससे आश्रित सत्संगी ही नहीं अपितु इतर लोग भी वशीभूत हो जाते थे । भूमानंद स्वामी को श्रीहरि के दर्शनमात्र से ही भगवान के रुप में निश्चय हुआ था । पूर्णानन्द स्वामी को महाराज की चाल देखकर भगवत्व का निश्चय हुआ था । किसी को महाराज का सौन्दर्य देखकर भगवान का निश्चय हो गया था । जूनागढ के नवाब को श्रीजी महाराज राजमार्ग पर अश्वऊपर सवार होकर जाते हुए ककड़ी खाते देखकर खुदा होने का निश्चय हो गया था । आज के समय में श्रीजी स्वरुप श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज में ऐसा ही प्रभाव हम अपने इन नेत्रों से देख सकते हैं । आपको खबर है ? कि एकबार द्विशताब्दी महोत्सव में डोंगरेजी महाराज को महाराजश्री ने कहा कि आप मेरे साथ बैठिये तो डोंगरेजी महाराजने कहा नहीं आप के साथ एक आसन पर बैठना ठीक नहीं क्योंकि आप को मैं चलते फिरते भगवान स्वामिनारायण को देख रहा हूँ । आप में तथा भगवान स्वामिनारायण में कोई भेद नहीं है ।

आप ठीक कह रहे हैं - लोगों में उनके प्रति अपार श्रद्धा है । गांवो में जब महाराज श्री पदार्पण करते है तब गांवजन उनके चरणों में लेट पडते हैं । कवि दलपतराम अपने अनुभव को लिखते हुए कहते हैं कि-

बलथी धन थी बनी शके तेह कहे नृप कोय ।
ले खेंची मन लाखना ये तो ईश्वर होय ॥
यह सत्य बात है ये ईश्वर ही हैं
ऐसा हरिप्रसादने कहा ।

हमारे रामजीभाई ने एक समझने लायक बात कही - कि महाराजश्री तो गीता के "कर्मण्येवाधिकारस्ते" इस श्लोक को चबाकर पचागये हैं। सत्संगी की उन्नति कैसे हो इसका सतत चिंतन करते रहते हैं । अपने दादा कैसे प्रसन्न हो यही ख्याल रखकर रात दिन विचरण करते रहते हैं । तुलसीदास ने रामचरित्र लिखा है। जिसमें भगवान श्री रामने कहीं भी अपने अनुयायियों को उपदेश नहीं दिया । खुद मर्यादा पुरुषोत्तम थे। कर्तव्यनिष्ठा को प्रधानता देते । भावना की अपेक्षा कर्तव्य को महान बताते । इसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर अपने महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजीने यावत् कार्य काल जीवन को चरितार्थ किया । विना बोले आचरण में उतारे । मेरा कर्तव्य ही मेरा जीवन है और मेरा जीवन ही उपदेश है । सभी प्रेक्टिकल विचार खुले पन्ने जैसा जीवन दर्पण जैसा स्वक्ष - निर्मल कोई भी देख सकता है कोई भी पढ सकता है ।

हमारे धीरजलाल को कुछ विशेष कहना है कि श्री तेजन्द्रप्रसादजी तो सत्संगियो के हृदय में विराजमान हैं । उनको न जानने वाला कोई ही अभाग्य शाली होगा । दीवाल पर लटकती तस्वीर को देखकर यह लाल पगड़ी वाला कौन है और देखने के साथ ही अपने अज्ञान को दूर करलेता है । ये तो हमारे गुरु हैं । भगवान स्वामिनारायण के तेज हैं । आचार्यश्री तेजेन्द्रप्रसादजीका नाम लेते ही आनन्द की लहर फैल जाती है ।

सत्संगी लोग महाराजश्री को मान सन्मान करें यह तो ठीक लेकिन महाराजश्री भी सत्संगियों के प्रति वैसा ही आनन्द प्रेम करते हैं । उनके लिए नकोई छोटा है नहि कोई बड़ा। गरीब अमीर की तो बात ही नहीं । हरि भक्तों के प्रेम को वे प्रधानता देते। एकबात आप को कहता हूँ । एक मेरे सम्बन्धी हळवद रहते हैं । प्रसंगवस महाराजश्री हळवद गये । गांव में पदार्पण हेतु एक लीस्ट तैयार की गयी । समय कम लिस्ट बड़ी बनी । मेरे संबंधी को जानकारी थोड़ा लेट हुई- फिरभी मंदिर में जाकर व्यवस्थापक को मिले और घर पदार्पण के लिए निवेदन किये । लेकिन व्यवस्थापक ने स्पष्ट कर दिया। और कहा कि अब यह शक्य ही नहीं । वहभाई निराश होकर घर



आ गया । लेकिन रात में उसे प्रेरणा हुई कि महाराज श्री मेरे मुहल्ले में आने वाले है, मेरे घर के बगल में ही पदार्पण करेंगे, आने का रास्ता मेरे घर से ही है । इस लिए तैयारी तो करके रखना है, आवें या न आवें ये तो श्रीजी महाराज की इच्छा .

समय के अनुसार महाराजश्री वहाँ से पसार होने वाले थे इस लिये वहभाई गली में खड़ा हो गया । जब महाराजश्री नजदीक आये तो चरणस्पर्श किया और उनकी तरफ करुणाभाव से देखने लगा, महाराजश्री उसके भाव को समझ गये, जब उस भक्तने घर में पदार्पण की बात की, यद्यपि लिष्ट में नाम नहीं था । ना की तो भी महाराज श्री उसके भाव के वशीभूत होकर घर में गये और भगवान की आरती किये । भक्त ने प्रसाद दिया और भेटं दी लेकिन महाराज ने कहा हम ब्राह्मण का नहीं लेते हैं ।

हणवद के ब्राह्मणों को महाराज संमान से देखते हैं । श्रीजी महाराज भी हळवद के ब्राह्मणों के प्रति कृपादृष्टि रखते, उत्सव करते, यज्ञ करते, देव प्रतिष्ठा या कोई महोत्सव होता तो उसमें आमन्त्रण देकर बुलाते और प्रसंगानुसार दक्षिणा भी देते । अपने महाराजश्रीने भी जब पिताश्री धाम में गये तब हळवद में चौरासी गाँव के ब्राहमणों को भोज दिया था ।

आपके हृदय में किसी के प्रति कभी क्रोध या रोष उत्पन्न ही नहीं हुआ । संत तथा हरिभक्त के प्रति सदा आत्मभाव रखते । हरिभक्तो के कुशल क्षेम को पूछने का स्वभाव तो श्रीजी महाराज जैसा था। बोटाद के भगादोशी के मंदवाड का समाचार सुनकर श्रीजी महाराज रात के मध्यरात्रि में देखने चले गये । रास्ते में बरसात हुआ भीगते हुए दादा खाचर की गली में चारो तरफ पानी भरा हुआ था फिर भी घोड़ी को बांधकर भगादोशी को देखने गये । उसे सान्त्वना दिये, दर्शन का सुख दिये । महाराज श्री तेजेन्द्रप्रसादजीभी सन्त-हरिभक्तों की ऐसी ही सम्भावना

की है। श्रीजी के आदर्शो को जीवन में उतारा है। अभी पांच वर्ष पहले की बात है। भुज के एक सन्त की बिमारी का समाचार सुनकर तुरत ही उन्हे देखने के लिए पहुँच गये। सन्त के मस्तक पर हाथ फेरे और अपने हाथ से उनके मुंख में पानी डालकर उनकी सम्भावना की। पिताश्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की तरफ से जो सीख मिली थी वह अक्षरश: पालन किया। इस के बाद सभा में बताते हुए उन्होंने कहा - बापूजी मुझे कहे थे कि कोई भी संत हो चाहे कितना भी छोटा हो उन्हे मान से बुलाना। कभी तुकार के नहीं बुलाना, इनका संमान करना। भगवान सहजानंदने अपने कुल को आचार्यपद दिया है इस की शोभा बढाना अभिमान कभी नहीं करना।

धन्य है परमेश्वर के समान वे पिता जिन्होंने इस प्रकार की उत्तम सलाह दी। प्रणाम उन्हे है जिन्होंने इस गरिमा भरी उक्ति को जीवन में चारितार्थ किया।

अपने महाराजश्री के विषय में आप क्या कहते हैं - जगन्नाथभाई से किसी ने पूछा ? महापुरुषों का इस लोक में आना केवल जगत के जीवो के कल्याण के लिये होता है। किशोरावस्था से पूर्ण नव पर्ष की उम्र से ही आप ने सत्संग में विचरण प्रारम्भ कर दिया। पिताश्री देवेन्द्रप्रसादजी के पास सभी प्रेरणा लेते रहे और आचार्य के उत्तरदायित्व का पाठ शीखते गये। मात्र चौदह वर्ष की उम्र में ही हरिभक्तों के आग्रह पर तथा पिता के आशीर्वाद से आफ्रिका के प्रवास पर गये। विदेश की उनकी प्रथम धर्मयात्रा थी। सम्भवत: १९५७ की साल थी। आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि श्रीजी महाराज द्वारा स्थापित दोनो देश के आचार्यो में से विदेश की भूमि पर प्रथम पग धरने वाले अपने पूज्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी थे।

सम्वत २०२५ में ध.धुरन्धर हुए थे। सं. २०२६ में आपकी देखरेख में माणसा मंदिर के देवों का प्रथम वार्षिकोत्सव मनाया गया। महाराजश्री तीन दिन तक माणसा में रुके रहे। लाखो लोग बड़े आनन्द उत्साह के साथ आपका स्वागत किये। बाद में तो कितने उत्सव - महोत्सव, यात्रा, प्रवास, देव प्रतिष्ठा सत्कार समारंभ जैसे अनेक प्रसंग किये।

किसी परदेश की सरकार मुफत में जमीन दी थी वह अफ्रिका में थी या अन्यत्र कहीं ? रामजीभाई ने याद आने पर पूछा। हाँ मोम्बासा में अपने मंदिर का ट्रस्ट है। ट्रस्ट को स्कूल के लिए जमीन लेनी थी। वहाँ के समुद्रतट पर लाईट हाउस में जगह मिले तो स्कूल के लिये उत्तम है, जिसके लिये कितनीसंस्थायें दौड़धाम कर रही थीं। लेकिन वहाँ की सरकार किसी अन्य को न देकर अपने मन्दिर ट्रस्ट को जमीन विना मूल्य को दे दी। पांच एकड जमीन मिली है। उस समय अर्थात् १९८७ की वखत में उसकी कीमत तीन करोड से भी अधिक थी। यह महाप्रभु श्री नरनारायणदेव तथा महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी के आशीर्वाद का ही फल है।

समाज को धर्म की जरुरत है। और धर्म को समाज की जरुरत है। धर्म के आधार के बगैर समाज नही बनता। किन्तु समाज को अच्छा बनाने के लिए और धर्म को मजबूत करने के लिये दोनो की आवश्यकता है। विदेशो में स्वामिनारायण संप्रदाय की सही पहचान देने वाले और सत्संग के सिद्धांतो का प्रसार करने वाले अपने प्रथम महाराजश्री है। शिक्षण क्षेत्र में समाज के भाविको की जिम्मेदारी जिन पर है उन युवक-युवतियो के लिये प्राथमिक विद्यालय, हाईस्कूल, उच्च कोटि की कोलेज, होस्टेल, गुरुकुल की स्थापना कर शिक्षापत्री के श्लोक १३२ का अमल किया है। इसके अलावा समाज की जरुरत देख कर विविध सामाजिक कार्य भी किए है। तंदुरस्त समाज के लिए व्यसन मुक्ति अभियान, गौरक्षा के लिए घासचारा, गरीब के लिए अन्नक्षेत्र, पर्यावरण के लिए पेड लगाने का, स्वास्थ के लिए अस्पताल, रोग निदान केम्प, ब्लड डोनेशन केम्प जैसे अनेक कार्य किए।

१. देशकी किसी भी आपत्ति में समाज के साथ रहे। मोरबी के मच्छु

बंध की घटना महाराष्ट्र (लातुर) में भूकंप, कच्छ का भूकंप या तूफान हो या किसी भी प्रकार की आफत हो खुद भी सहायता करते और भक्तो को भी कहते ।

कथा पारायण इत्यादि में हमारे हरिकृष्ण व्यास को रस है । समय निकाल कर सुनने जाते है इसलिए उनका धार्मिक ज्ञान अच्छा है । कुछ बात तो वे गुरु महिमा के बारे में बताने लगे ।

ब्राह्मण का स्थान सर्वोच्च है । ब्राह्मण जगतगुरु कहलाते है । जैसे ब्राह्मण वैसा जगत । अर्जुन, युधिष्ठर, राम, कृष्ण, लव, कुश इन सभी ने ब्रह्मदेव से विद्या प्राप्त की । यू तो अपने आचार्य महाराज जगतगुरु तो है, लेकिन अपने वे धर्मगुरु भी है । वे हमारे दीक्षा गुरु है । अत्रि स्मृति में गुरु की महिमा बताया गया । -

एक मेवाक्षरं यस्तु गुरुः शिष्यः
प्रबोधयेत् ।
वृथिव्यां नास्ति तद् द्रव्यं यद् दत्वा
चानृणी भवेत् ॥

जिस गुरु ने केवल एक अक्षर की विद्या प्रदान की है फिर भी उनके ऋण से मुक्त होने का कोई द्रव्य नहीं है । अपने गुरुदेव को हम मनपूर्वक वंदन करते है हम उनकी महत्ता बताने में असमर्थ है । पिता की तरह महाराजश्री भी मानवता के पूजारी है। जब लंका के युद्ध में इन्द्रजित मारा गया तब उसकी पत्नी सुलोचना ने रावण को कहा मुझे मेरे पति का मस्तक ला दीजिए मुझे सती होना है । रावण ने कहा मस्तक तो राम के सैन्य के पास है तुम राम से मांग लाओ । सुलोचना ने कहा मैं दुश्मन के पास कैसे जाऊंगी । रावण ने कहा वे मानवता से भरे हुए है वे जरुर तेरा स्वागत करेंगे और वैसा ही हुआ। उसी प्रकार तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीका तो कोई दुश्मन ही नहीं है । लेकिन फिर भी वे शत्रुओकी प्रशंसा ही करते है ।

यह सुनकर दिनमणी उपाध्याय बोले मुझे भी कुछ कहना है ।

महाराजश्री कभी सत्य छुपाते थे।

क्या, आप क्या बोल रहे है ?

हा, वे कभी कभी सत्य को छुपाके रखते थे ।

आप क्या बोल रहे है आपको पता है । आप के पास कोई सबूत है ?

उसके प्रमाण तो मिलते रहते है गंभीरता पूर्वक दिनमाणी उपाध्याय बोले ।

विश्वनाथ ये दिनमणी पागल हुआ है । समझाओ उसे कुछ । हमने विश्वनाथ को कहा क्योकि दीनमणी से केवल वही जीत शकता था ।

दीनमणी ने कहा इसमें इतना उछलने की क्या जरुरत है जो सच है वही मैने बताया चलो मैं यह साबित करके बताता हूँ ।

एक हरिभक्तने न्युकोटन मील में वीवींग फैकटरी शुरु की । उसका आमंत्रण देवेन्द्रप्रसादजी महाराज को दिया । दूसरे दीन वे लालजीश्री तेजेन्द्रप्रसादजी को ले गए । पधरामणी दूसरी मंजिल पर थी । यह जान कर आचार्य महाराजने कहा मेरे पाँव में फुन्सी हुई है, चल नही पा रहा हूँ । लालजी महाराज को ले जाइये ।

महाराजश्री आप कल बोले होते तो आपको कष्ट नही देता । तब महाराजश्रीने कहा हरिभक्तों को नाराज करते हुए मुझे दुःख होता है इसलिए ना नही किया ।

इसी प्रकार की कई प्रेरणा को प्राप्त करते हुए लालजी महाराज के रुप में पले पुत्र ने भी प्रेरणा दिल में उतारी । जिसका समर्थन उनकी वाणीं करती है । रजत सुवर्ण जयंती में कहा था "सत्संगी को हम दिव्य दृष्टी से देखते है ।" हमारे दादा (श्रीहरि) कहते मैं भक्तों के नामकी माला करता हूँ । उसी प्रकार ये हरिभक्त मेरा जीवन है ।

अब सुनिए लालजी महाराज (तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज की बात । किसी अवशर पर वे मूली के रामपुर मे गए । उसी दिन सात जगह पदार्पण करने थे । सभी लोग घर पर तैयारी किये थे । किन्तु महाराजश्री अस्वस्थ थे । लेकिन कुछ बताये विना, कुछ नही हुआ है । इस प्रकार सब के घर पावन किए और फिर आराम कर दूसरे दिन लीमड़ी पधारे ।

तेजेन्द्रप्रसाजी महाराज तो करुणा का बहाव बन के बरसे । संतोने हरिभक्तोने अपनी अपनी शक्ति अनुसार उसे प्राप्त किया है ।

टोरेन्टो केनेडा में श्रीहरि के छठ्ठे वंशज प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पदार्पण

श्रीहरि के छठ्ठे वंशज प.पू.ध.धु. १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा अ.सौ. पू. गादीवाला एवं संतमंडल के साथ टोरेन्टो केनेडा में १९ सितम्बर २००४ से २३ सितम्बर ०४ तक पांच दिन के लिए प्रथमवार यहाँ पदार्पण किये थे ।

पूज्य कोसलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री लालगाट में दो वर्ष पूर्व सत्संग प्रचारप्रसार के लिए पदार्पण किये थे । जिस के फल स्वरुप सत्संग का सुन्दर विकाश हुआ है ।

धर्मवंशी आचार्य की यह प्रथम मुलाकात थी । ता. १९ सितम्बर २००४ रविवार को यहाँ के विशाल सनातन मंदिर में एक विशाल धर्म सभा का आयोजन किया गया था ।

सभा में धुनि, कीर्तन, सन्तो की वाणी तथा पूज्य महाराजश्री की अमृतमयी वाणी सुनकर सभी मंत्र मुग्ध हो गये थे । केनेडा में अमेरिका जैसा दोडधूम वाला जीवन नहीं है । यहाँ के सभी सत्संगी थोडे समय पूर्व आये है लेकिन सत्संग तथा धर्मकुल केप्रति निष्ठा एवं आदर वे मिशाल है । पू. आचार्य महाराजश्री तथा पू. गादीवाला हरिभक्तो की निष्ठा-प्रेम देखकर अत्यन्त प्रभावित हुए थे ।

प्रातः से लेकर रात्रिपर्यन्त पदार्पण का कार्यक्रम चालू रहता था । पू. महराजश्री भी मुमुक्षुओं को यथार्थज्ञान मिले, सच्चा मार्ग मिले इसी हेतु से सभी के घर पदार्पण करते थे । पू. महाराजश्री के अत्यंत प्रभावशाली व्यक्तित्व से यजमान अभिभूत हो जाते थे । साथ ही बाहर के लोग जो सत्संग से अछूते थे वे भी प्रभावित होकर कंठी पहनकर सत्संगी बन जाते थे । पू. महाराजश्रीने पुरुषों को तथा गादी वालाने महिला वर्ग को गुरुमंत्र दीक्षा देरक सत्संग वाटिका में नये-नये वृक्षों का आरोपण किया ।

यहाँ का "स्कारबोरो" विस्तार तो जैसे अपने सत्संग का एक छोटा सा गाँव हो इस तरह बड़ी संख्या में हरिभक्त रहते हैं । सभी हरिभक्तों को दर्शन का सुख देने हेंतु प.पू. महाराजश्री स्वयं सामने से चलकर सभी के घर पदार्पण किये ।

विदेश में अपनीभूमि से हजारों कि.मी. दूर आत्मीयजनों से दूर अलग सिद्धान्तवालों के साथ घर बखरी बनाकर रहना अत्यन्त कठिन है । परंतु अन्तर में भगवान श्री स्वामिनारायण तथा श्री नरनारायणदेव धर्मवंशी आचार्य में दृढ निष्ठा तथा आश्रय सभी को तरोताजा रखती है ।

सत्संग के प्यारे एवं श्रीहरि के छठ्ठे वंशज पू. आचार्य महाराजश्री का पदार्पण सभी के अन्तरमन को नवपल्लवित कर दिया ।

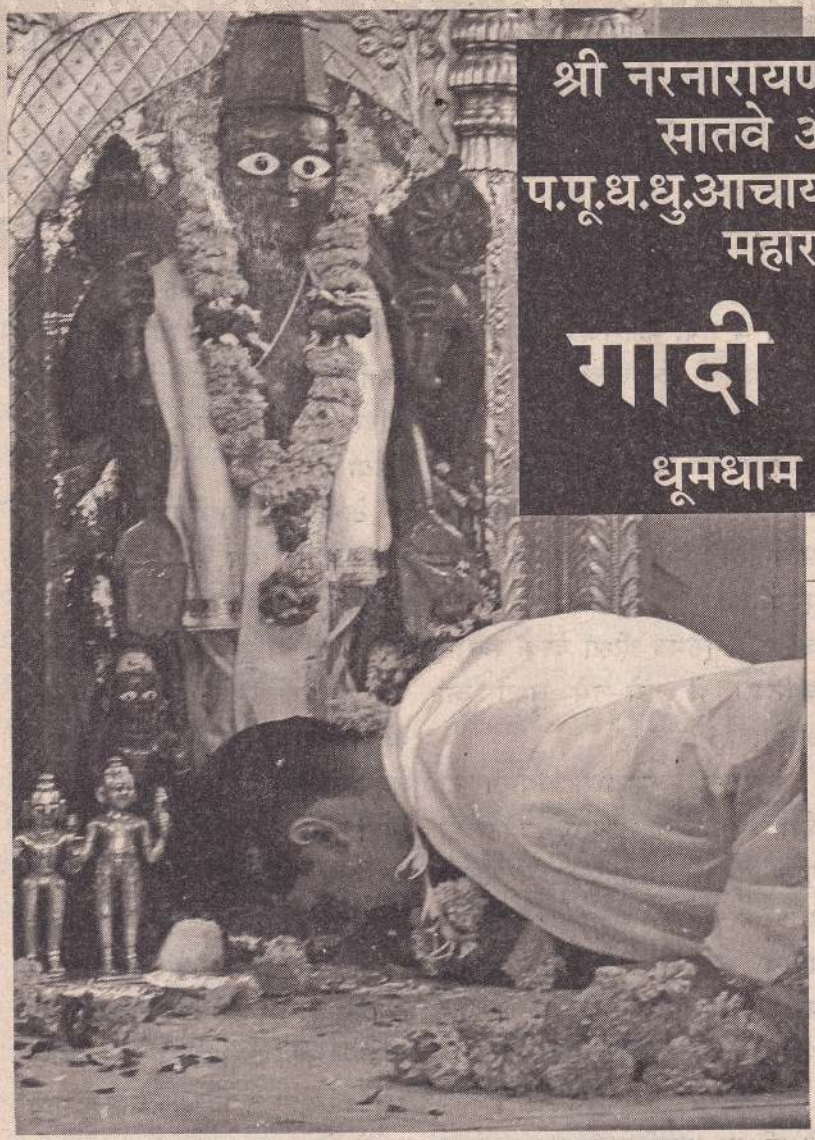
पू. महाराजश्री के साथ सभी हरिभक्तों ने यहाँ के टोरन्टो के श्री स्वामिनारायण मंदिर में जितनी जल्दी मंदिर बन सके उसके लिए संकल्प किया ।

केनेडा टोरेन्टो में रहने वाले सभी हरिभक्त तन, मन, धन से सेवा करने के लिए सदा तैयार रहते है, जिसमें रमेशभाई पटेल, श्री दरशरथभाई, श्री शशीकान्तभाई, श्री दिनेशभाई, श्री विपुलभाई आदिक मुख्य थे । तदुपरान्त किशोर तथा युवान सत्संगी मित्रोंने भी इस धर्मयात्रा की सफलता हेतु खूब परिश्रम किया ।

यहाँ पधारे हुए संतवृन्द में पू. पी.पी. स्वामी, पू. हरिकृष्णदासजी स्वामी, श्री संदीपभाई चौकसी थे । न्युजर्सी तथा डेट्रोईट से भी हरिभक्त इस धर्मयात्रा में महाराजश्री के साथ पधारे थे ।

पू. महाराजश्री जब पांच दिन की धर्मयात्रा पूर्ण करके भारत आने को तैयार हुए तब वहाँ के सभी हरिभक्तों की आँखो में अश्रुजल भर आये । आँखो के भीतर चमकते अश्रुबिन्दु अरसपरस की पहचान तथा अंतर में जीव को जैसे प्रकाश मिल गया हो ऐसा भासित होने लगाथा ।

- अतुलभाई भानुप्रसाद पोथीवाला



श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान के सातवे आचार्य पदपर प.पू.ध.धु.आचार्यश्रीकोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का

गादी अभिषेक

धूमधाम से सम्पन्न हुआ

– को. स्वा. सत्यप्रकाशदासजी

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू. आचार्य श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने वि.स. २०२५ आश्विन शुक्ल २ से आजतक सम्प्रदाय की उत्कृष्ट सेवा तथा उत्तम व्यवस्थापन पद्धति द्वारा संत तथा हरिभक्तों को प्रसन्न किया है ।



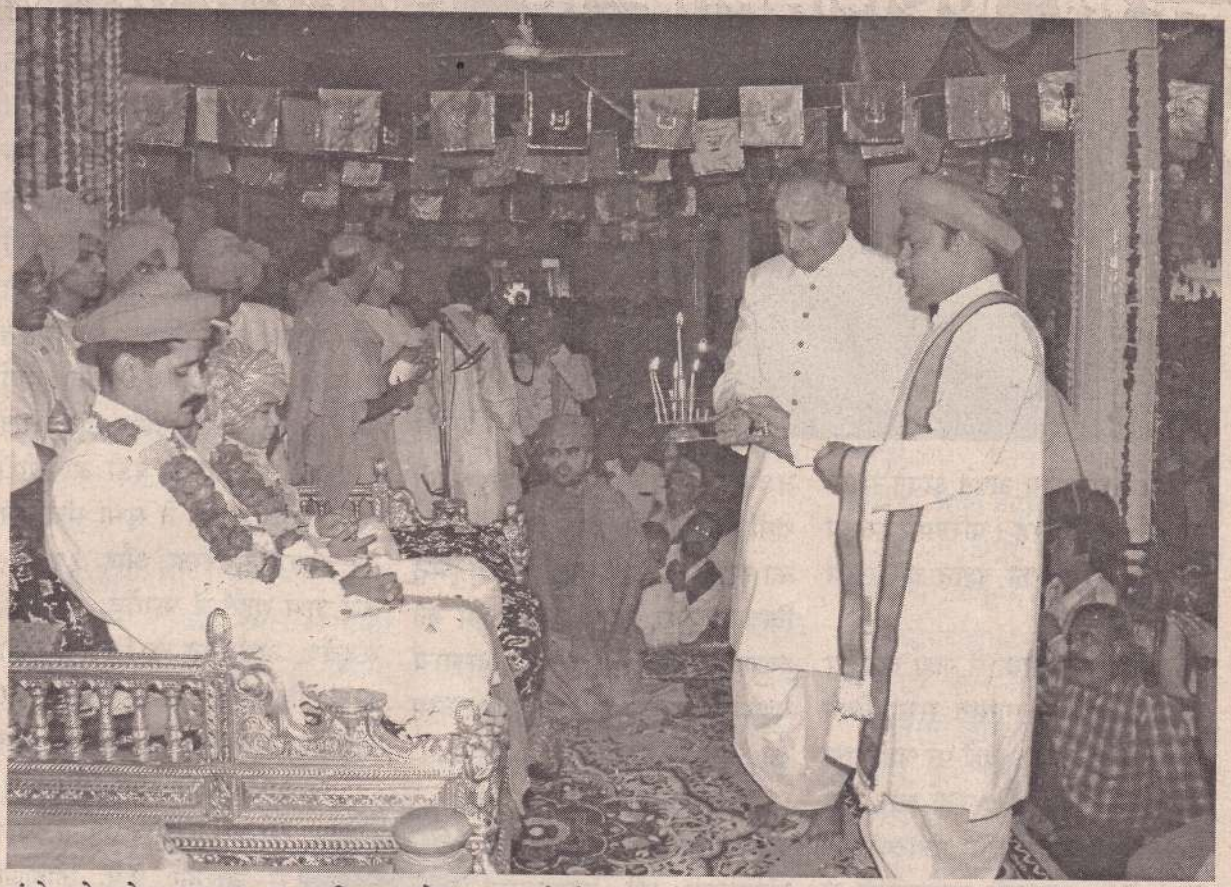
प.पू. महाराजश्रीने सतत ३२ वर्ष तक स्वयंध्यान देकर सुंदर संस्कार से युक्त ऐसे अपने युवान पुत्र रत्न प.पू. लालजी महारजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजीको अपना आचार्यपद देकर त्याग की परिकाष्ठा रुप संकल्प किया । अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामी तथा वरिष्ठ सन्तों के साथ चर्चाविचारणा की जिसका समाचार कर्णोपीकर्ण से हरिभक्तों तक पहुंच गया और सभी लोग उस समय की प्रतीक्षा करने लगे ।

प.पू. आचार्य महाराजश्री [illegible] महाराज के



अक्षरवास के बाद जिस दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का गादी अभिषेक हुआ था उसी दीन आश्विन शुक्ल पक्ष द्वितीया का शुभ मुहूर्त निश्चित किया गया ।

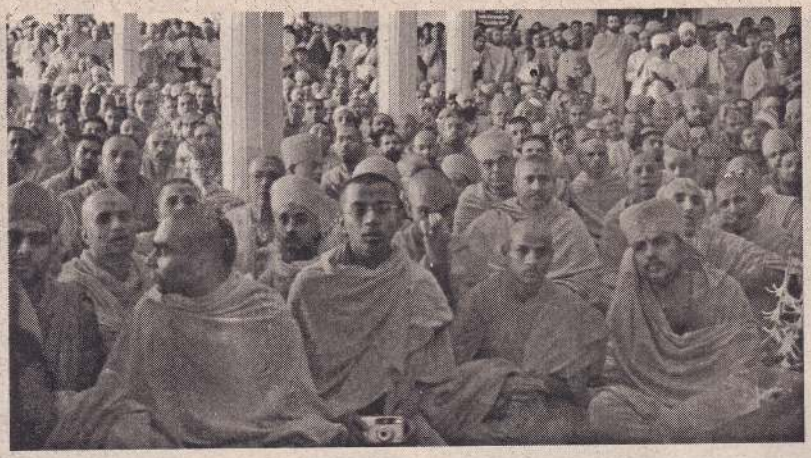
विना पत्रिका के ही कर्णोपीकरण से अमेरिका, लंडन, ओस्ट्रेलीया आदि खंडो से भक्तजन अहमदाबाद पहुँच आये थे । आश्विन शुक्ल द्वितीया के शुभ दिन अमदाबाद देश, मूलीदेश, कच्छ-भुज देश में रहते हुए श्री नरनारायणदेव के संतो के अलांवा वडताल देश, धोलेरा देश के सभी



संतो को फोन द्वारा समाचार मिला कि ४०० जितने संत सभा में पधारे। श्री स्वामिनारायण भगवान का केशरिया रंग अमदावाद में चारो तरफ छा गया । अनंत हरिभक्तों ने पदार्पण किया पूरे मंदिर में सभी तरफ केवल भक्तजनों का ही दर्शन हो रहा था ।

मंगल प्रभात में परम कृपालु ऐश्वर्यमूर्ति महाप्रतापी श्री नरनारायणदेव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री प.पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू. बाल लालजी महाराजश्री के वरद हाथों से पवित्र केशरजल से महाभिषेक वेद मंत्रोच्चार पूर्वक किया गया । जिसका दर्शन करके अनंत हरिभक्त-सन्त दर्शन करके आनंद प्राप्त किये । अभिषेक बाद भगवान को अलंकृत किया गया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा इस अवशर पर पधारे हुए वड़ताल श्री लक्ष्मीनारायण देव पीठ स्थान के आचार्यश्री के हाथों से श्रृंगार आरती की गयी । इसके बाद नानाविध अलौकिक व्यंजनो द्वारा भगवान को प्रसाद अर्पण किया गया ।

श्री नरनारायणदेव के सांनिध्य में प्रसादी के सभामंडप में जहाँ पर भगवान श्री स्वामिनारायण संतो को रसोई परसते तथा प.पू. आद्याचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री जिसप्रसादी की गद्दी पर बैठते उसी को सुन्दर सुवर्ण से मढाकर उत्तम गद्दी बनाकर मेहमान के रुप में आये हुए प.पू. आचार्य राकेशप्रसादजी महाराजश्री को उसी गद्दी पर विराजमान किया गया । सभामंडप को नाना विध श्रृंगारित किया गाय । रंगबिरंगी साडियो से तथा पताकाओं से सुसज्ज कर दिया गया था । सभा मंडप में शिस्तताबद्ध अनुशासित



ढंग से सभी लोग अपने अपने स्थान पर अडिग बैठे रहे। परिणाम स्वरुप एक रस सभी को दर्शन का लाभ मिल रहा था।

प्रसादी के चौक में जहाँ कईबार स्वामिनारायण भगवान सभा किये थे रंगोत्सव किये थे वहीं पर यज्ञशाला तैयार की गयी थी। जहाँ चार वेदों के निष्णांत पंडितो द्वारा मंत्रोच्चार के साथ प.पू. लालजी महाराजश्री ने यज्ञनारायण को आहुति अर्पित किया।

इसके बाद पवित्र शुद्ध श्वेत पारम्परिक, वस्त्र धारण कर सम्प्रदाय के भावि आचार्यश्री एवं दोनो देश के आचार्य पार्षदो सन्तो के साथ दिव्य सभा में पदार्पण किये।

सभा के संचालक अहमदाबाद मंदिर के विद्वान महंत स्वामी माईक्रोफोन सम्हाल रहे थे।

पू. महंत स्वामीने धर्मवंशी आचार्यकी परंपरा को समझाया। इसके बाद पू. पी.पी. स्वामी तथा भूज मंदिर के उपमंहत स्वामी धर्मनंदनदासजी तथा वडताल मंदर के को. श्री धर्मप्रियदासजीने इस शुभ अवसर का लाभ लेकर धन्यता का अनुभव किया। और अपनी भावनाओं को व्यक्त किया। प.पू .आचार्य महाराजश्री की ३५ वर्ष की गाथा का गान किया।

पश्चात् विद्वान विप्र नडीयाद ब्रह्मर्षि संस्कार धाम के संचालक श्री डाह्याभाई शास्त्रीजी तथा उनके परिचित चारोवेद के निष्णात विद्वान एवं अहमदाबाद मंदिर के प्रधान पंडित डॉ. वाचस्पति मिश्रजी तथा मंदिर के पुरोहित कमलेशभाई पुरोहितजीने प.पू. लालजी महाराजश्री को वेद मन्त्रोचार के साथ स्वस्तिवाचन किया। पश्चात वडताल देश के प.पू. आचार्य महाराजश्री राकेशप्रसादजी महाराजश्रीने श्री नरनारायणदेव गादी स्थान के पीठाधिपति की यशोगाथा बताकर प.पू. लालजी महाराजश्री की शुभेच्छा प्रकट किया।

अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने अपने ऐतिहासिक प्रवचन में ६० वर्ष की जीवनयात्रा तथा ३५ वर्ष तक गादी पर विराजमान होने की जीवन यात्रा द्वारा सभी को भाव विभोर कर दिया। प.पू. लालजी महाराजश्री को तथा समस्त सभा को शुभार्शीवाद दिया। अद्‌भुत मुस्कान के साथ आनंद की वर्षा करते हुए जिसकी प्रतीक्षा खुद काल (समय) को थी वह घड़ी आगयी।

पू. महंत स्वामी ने सभा संचालन का क्रमचालु रखा और ११-०५ बजे शुभ मुहूर्त में ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अर्थववेद के विद्वानो द्वारा ऋचाओं का गान किया गया। मधुर सुरीली आवाज में संगीत का स्वरपुरित किया गया। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री स्व स्थल से उतरकर प.पू. लालजी महाराजश्री को अपने स्थान पर बैठाकर उनके मस्तक पर तिलक चन्दन करके अति कीमती हीरा जडित सुवर्ण के हार को पहनाया। प.पू. बाल लालजी महाराजश्री को भी सुन्दर (मोतियों से जडित माला को पहनाया)। अपने शरीरसे दुपट्टा उतारकर जो मुख्य परम्परा की परिचायिका है उसे प.पू. लालजी महाराजके गले में सुशोभितकर दिया। इसीके साथ पागविधि अर्थात् लाल पगडी को अपने मस्तक से उतार करके प.पू. लालजी महाराजश्री के मस्तक पर

अलंकृत किया जिनकी आखों ने यह सुहाना अवसर का लाभ लिया उसका जीवन धन्य हो गया । बाद में बडताल के प.पू. आचार्य महाराश्रीने भी नये नियुक्त आचार्य श्री को सुवर्ण की चेईन तथा प्रसादी का हार पहनाकर पूजन किया । प.पू. निवृत्त आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. वडताल पीठाधिपति श्री राकेशप्रसादजी महाराजश्रीने एकसाथ मिलकर वर्तमान पीटाधिपति की आरती की । उस समय सभा विश्रब्ध होकर आनन्द के अश्रुकणिका बहने से रोक न सकी । इस दिव्य आरती के बाद पू. महंत स्वामीने नरनारयणदेव का तथा सप्तमाचार्य महाराजश्री के जयजय का नाद करके वातावरण को गुंजित करादिया था ।

पश्चात् प.पू. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने अपने ऐतिहासिक प्रवचन में श्री नरनारायणदेव तथा अनपे पूज्य पिताजी के शुभाशीर्वाद तथा संत हरिभक्तों के प्रेम-सहकार की अभिलाषा व्यक्त की ।

सर्व प्रथम अहमदाबाद, भुज तथा मूली के आदरणीय संतो ने पुष्पमाला पहनाकर आरती की । बाद में पू. महन्त स्वामी सन्तो के साथ पू. महाराजश्री को भगवान के प्रसादीका चरणारविंद भेंट किया । बाद में वडताल, जूनागढ गढपुर, धोलेरा देश के सन्तों ने पुष्पहार पहनाकर आरती उतारी थी । देश-देश



के आये सन्तों ने पुष्पहार पहनाकर पू. आचार्य महाराश्री का सम्मान किया । अहमदाबाद मंदिर स्किम कमेटी के सभ्यों ने तथा ह्व्ह्व भक्तोंने पुष्पहार पहनाकर प.पू. आचार्य महाराजश्री की आरती उतारकर दिव्य लाभ लिया था।

पश्चात् हजारो भक्तोंने पुष्पमाला पहनाकर चरण स्पर्शका दिव्य लाभ लिया था । निवृत्त आचार्य प.पू. बापुजीने १००८ फटाकडां फोड कर आनंद व्यक्त किया तथा भक्तों को प्रसाद में शक्कर दी गयी ।

उत्सव की सम्पूर्ण व्यवस्था का मार्गदर्शन पू. पी.पी. स्वामीने किया । भोजनालय की व्यवस्था को. ब्रह्मविहारीदासजी तथा कृष्णवल्लभदासजीने की । सभी संतो को पक्वान्न खिलाकर प्रसन्न किया गया । सभी संतो को कीमती धोती भेंट में दी गयी । हजारों भक्तों को इसी भोजन से तृप्त किया गया ।

महोत्सव की व्यवस्था में पू. महंत स्वामीकी आज्ञानुसार को. स्वा. ब्रह्मविहारीदासजी को. स्वा. सत्यप्रकाशदासजी को. स्वा. आनंदप्रसाद, महन्त गुरुप्रसाददासजी महंत गोलोकविहारी स्वामी, राजेन्द्रप्रसाद स्वामी, उत्तमप्रियादसजी, भंडारी धर्मप्रकाशदासजी, सिद्धेश्वर स्वामी, वल्लभदास तथा मंदिर के सभी छोटे-बडे संतो ने एवं कोठार के स्टाप के सभ्यजनोने खूब उत्तम सेवाकी । श्री न.ना.यु. मंडलने दर्शन व्यवस्था ट्राफिक व्यवस्था, सभा व्यवस्था, भोजन व्यवस्था तथा सुशोभन व्यवस्था सम्हालकर अपने नवनिर्वाचित आचार्य महाराजश्री के प्रति निर्दोष सेवा भावना व्यक्त की थी ।

अनंत जीवो के मोक्ष प्राप्ति का यह अमूल्य अवसर इस महोत्सव में सम्मिलित होने से ही चरितार्थ हो गया ।

महापुरुषों के मुखकी

अमृतवाणी

– गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

सर्वावतारी श्रीहरि के छठ्ठे वंशज प.पू. निवृत्त आचार्यश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने श्री नरनारायणदेव पीठस्थान पर लगातार ३५ वर्ष तक सत्संग की सेवा की उन्होंने स्वतंत्र ढंग से अपने पुत्र प.पू. श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री को सप्तमाचार्य के रुप में नियुक्त किया। नियुक्ति के समय देशके गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे । जिस में गुजरात प्रान्त के मा. मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी थे ।

ता. १५-१०-०४ को प.पू. लालजी महाराज व्रजेन्द्रप्रसादजीने अधम उद्धारण अविनाशी तारा विरुदनी बलिहारी रे, यह कीर्तन गाकर समस्त सभाजनों को आनन्द विभोर कर दिया।

वडताल पीठाधिपति प.पू.ध.धु. १००८ श्री राकेशप्रसादजी महाराजश्रीने कहा कि श्रीजी महाराजने वचनामृत में कहा है कि सत्संग की बृद्धि हमारे हाथ में है। हम तो महाराज के दास हैं। देश विदेश में सत्संग की वृद्धि हो रही है। पहले नदं संतो ने बाद में परम्परा के संतोने छोटे-बड़े मन्दिरो का निर्माण करवाया । इन कार्यो में सत्संगी सहभागी हैं । महाराज ने धर्मवंश को आचार्यपद पर स्थापन किया । जिससे सम्प्रदाय को नये नये आचार्य मिलते रहते हैं । इस में तो तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज की क्या वात करें आपने



रातदिन एक करके देश विदेश में संप्रदाय को गौरवान्वित किया है। हम सभी इसके काक्षी हैं । आचार्य पद की पराकाष्ठा पर जिसकी यशोगाथा थी उसी समय आपने निवृत्तिले लिया। सही तो इसी में मजा है । लालजी महाराजश्री में जो शिक्षा जो समझ आपने दिया है वह सभी के लिये उदाहार्य है । इस माने में अहमदाबाद गादी स्थान भाग्यशाली है कि जिसे युवान, उत्साही, तेजस्वी आचार्यश्री मिल रहे हैं। आप लालजी महाराजश्री के रुप में सत्संग की सेवा करते आये हैं। नरनारायणदेव, लक्ष्मीनारायण देव श्री हरिकृष्ण महाराज आपको खूब शक्ति दें जिससे आप उत्तरोत्तर यशस्वी बनें। विगत वर्ष जब हम यहाँ आये थे तब यह निश्चित किया गया था कि नरनारायणदेव के पाटोत्सव में हमें यहाँ तथा लक्ष्मीनारायण देव के पाटोत्सव में यहाँ के आचार्यश्री वहाँ पधारेंगे । अर्थात् वर्ष में दो बार एकत्रित होने का निश्चय किया गया । श्रीजी महाराज की कृपा से दोनो महाराज पांचवी बार मिल रहे है। सभी के ऊपर श्रीजी महाराज की प्रसन्नता बनी रहे । हमारे नवनियुक्त वर्तमान आचार्य महाराजश्री के उपर हमारे कुल देवता कष्टभंजन देव की कृपा नित्य बनी रहे । गोपालानंद स्वामी को श्रीजी महाराजने दोनो देश के आचार्यो का उत्तर दायित्व सुपुर्द किया था । मुक्तानंद स्वामी जो सत्संग की माँ है तथा नंद संत माहाराजके साथ नित्य प्रेरणादायी बनें । इस प्रसंग पर नव निर्मित आचार्य श्री कोशळेन्द्रप्रसादजी महाराज को निवेदन करते हैं कि लक्ष्मीनारायणदेव के पाटोत्सव में अवश्य पधारें । बहुत आनंद होगा । श्रीहरि आपको खूब यशस्वी बनायें ऐसी प्रार्थना करके विराम लेता हूँ ।

प.पू.ध.धु. निवृत आचार्यश्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने बताया कि इस अवशर पर मुझे एक बात याँद आयी कि जब मैं २२ वर्ष का था तब बापूजीने आग्रहपूर्वक इस पद पर पदारुढ करना चाहते थे । जीवन में उनकी सभी आज्ञा का पालन किया लेकिन एक आज्ञा का बालन नहीं किया वह यह कि अपनी उपस्थिति में वे गादी मुझे देना चाहते थे लेकिन मेरी इच्छा थी कि वे गादी पर आरुढ रहे उन्होंने कहा कि यदि हंसते हंसते गादी नही लोगे तो आंसूं बहाते लेना पडेगा । परिणाम वैसा ही रहा । इस लिए वह पश्चाताप पुनः न करना पडे जिसके लिये यह गादी लालजी महाराजश्री को देने का निर्णय किया। श्रीजी महाराजने जो दिन मेरे लिए निश्चित किया था वही दिन हम लालजी महाराजश्री के लिए निश्चित किये हैं । यह पद किसी व्यक्ति का नहीं है बल्कि सम्प्रदाय का सर्वोच्च पद हैं गरिमा तथा महिमा के लिए है । मैं जब इस पद पर आया तब वैष्णवाचार्य श्री व्रजरायजी महाराजने गादी पर प्रतिष्ठित किया और पगड़ी रखकर सम्प्रदाय की धर्मधुरा का उत्तराधिकारी बनाया । बाद में तो निवास स्थान पर भी आते लेकिन सभा में संमान के साथ सम्बोधित करते । एक बार घर पर आये और आपने कहा था कि तुम यहाँ आओं मैं तुम्हे एक बात बताता हूं। तूं जितना अपने इष्टदेवमें श्रद्धा रखेगा उतना ही उत्तरोत्तर वृद्धि करेगा। मैंने यही बात गुरुमंत्र के रुप में स्वीकार किया । यही शब्द लालजी महाराजश्री को हम कहते हैं । गादी अभिषेक के समय बांई तरफ हरिभक्त तथा दांई तरफ संत एवं सन्मुख नरनारायणदेव हैं मुझे विश्वास है कि ये सभी लोग इनकी सहायता करते रहेंगे । आप सभी लोग इन्हे आशीर्वाद दें कि ये सत्संग में एक अमिट छाप छोड सकें। हम कभी किसी को कटुबचन बोले हों तो उसे याद नही करना भूल जाना। इस शुभ प्रसंग पर सभी संत हरिभक्तं को खूब धन्यवाद विशेष तो देश-



विदेश से आये हुए २००-३०० जितने हरिभक्त जिन्होंने थोड़े समय में यहाँ उपस्थित होकर सभा को सुशोभित किया उन्हे खूब-खूब धन्यवाद ।

निवृत्तिकाल में म्युजियम का कार्य करना है । आप सभी जानते हैं कि म्युझियम में श्रीजी महाराज के प्रसादी की वस्तुये रखरखाव केलिये रखनी है जो भक्तजन परम्परा से प्रसादी की वस्तु रखे हों और वे देना चाहते हों तो उसे हम सहर्ष स्वीकार करेंगे, जो अनुदान देना चाहतें हों उसे भी स्वीकार करेंगे, जो नहीं भी देना चाहें वे धन्यवाद देंगे तो उसे भी हम स्वीकार करेंगे आप सभी का प्रेम जो प्राप्त हुआ उसके लिए सभी को धन्यवाद ।

प.पू.ध.धु. आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ने कहा कि श्री नरनारायणदेव भगवान की प्रसन्नता हरदम बनी रहे यही हमारा लक्ष्य है । महाराज की उपासना, पक्ष, निश्चय, निष्ठा इत्यादि की जो बात कही गयी है वह दृढता से हम पालन करेंगे । हमें सत्संग का कार्य करने की शक्ति रहे सभी लोग ऐसी प्रार्थना करना । यावत् जीवन सत्संग के लिए जीवन यापना करना है । सभी को भले ही खराब लगेगा लेकिन जो स्वामिनारायण तथा नरनारायणदेव को अच्छा लगेगा वहीं हमें करना है । इसमें किसीप्रकार की छूट-छाट नहीं रहेगी जब यह पद मिला ही है तो इस पदकी गरिमा का पालन करेंगे । सम्प्रदाय का उत्तम कार्य हो इसके लिए भगवान नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना ।

ता. २३-१०-०४ को सरदार पटेल स्टेडियम मे नवनियुक्त आचार्य के सत्कार समारंभ - के समय प.पू. लालजी महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजने घनश्याम महाराजकी जय बोलाकर एक कहानी सुनाया - एक बार महाराज एक गाँव में जा रहे थे । साथ में सुराखाचर थे रास्ते में एक ढोंगी बाबा आंख बन्द करके वैठा था। मौनी मुद्रा थी । सुराखाचर को मजाक करने की इच्छा हुई । महाराज को कहा कि हे महाराज ! इस बाबा को हम बोलावे । पश्चात् एक हाथ में धूल दूसरे हाथ में पैसा लिया और

कहा कि हमें आपको कुछ भेंट देना है। परंतु आप को जेब तो नहीं है इसलिए आप मुंख खोलिये मुंह में डाल दूं। लालच में पड़कर बाबा ने मुंह खोला तो सुराखाचरने मुंहमें धूल को डाल दिया। बाबा नाराज होकर बोला ये स्वामिनारायण वाले सभी ऐसे ही होते हैं। पहले तो ऐसा धन का लोभी बाबा था बाद में अपनी पूजा अज्ञानियों से कराने लगा।

प.पू. निवृत्त आचार्य श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ने कहा - आज का यह प्रसंग शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता है। अनुभव करने लायक यह प्रसंग है। एक दिव्य अनुभूति हो रही है। जिसकी नियुक्ति करनी होती है, वह अपने अनुकूल का हो तो ही उसकी नियुक्ति होती है। इस न्याय के अनुसार इस पद पर श्री स्वामिनारायण भगवान ने अपनीपसन्दगी के अनुसार ही नियुक्ति किया है। इस गादी पर वही आता है जो उनके अनुकूल हो। अपनी उपस्थिति में आचार्यपद पर मैंने जो नियुक्ति किया है वह कोई नया कार्य नहीं है। महाराज ने भी अपनी उपस्थिति में दोनों आचार्यों की नियुक्ति की थी। इस पद की गरिमा जितनी भी समझीजाय वह कम ही होगी।

सुवासिनी भाभी ने स्नान कराते समय चरण में सोलह चिह्नों को देखकर कहा कि घनश्याम तुम किस देश के राजा बनोगें। तो महाराजने कहा कि हम जब राजा बनेंगे तो वह राज्य आपको दे देंगे। वही धर्म का राज्य महाराजने हमें दिया है। मूल सम्प्रदाय कीबात हम करें तो यहाँ व्यापारीकरण की बात है ही नहीं। सम्पूर्ण विश्व में जहाँ भी आश्रितजन हैं वे महाराज की आज्ञा में रहकर एक अलग ही छाप उपस्थित किये हैं। उसी को सुरक्षित रखने के लिए रातदिन दौडते रहना है। आप सभी को स्मरण होगा कि कल ही विद्यमान आचार्य महाराजश्री केन्या जानेवाले हैं। २०० वर्ष के थोड़े समय में सम्प्रदाय कितनी प्रगति किया है। प्रगति ही नहीं बल्कि



अद्‌भुत मानव सेवा की है। श्रीजी महाराज का यही उद्देश्य था। धर्म के माध्यम से समाज की जितनी सेवा हो सकती है उतनी की है। महाराजभी दुष्काल में यज्ञ बन्द रखते और दुष्काल मे यज्ञ निमित्त धन को दुष्काल पीडितो को दे देते थे। सभी को स्मरण है कि अपने देश तथा चीन के युद्ध से लेकर अतिवृष्टि, अनावृष्टि, धरतीकंप वगैरह की आपत्तियों में अपने संत हरिभक्त गाँव-गाँव में घूमकर लोंगो की आवश्यकता को पूर्ण किया। सभी के आंशू पोछें है। मूल सम्प्रदाय में स्कूल बांधकर दिया, समाज कल्याण की प्रवृत्तियों को ध्यान में रखा गया और वैसा ही किया गया जो शिक्षापत्री में मनुष्यमात्र के कल्याण की चर्चा की गयी है। अहमदाबाद की गादी पर जो भी आचार्य आये हैं वे महाराज की आज्ञा के अनुसार ही सन्तों का संमान किया है। नये आचार्य की नियुक्ति महाराज की प्रेरणा से हुई है। आप सभी महाराज को प्रार्थना करना की इस पद पर विराजमान आचार्य को द्विगुणित शक्ति दें। जिससे धर्म पालन करते हुए सत्संग समाज को धर्म पालन करा सकें। आप सभी लोग महाराजश्री की आज्ञा में जीवन बिताना। अन्तःकरण के आशीर्वाद के साथ विराम लेता हूँ।

गुजरात राज्य के मंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी के प्रवचन से - यहाँ आकर आप सभी के बीच मैं गौरव का अनुभव कर रहा हूँ। आप सभी के बीच में मैं भी सत्संगी हूँ। गाँव में मूल गादी का पुराना मंदिर है। आज से ५० वर्ष पूर्व "शुद्ध घी की दुकान" ऐसा बोर्ड नहीं था। लेकिन अब शुद्ध घी की दुकान का बोर्ड लगाना पडता है। इसी आशय से महाराजश्री मूल सम्प्रदाय कानाम उल्लेख करके बोले हैं। गुजरात स्वामिनारायण सम्प्रदाय का ऋणी है। इस संप्रदाय में भक्ति की महिमा है। इसकी अपेक्षा सेवा की महिमा अधिक है। स्वामिनारायण भगवान के जीवन का एक प्रसंग लें तो प्रेरणादायी वह प्रसंग जो मनुष्यों के बीच में रहकर सभी को व्यसन से मुक्त किया। मनुष्यों की आवश्यकता

को ध्यान में रखकर सेवा की है । दुःख दूर किये हैं । इस संप्रदाय में सतत आधुनिकता का दर्शन होता है । अभ्यास करने में आप सभी से हम कम होगे, लेकिन मेरे ध्यान के अनुसार जो अनुभव किया है इस सम्प्रदाय में आज तक सन्त या हरिभक्तों में कही भी चमत्कारो की बात नहीं की गयी है । या आंखबन्द करके किसी को आकृष्ट नहीं किया गया है ।

सेवा का प्रत्यक्ष दर्शन आज सारे समाज को हो रहा है । धरतीकंप के समय बड़ी उम्र के सन्त भी लोक सेवा मे जो कष्ट उठाकर सेवा का कार्य किये । यहाँ तो गीता के कर्म योग का साकार रुप देखने में मिलता है । दोसौ वर्ष के इतिहास में सातत्य का दर्शन यहाँ देखने को मिलता है । २० से ३० वर्ष तक लगातार किसी संस्था को चलाना कितना कठिन है । जो सामाजिक संस्था को लेकर चल रहे हैं उन्हे ही खबर है । और यहाँ इस सम्प्रदाय में तो लगातार वर्षो से एकधारा ही चली आ रही है । पहले विदेश में कोई परिचित व्यक्ति मिलता तो नमस्ते कहकर शिष्टाचार करता, लेकिन आज तो विदेश का व्यक्ति भी जयश्री स्वामिनारायण कहकर शिष्टाचार करता है ।

सामान्य रीति से भगवान की सेवा करते हैं । परंतु संतो का योग क्षेम भगवान भी करते हैं । पू. महाराजश्री तथा सन्तलोग सत्संग समाज के रखरखाव का उत्तरदायित्व रखते हैं । किसी भी सत्संगी के यहाँ कोई शुभ प्रसंग हो या तकलीफ हो तो वहाँ संप्रदाय का एक प्रतिनिधि पहुंच ही जाता है । सत्संगी के घरबालक का मार्क अच्छा आवे तो भी "भगवान स्वामिनारायण की कृपा से हुआ" यह एक आदर्श है । गुजरात को विश्वास है कि यह संप्रदाय खूब फूले-फलेगा तथा समाजोपयोगी कार्य करेगा । मुझे अवशर मिला इसके लिए धन्यवाद जयश्री स्वामिनारायण ।

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ने कहा कि - सर्व प्रथण तो जो व्यक्ति दूर-दूर से आये हैं और इस तरह जो दूर-दूर से आकर इस प्रसंग पर शुभेच्छा तथा सुभकामना प्रदान किये इस के लिए बहुत धन्यवाद । यह पगडी ऐसी कोई पगड़ी नहीं है कि जिससे लोगों पर अनुशासन किया जा सके परंतु प्रेम से महाराजने दी इस पगडी से सत्संग की सेवा हो सकती है । इस संप्रदाय में दूसरे चमत्कार तो ठीक है । परंतु महाराजने एक बडा चमत्कार यह किया है कि यहाँ इन्सान सच्चे अर्थ में मनुष्य बनता है । मार्ग भूले हुए को सच्ची दिशा मिलती है । नहीं तो सामान्य रुप से मनुष्य मनुष्य के रुप में जन्म लेता है । परंतु मनुष्य के रुप में मरता नहीं है । इस पद से हमारी जवाबदारी बहुत ही बढ जाती है । क्योंकि सत्संग का प्रेम तथा संप्रदाय का वजन इस पगडी में है । छोटा था तब से पू. बापूजीने हमको कैसे बैढना, उठना, चलना, किसके साथ कैसे बात करना, कहाँ प्रणाम करना, कहाँ न करना यह सब शिखाया । शिक्षापत्री के २१२ श्लोक में वेद, उपनिषद तथा जगत के तमाम शास्त्रो का निचोड़ करके महाराजने जो कहा है वह अमृत समान है । उसको निभाने से महाराज आपको बहुत सुखी करेंगे । महासुख को प्राप्त करेगे । पू. बापुजी पिछले चार वर्ष से हमको इस पद के लिए कहते थे परंतु हम लगातार चार वर्ष आनाकानी करतें थे । मैं कहता कि 'पदके बिना रहने दीजिए हमको ! मैं सत्संग के लिए प्रवृत्ति तो करता ही हूँ । आखिर पू. बापूजीने अपने समग्र जीवन का निचोड लेकर तमाम क्षण के अनुभव द्वारा यह पगड़ी हमको सोंप दी । शहर तथा गाँव के छोटे बड़े हरिभक्तो की प्रेम भावना कायम रही है । हम आगे बैठे लोगों को दिखाई देते ही है परंतु पीछे बैठे लोगो को भी उतने ही दिखाई दैते हैं । पीछे रहकर जो सत्संग की सेवा करते है । वैसे हरिभक्तों के जप के प्रताप से यह सत्संग चलता है । हमारा एक-एक श्वास, खून की एक एक बूंद स्वामिनारायण भगवान के लिए तथा इस सत्संग के लिए है । इसीलिए ही इस स्थान पर जन्म हुआ है । संतो-हरिभक्तों को प्रसन्न करना है । गणपतिने पिता की प्रदक्षिणा करके शिवजी को प्रसन्न किया था । कार्तिक स्वामी दूर से घूमते ही रह गए । हमको ऐसा बल मिले इसलिए संतो, हरिभक्तो को प्रार्थना केसाथ विराम लेता हूँ ।

सवाया बनकर रहना हरिसुत

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला

"सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण संस्थापित अपने उद्धव संप्रदाय के श्री स्वामिनारायण अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान के आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी से प्रारंभ करके आज तक यह अविच्छिन्न परंपरा चली आ रही है। उसमें श्रीहरि के छट्ठे वंशज परम पूज्य आचार्यश्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने अपनी षष्ठी पूर्ति महोत्सव पर्यन्त तक गादी पर विराजमान रहकर पैंतीस वर्ष तक देश-विदेश में श्रीहरि के संदेश को दुनिया के कोने-कोने तक गुंजित करते रहें। ऐसे अपने समग्र सत्संग के हृदय सम्राट। स्वयं पूज्यपाद, आचार्य महाराजश्री ने स्वतंत्र रीति से स्वयं निर्णय लेकर अपने ही औरस पुत्र कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री को विक्रम संवत २०६० को आसो सुद-२ द्वितीया शुक्रवार ता. १५-१०-२००४ के शुभ मंगल दिन पर पीठाधिपति स्थान पर विराजमान करने का निर्णय लिया है। उसमें समग्र सत्संग को सहभागी होने का मंगल अवसर प्राप्त हुआ है तो अवश्य सभी भक्तों को हाजिर रहना है।"

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर के महंत द्वारा संप्रदाय के सत्संगियों के लिए यह संदेश मात्र दो दिन पहले ही मंदिर पर रखा गया। समग्र संप्रदाय के लिए यह एक ऐतिहासिक अवसर था। एक सुवर्ण तेजोमय तारीख का निर्माण हुआ था। आज तक प्रत्येक पीठाधिपति उनके पूर्वगामी आचार्यश्री के अनुपस्थिति में ही गादीनशीन बने थे।

श्री नरनारायणदेव देशके सप्तम आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ही ऐसे प्रथम आचार्यश्री बने हैं जिन्होने पूर्वगामी आचार्य एवम् अपने ही पिताश्री ऐसे श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने स्वयं पगडी धारण करवाकर पीठाधिपति के रुपमें अपने वरद् हस्त से पदारोहण किया है।

शारदीय नवरात्रि का द्वितीय दिन अर्थात् आसो सुद दूइज का अति मंगलमय यह दिन था। श्रीजी महाराजने जिस दिन श्री



नरनारायणदेव देश की गादी के छठ्ठे आचार्यश्री के रुप में श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की नियुक्ति के लिए जो दिन तय किया था यह वही शुभ दिन था ।

ऐसे तो संप्रदाय के इतिहास में यह गौरवपूर्ण और मंगलमय अवसर पहला ही था, फिर भी इसकी विधिसर पत्रिका कही भी छपी या दी नहीं गई थी । पू. तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने स्वतंत्र ही स्वयं निवृत्ति की घोषणा कर दी और अपने ही पुत्र श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी को गादी पर आसो सुद द्वितीया के दिन पदारोहण करने का निर्णय किया था । समय काफी कम था । मात्र कर्णोपकर्ण से ही इस अति शुभ प्रसंग की बात प्रसरी । अरे ! अमेरिका, इंग्लेन्ड, ओस्ट्रेलीया, आफ्रिका आदि विदेशो में इस मंगल अवसर की जैसे ही जानकारी हुई निष्ठावान हरिभक्त मात्र दो या तीन दिन के समय में ही उडकर यहाँ आने लगे ।

अहमदाबाद श्री नरनारायण देव देश के गाँव गाँव में इस मंगल अवसर के समाचार गूंजने लगा और इस के फलस्वरुप ता. १५-१०-२००४ की प्रारंभिक प्रभात सें ही मंदिर का प्रांगण हरिभक्तो के आगमन से छलकने लगा ।

सुबह के ६-३० बजे प.पू. तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पू. कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा बाल लालजी श्री वजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का आगमन हुआ । ६-३० से ७-०० दरमियान श्री नरनारायणदेव के केसर स्नान की विधि थी । पितांबर से शोभित धर्मकुल परिवार के तीनो वंशज दादा, पिता और पौत्र के ऐसे त्रिवेणी दर्शन का लाभ शायद फिर कभी मिलेगा नहीं ? सुंदर तरीके से उन्होंने श्री नरनारायणदेव को केसर स्नान विधि संपन्न किया । और उनकी आरती उतारी ।

इस तरफ मंदिर में तो देश-देश के संतगण तथा सांख्ययोगी बाईयाँ, की हरिभक्तों की भीड़ बढ़ने लगी थी । जिसे जहाँ जगह मिली वहीं ठहरने लगे । सभी के हृदय में एक ही उत्साह था - "पगड़ी धारण विधि" के अलौकिक दर्शन हेतु समग्र मंदिर और प्रसादी के सभामंडप को ध्वज पताकाओं से विधिसर सुशोभित किया गया था । श्री नरनारायणदेव के सन्मुख पदारोहण विधि का स्टेज बनाया गया था ।

सुबह ८-०० बजे पू. लालजी महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री श्रीहरियाग यज्ञ-मंडप में पधारे । श्री वाचस्पति मिश्राजी सहित अन्य विद्वान भूदेवोने पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हस्त से श्रीहरियाग यज्ञ को प्रारंभ करवाया था । एक घंटे तक प्रज्वलित अग्नि तथा गुंजित वेद ध्वनि और यज्ञ की धर्ममालाओं से वातावरण अति पवित्र बन गया था ।

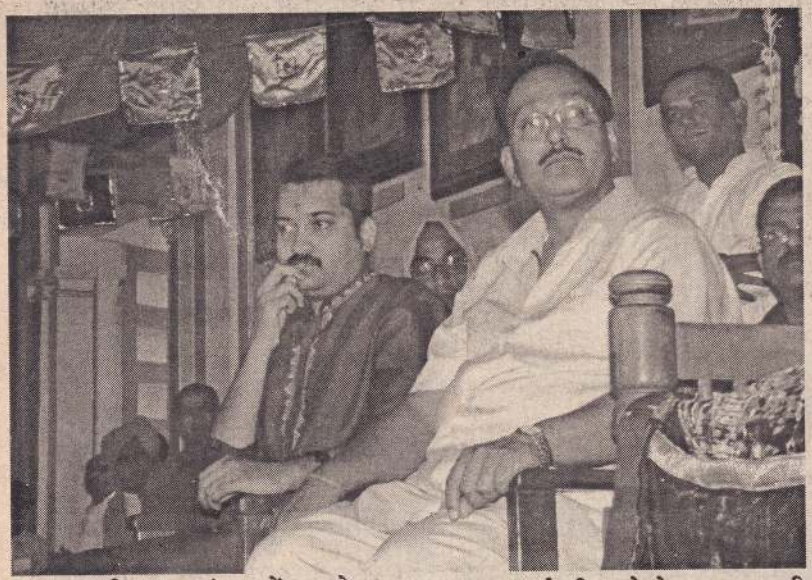
इस दौरान यहाँ चारोतरफ दृष्टि करने पर मंदिर में मात्र हरिभक्तों के अलांवा कुछ भी नजर ही नहीं आ रहा था । उतनी संख्या में हरिभक्तों का समुदाय एकत्रित हुआ था । इतने पर भी कहीं भी अव्यवस्था या अशांति देखने में नही मिली । युवान सत्संगी स्वयं सेवक तो सेवा में ही थे - परंतु आज सभी हरिभक्त एक शिस्तबद्ध सत्संगी बनकर 'पदारोहण विधि' को अपने अंतर में 'क्लीक' करने के लिए चक्षुओं का केमेरा लेकर खड़े थे ।

इस अलौकिक तथा ऐतिहासिक सभा का संचालन महन्त स्वा. पू. निर्गुणदासजी शास्त्रीने किया ।

उत्सव में आये सभी भक्तजन को स्थान का अभाव यदि यहाँ रहा हो तो अक्षरधाम में भगवान के सन्मुख ही रहना है । ऐसा सभा संचालन के प्रारम्भ में संबोधित किया ।

प्रातः ९ बजे वडताल श्री लक्ष्मीनारायण देव के पीठाधिपति प.पू. राकेशप्रसादजी महाराजश्री, श्री नरनारायणदेव की आरती करने हेतु पधारे मंदिर का प्रांगण खचोखच भरा हुआ था । आरती की दिव्य ध्वनि से वातावरण बड़ा सुहाना हो गया था ।

प्रातः ९ बजे दोनो आचार्यश्री, लालजी महाराज एवं बाल लालजी



महाराजश्री सभा मंडप में पधारे ।

सभापति पू. महंत स्वामीने सभा संचालन करते हुए बताया कि शास्त्र प्रमाणानुसार प्रातः ६-३० बजे से ही इस सुवर्ण अवशर का प्रारंभ कर दिया गया है । जिसकी सुगंध आप सभी के हृदय में व्याप्त हो रही है सन्त समुदाय तथा मेहमानो के समुदाय एवं श्रद्धाबान भक्तजनों का समुदाय का जैसे सागर उमड़ पड़ा हो । यहाँ आये सभी के जन्म जन्मान्तर का पुण्य उदित हो गया है । श्रीहरिने हमें दिव्य परंपरा दी है । संसार में अनेकप्रणालिकाओ से युक्त अनेक संप्रदाय हैं । हिन्दु धर्म में अनेक परंपराये है, आचार्यो की भी परंपरा अनेक है । परंतु इन सभी परम्पराओं का शिरमौर्य अपना स्वामिनारायण संप्रदाय सबसे भिन्न एवं अलौकिक है । जिस परम्परा के प्रवर्तक स्वयंभगवान स्वामिनारायण थे ।

आचार्यश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री समग्र सम्प्रदाय के त्यागी एवं गृहस्थ सभी के गुरु स्थान पर है । इस संसार में जीव मात्र को मोक्ष प्राप्त करने की इच्छा समान है । किसी को बन्धन नहीं चाहिए सभी को मोक्ष चाहिए । मोक्ष प्राप्ति का जितना सरल उपाय भगवान ने बताया है वह यहीं देखने में मिलता है ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री साठ वर्ष तक आयु को विताकर गादी पर प्रतिष्ठित रहे । आपका षष्टि पूर्ति महोत्सव अभी हाल में ही मनाया गया । आज से पैंतिस वर्ष पूर्व इसी सभा मंडपमें इसी स्थान पर इसी समय में पीठाधिपति हुए थे । पैंतीस वर्ष दरम्यान आपश्रीने सम्प्रदाय तथा सत्संग को क्या नहीं दिया । आपकी उदारता, त्याग, करुणा, दयालुता इत्यादि का कोई उदाहरण नहीं है । कर्णोपकर्ण से इस गादी अभिषेक का समाचार सुनते ही देश विदेश से सारा सत्संग समाज उमड़ पडा । सत्संगीको प्रसन्न करना ही आपका ध्येय रहा । कभी भी भेदभाव के बिना तथा कभी किसी को बिना, ना किये पदार्पण करते रहे । ना तो इनेक जीवन में था ही नही ।

बत्तीस वर्ष तक जिसे सांगोपांग तैयार किये जिसमें अपने संस्कार भरे जिसका सत्संग को लाभ मिले ऐसा मानसिक संकल्प करके प.पू. लालजी महाराज को पदारुढ करने का निश्चय स्वयं किये । विद्यमान आचार्यश्री की उपस्थिति में भावि आचार्यश्री पदारोहण करके वर्तमान आचार्यश्री का स्थान प्राप्त किया यह एक सर्वप्रथम ऐतिहासिक प्रसंग है । एक पिता तथा आचार्य स्वयं अपने हाथों से संप्रदाय की धर्मधुरा अपने पुत्र को दे दिये ।

देश विदेश से आये संत अग्रणी अहमदाबाद के भूतपूर्व पू. महंत शा. पी.पी.स्वामीने अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए बताया कि "क्रिकेट की भाषा में कहें तो एक भी अपील के बिना लगातार पैंतीस वर्ष तक इस सम्प्रदाय की बागडोर सम्हाले रहे । आज स्वयं अपना दाव डिकलेर किये हैं । आप त्यागियों के भी गुरु है । यह उदाहरण कहीं भी देखने सुनने से नहीं मिलेगा । आप स्वयं निर्णय करके अपनी गादी दिये है ।

पू. रामानंद स्वामीने जैसे इस सम्प्रदाय की धुरा श्रीहरि को सौंपी थी ठीक वही स्थिति यहाँ आज है । जिस परम्पराको श्रीहरिने प्रारम्भ किया था। वही साक्षात् दृष्ट हो रही है । इस सम्प्रदाय में बहुत इतिहास बने लिखे गये परंतु पू. महाराजश्रीने अपने जीवन को गाईड लाईन बनाया है ।

"आचरण यही उपदेश" ऐसा अपने जीवन को बनाया । आज जो नइ परम्परा को हम देख रहे है वह कोई साधारण नहीं अपितु युवापीढी के प्राण समान श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पीछे के एक दशक से उद्यमशील है । हम सभी का भावि भी अति उज्वल है ।

पदारोहण तथा पगडी धारण विधि भी नजदीक आती जा रही थी । चारो वेद के निष्णात पंडितो द्वारा ऋचाओं का पाठ करें कि उससे पहले बाल लालजी महाराजश्री ने स्वयं माइक लेकर ब्रह्मानंद स्वामी की गीतिको अपने सुमधुर कंठ से गाया ।

अधम उद्धारण अविनाशी तारा विरुदनी बलिहारी रे.....

इसके बाद भूदेवों ने स्वस्तिवाचन प्रारम्भ किया और मंगल वाक्य में "सूचितं सफलं यशो विजयंम्" इस प्रकार का आशीर्वाद दिया ।

यह विधि पूर्ण होने के बाद लक्ष्मीनारायण देव पीठाधिपति पू. राकेशप्रसादजी महाराजश्रीने अपने आशीर्वाद में बताया की -

"वचनामृत में श्रीहरि कहते हैं कि इस सत्संग की वृद्धि तो श्री नरनारायणदेव के प्रताप से होती है हम तो उनके दास है । विद्यमान आचार्यश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने खूब पुरुषार्थ करके अपने पैंतीस वर्ष के बीच में देश विदेश में सत्संग को फैलाया है । आपने स्वयं निवृत्ति लेकर धर्मधुरा को सम्पूर्ण कुशलता से युक्त अपने पुत्रको सौंपने का निर्णय किया है । जीवन में लोग "कहाँ तक" ऐसा कहें उससे पहले "क्यों ऐसा ?" इस प्रकार का आश्चर्य व्यक्त करें इसी में आनंद है ।

उन्हों ने योग्य संस्कार और शिक्षण द्वारा पू. लालजी महाराजश्री का सुंदर घडतर किया है । अहमदाबाद देश की यह भाग्य है कि ऐसे युवान आचार्यश्री के वर्षो का अनुभव प्राप्त हुआ है । जो सत्संग को सदैव उन्नति के शिखर तक ले जाएंगे । "

महानुभावो और मेहमानो में पू. महाराजश्री के जीजाजी रतन बापु, पू. बाल लालजी के नानाजी पू. तिवारीजी और पू. लालजी महाराजश्री के जीजाजी पू. प्रफुल्लकुमार मुख्य थे । कच्छ भुज देश के उपमहंत स्वामी तथा वडताल देशके प्रतिनिधि श्री बापू स्वामीने भी प्रसंगोचित सुंदर भावनायें व्यक्त की थी ।

इसके बाद अति महत्वकी क्षण आई । संप्रदाय के प्रमुख के रुप में प.पू. तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वचन प्राप्त करने की यह शायद अंतिम क्षण था । उन्होने ऐतिहासिक आशीर्वचन प्रदान करते हुए कहा कि :

"जो मंगल अवसर तथा जो मंगल घड़ी की मैं बरसो से प्रतीक्षा कर रहा था वह आ पहुंची है । This is my Finest hour..... क्या कहे क्या न कहें कुछ समझ में नहीं आता । हम एक ही आज्ञा अपने बाबुजी की नहीं मानें । पूज्य बापुजी को अपनी उपस्थिति में हमे गादी देने की तीव्र इच्छा थी उस समय हम २२ वर्ष के युवान थे । "अभी हम हँसते हँसते आपको गादी पर बैंठा रहे है । परंतु हमारी आज्ञा नहीं मानेंगे तो फिर रोते रोते गादी पर बैठना पड़ेगा । उनके ये शब्द तो हमारे लिए यथार्थ साबित हुए है ।

परंतु यह अफसोस हमें न हो इसीलिए हमने यह निर्णय किया है । श्रीजी महाराजने हमारे लिए जो दिन पसंद किया वही आश्विन शुक्ल द्वितीया का दिन मैने निर्णीत किया है ।

आचार्यपद कोई व्यक्ति नहीं है । स्वयं श्रीहरि द्वारा अपने ही स्थान पर स्थापित किया हुआ सर्वोच्च पद है । इस पद की गरिमा जितनी समझी जाये उतनी कम है । हमारे पदारोहण विधि के समय पर वैष्णावाचार्य आए थे । वे जब हम अकेले होतें तो 'तु' कहकर संबोधित करते थे । उस

समय उन्होंने कहा था, "यहाँ आओ, तुझे एक बात बताता हूँ। अगर तुझे सफल आचार्य बनना है तो जितनी श्रद्धा तूं अपने इष्टदेव में रखेगा, उतना ही तेरा तेज बढ़ता जाएगा।" बस तब से आज तक इस सलाह को अपना गुरुमंत्र बनाया है।

हमारे दायें हाथ की तरफ बैठे हुए संतगण, बाये हाथ की तरफ बैठे सभी हरिभक्तगण तथा सन्मुख विराजमान श्री नरनारायणदेव इन सभी मैं संपूर्ण श्रद्धा और विश्वास है। पू. लालजी महाराज को भी यही कहना है कि ऐसी ही श्रद्धा और विश्वास रखकर कार्य करना। सभी संत हरिभक्तों के साथ मिलकर उनको आशीर्वाद दीजिए। ३५ वर्ष दरम्यान कभी भी किसी को भी कड़वा वचन नहीं कहा और शायद कहा हो तो देव या संस्था का अहित होता हो तो ही कहना पडा है। परंतु वह भूल जाइये। इस प्रसंग पर विशाल संख्या में संत और हरिभक्त आए हैं। विदेश से भी मात्र दो तीन दिन की छोटी सी नोटिस से ही इतनी संख्या में युवान हरिभक्त आए है। उन सभी को हमारा बहुत धन्यवाद।

जैसा प्रेम और विश्वास हमारे पैंतीस वर्ष दरमियान आप सभीने दिया है उससे भी अधिक सहकार लालजी महाराज को दिजीएगा।

दिव्य संग्रहस्थान का हमारा संकल्प साकार हो शके इस कार्य के लिए हम सभी प्रवृत्तिशील बनेंगे। संतो को तथा गृहस्थो को अनुरोध है कि प्रेम से श्रीजी महाराजकी प्रसादी की चींजे, सामग्री प्रदान करेंगे तो अवश्य ही स्वीकार करेंगे।

पैंतीस वर्ष या साठ वर्ष तक उन्होंने हमें क्या दिया है क्या नहीं दिया इसका लेखा जोखा हम क्या कर सकते हैं? दुनिया की किसी भी व्यक्तिने उनके मुखारविंद पर कभी गुस्से या शिकायत के भाव देखे नहीं है। सदैव प्रफुल्लित रहता है उनका चेहरा। पाँच वर्ष का बालक हो या ७५ वर्ष का वृद्ध सभी को समान आधार दिया है। एक मात्र उनकी अलौकिक छाप से ही आकर्षित हो कर संप्रदाय में नए आए हुए असंख्य मुमुक्षु जीवों को उन्होंने जकड़ कर रखा है और श्रीहरि की सच्ची पहचान भी करवाई है। इस तरह ब्रह्मनिष्ठ गुरुपद की गरिमा सांगोपांग निभाए रखी है।

और अब आती है संप्रदाय के इतिहास की अत्यंत अलभ्य पल।

"११-०५ बजे का वह समय था। विद्यमान आचार्य १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी अपने स्थान से खड़े होते हैं। विद्यमान लालजी महाराज १०८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराज को अपने स्थान की तरफ ले जाते है। उनको अपने गादी के स्थान पर विराजमान करतें हैं। उनके मस्तक पर कुमकुम तिलक करतें हैं। इसके बाद उनके गले में परंपरा का प्रसादी का हार पहनाते हैं। तत्पश्चात अपने अंग पर से परंपरा का उत्तरीय उतारकर कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराज को पहनातें है। और अंतिम चरण में अपनी लाल पागड़ी मस्तक से उतारकर पू. कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराज के मस्तक पर स्वयं धारण करवातें हैं। इसके बाद प्यारे पुत्र पू. कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराज के मुख पर आशीर्वाद रुप हाथ लगाकर भावपूर्वक स्नेह वर्षाते हैं। इस तरह १०८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराज अब विधिपूर्वक संप्रदाय के धर्मधुरंधर बनकर १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री बने है। बाल लालजी को भी प.पू. महाराजश्री गले में हार धारण करवाते हैं। अब श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराज १०८ श्री लालजी महाराज का बिरुद धारण करतें हैं।

इस तरह इस समग्र ऐतिहासिक क्षण के साक्षी लाखो भक्तजन बनते है। प्रत्येक की आंखो में से हर्षाश्रु बह रहें है। हवेली में भी पू. गादीवाला इसी क्षण पू. वहूजी महाराजश्री को अपनी गादी पर विराजमान करके विधिपूर्वक पू. गादीवाला का बिरुद अर्पण करती है। यहाँ हवेली में भी बहनो और सांख्ययोगियों के भी हर्षाश्रु बह रहे हैं।

पू. लालजी महाराज भी जब १००८ श्री आचार्य महाराजश्री के

रुप में पदारोहण को प्राप्त करते हैं तब स्वयं अपने पिता तथा भूतपूर्व आचार्य श्री द्वारा इस पागड़ी धारण विधि को प्राप्त करने के कारण उनके आंखो में भी यह ऐतिहासिक क्षण अश्रुबिंदु थेरओं से चमक उठता हैं। इस दृश्य को देख रहे सभी भक्तजन थोड़े क्षणो के लिए जैसे निःस्तब्ध बन गए ।

११-१५ बजे लक्ष्मीनारायण देश के आचार्यश्री तथा थोड़ी देर पहले जिसनें धर्मधुरा अपने पुत्र को सोंपी है श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजदोनो नें विद्यमान आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आरती स्वयं तो उनके पिता है परंतु अब संप्रदाय के धर्मधुरंधर आचार्य है, जैसे पुत्र होने के बावजूद सत्संग के प्रतिनिधि बने है - सत्संग के व्यक्ति सविशेष बने हैं। इसलिए पद की गरिमा दर्शित करने वाली यह आरती भी ऐतिहासिक बन गई है ।

वह ऐतिहासिक घटना क्रम और सुवर्णक्षण संपन्न होने के बाद सभी के कान नए सुकानी ऐसे प.पू. कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वचन एवम् आज्ञा - आदेश के सुनने के लिए अत्यंत अधीर थे ।

प.पू.ध.धु. कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने अपने प्रथम आशीर्वचन में ऐसा कहा :

"आज हमारा लक्ष्य सन्मुख बिराजमान श्री नरनारायणदेव और यहाँ बैठे हुए महाराजश्री हैं । उनके स्नेह आशीर्वाद हमें प्राप्त हुए है । श्रीजी महाराज ने जो उपासना दर्शित की है उसकी दृढता करनी है । हम छोटे थे तब से हमे ये सब संस्कार मिले हैं। यहाँ विराजमान सभी संत-हरिभक्तो से भरपुर यह संप्रदाय और सन्मुख बैठे श्री नरनारायणदेव को प्रसन्न करने की शक्ति महाराज हमें प्रदान करें। अब इस सत्संग के लिए और महाराज के पक्ष के लिए जीवन व्यतीत करना है। जहाँ नरनारायणदेव की बात आएगी जहाँ स्वामिनारायण भगवान की बात आएगी वहाँ मैं कोई Compromise (समाधान) करना नहीं चाहता । दो-चार साल मेहनत करके छोटा-बड़ा नेता बना जा सकता है परंतु यह तो बहुत बड़ी जवाबदारी है । आचार्यपद की यह गरिमा और जवाबदारी वहन करने की महाराज हमें शक्ति प्रदान करे यह कहकर विराम लेतां हूँ।"

बाप से ज्यादा बेटा सवाया - "पिता से पुत्र सवाया और उनसे भी सवाये उनके पौत्र" यह उक्ति सार्थक होने की घड़ी आ पहुँची है। संप्रदाय का भावि तो निश्चित रुप से उज्वल ही है ।

पुत्र के लक्षण तो पलने में ही दर्शित हो जातें है। धर्मधुरा संभालने के बाद तुरंत ही जैसे संप्रदाय के सभी भक्तजनो का आह्वान करने वाले १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराज के आशीर्वचन सुनकर समग्र सभा अति आनंदित हुई । यह तो सम्राटों के सम्राट द्वारा स्थापित गादी है । उसे कुछ आंच आ शकती है क्या ? कभी नहीं ।

देश देश से पधारे हुए सभी आदरणीय संतो ने एक के बाद एक आकर पुष्पहार से नए आचार्य महाराजश्री का अभिवादन किया। उसके बाद हरिभक्तों के चरण स्पर्श का क्रम चला। लाल पगड़ी धारण किए हुए नए युवा आचार्य को नजदीक से देखने के लिए सभी भक्तजन कतार से खड़े होने लगे ।

संप्रदाय के इतिहास में यह सुवर्णघटना ऐसी अद्‌भुत और अलौकिक थी जिन्होने इसे प्रत्यक्ष देखा उन्होंने इस घटना को अंतर में उतार लिया ।

समग्र पदारोहण और पगड़ी धारण विधि दरम्यान हाजर सभी भक्तजनो की आंखो से बहतें स्नेहाश्रु में एक ही अपील दृष्टिगोचर हो रही थी । बस !

"सवाये बनकर रहो हरिसुत"

उसी तरह इस घठना को Newyork hever sleeps सांगोपांग अनुभव करने वाले प्रत्येक भक्तजन के अंतर में एक बात अवश्य उतर गई थी कि

Satsang never sleeps, it goes on on and on .....



सत्संग अभ्युदयार्थ आचार्य महाराजश्री का अविरत परिश्रम एवं वेजोड़ विनम्रता

- प्रो. सूर्यकान्त भट्ट (भुज)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के सम्पर्क में आया हुआ कोई भी सत्संगी हरिभक्त आपकी विनम्रता का दर्शन करके अनुकूल हुए बिना रह नहीं सका । सत्संग तथा सत्संगियों के अभ्युदय के लिए आपने रात दिन अविरत प्ररिश्रम करके अपने स्वत्व को जहाँ खोया है वहीं जगाया भी है। यह बात जग जाहिर है ।

भुज के श्री नरनारायणदेव मंदिर की शिलान्यास विधि के लिए महाराजश्री ता. ८-५-०३ गुरुवार के दिन भुज पदार्पण किये । ता. १४-४-०३ से ता. ८-५-०३ तक अथक परिश्रम करके तपती हुई गर्मी में सात से आढ बार भुज पदार्पण किये । १४ से १६ अप्रैल तक मांडवी कच्छ में रंगोत्सव मनाया गया । २२ से २४ अप्रैल सुखपर के मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव था । इन कार्यक्रमो में अहमदाबाद से प्रखर गर्मी में आना अत्यन्त कठिन है । अमेरिका न्युजर्सी के प्रसीडेन्ट श्री प्रहलादभाई विठ्ठलभाई पटेल के पुत्र श्री पंकजभाई के विवाहोत्सव प्रसंग में उनके आग्रह पर आशीर्वाद देने के लिए ता. २५ से ०४ अप्रैल २००३ तक उपस्थित रहकर हरिभक्तों को प्रसन्न किया ।

भुज मंदिर के शिलान्यास प्रसंग पर ता. ८-५-०३ के दिन भुज पधारे । इससे पूर्व महेसाणा में महाराजश्री के शुभ हाथों से मूर्तिप्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ । प्रातःकाल तीन बजे उठकर विना आराम किए दोपहर को दो बजे भुज पदार्पण किये । आपके रहने की व्यवस्था भुज के मानिन्द डॉ. मनहरभाई दिल्ली वाले के यहाँ की गयी

थी । मार्ग में मंदिर जाते समय नगर जनों ने जगह-जगह पर स्वागत व्यवस्था की थी । हम भी शोभायात्रा में लगे हुए थे । किसी कारण से मैं ध्यानी स्वामी को फोन किया तो पूज्य स्वामीजीने कहा कि आपके नगर में प.पू. महाराजश्री पधारे हुए है, आप उनका दर्शन करना । शोभायात्रा की मैने बात की, स्वामी तो खूब प्रसन्न हुए । स्वामी श्री की वात याद आयी और मैं महाराजश्री के दर्शनार्थ रात्रि को ९ बजे मेरे भाई घनश्याम तथा मेरे पुत्र डॉ. राजेश के घर जहाँ महाराजश्री उतरे हुए थे वहाँ पहुंचा तो महाराजश्री भोजन करके सन्त वर्यो तथा विदेश से आगुन्तको से मिल रहे थे, बड़ा आनंद आया बाद में ड्रोईंग रुम में करीब दश बजे आकर हिंडोले पर विराजमान हुए । आपके पास नीचे के आसन पर कालूपुर मंदिर के पू. महंत स्वामी भी विराजमान थे । हम तीन तथा डॉ. और उन के बेटे इतने ही लोग थे ।

एकक्षण का भी विराम किये बिना महाराजश्री प्रसन्न हुए प्रफुल्लित दिखाई देते थे । मैंने कहा महाराजश्री आपतो थके होंगे ? महाराजश्रीने कहा "हमें थकान नही लग रही है । शोभायात्रा में लगातार बैठना और दूर से आकर भी यात्रा में शामिल होना थोड़ा अधिक श्रम हो जाय तो भी वड़ी सरलता से स्वीकारना यही जीवन में स्वीकार किया ।

भूकंप के समय की एक बात निकली आपने बताया कि उस समय मंदिर कीआफिस में थे । थोड़ा समय ऐसा लगा कि चूहे इधर उधर दौड़ रहे हैं । परंतु भूकंप की याद आते ही आफिस के बाहर आंगन में आकर खड़े हो गये । लेकिन इतनी बड़ी हानि की तो कल्पना ही नहीं थी । महाराजश्रीने कहा "कच्छ को पानी की बहुत जरुरत है । मैंने कहा दिसम्बर २००३ में नर्मदा का पानी कच्छ को मिलने लगेगा । कच्छ में एशिया खण्ड की मोटी होस्पिटल बनी हैं तो महाराजश्रीने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि इसका मेन्टेनन्स होना चाहिए।

महाराजश्री को हमने पूछा महाराजश्री आपकी अवस्था तो बहुत नहीं लगती, तो महाराजश्रीने कहा मेरी अवस्था ५९ वर्ष की है । उत्सुकता से मैंने कहा "आपके आंख में नंबर नहीं है । तो उन्होने कहा मेरी आंख बैतालिस की उम्र का नम्बर है । डॉ. दिल्हीवाला ने हमारी आंख का टेस्ट किया है । उनके अनुसार बिल्कुल ठीक है । परंतु बाल लालजी को नम्बर है । अभी हम अमेरिका में एक दांत के डॉक्टर के यहाँ रुके थे । मैंने उन्हे अपना दांत दिखाया तो उन्होंने बताया कि आपके दांत बड़े सुंदृढ है अच्छे हैं लेकिन कुछ केमिकल दांत के बीच में भर दिया और केमिकल युक्त एक पतलीडोरी दी और कहा कि भोजन के बाद इस दोरी से दांत की सफाई करते रहेंगे तो आगे भी कोई तकलीफ नहीं आयेगी ।

अपने बालकपन की बात करते हुए महाराजश्रीने स्वक्षन्द ढंग से कहा कि "जब हम छोटे थे तब मुझे पाईल्स की तकलीफ हुई खून गिरता तो भी संकोचवश किसी सेनहीं कहता था परिणाम स्वरुप १०-१५ वर्ष तक खून निकलता रहा । अन्त में एक डॉ. को हमने बताया डॉ.ने कहा इस रोग में पेट साफ रखना जरुरी है । कब्ज नहीं रहना चाहिए । बाद में संयमित आहार-विहार कर देने से आजतक हमें कोई तकलीफ नहीं है ।

परंतु योगासन से शरीर खूब स्वस्थ रहती है । मेरेपुत्र राजेशने कहा महाराजश्री ? वर्षो से ए.सी.डी.टी. की तकलीफ मुझे है । महाराजश्रीने कहा अभी तो मेरा पेट भरा हुआ है नहीं तो मैं एक ऐसा आसन बता दूं जो नित्य करते रहने से ए.सी.डी.टी. कभी होगी ही नहीं । महाराजश्री की स्वाभाविक नम्रता से हम सभी खूब प्रभावित हुए । करीब रात्री को ११ बजे तक हम सभी बैठे रहे और महाराजश्री की पुण्यवाणी का लाभ लेते रहे ।

ऐसे महान तपस्वी कर्मयोगी परमपूज्य धर्मधुरंधर १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी अपने महान आचार्यपद पर अपने पुत्र प.पू. लालजी महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री को पदारुढ कर रहे हैं । भगवान श्री स्वामिनारायण का वही दिव्य तेजोमय अपर रुप जिसमें विद्यमान हैं उन्ही के चरणों मे कोटी कोटी साष्टांग दंडवत प्रणाम के साथ क्षमा प्रार्थी होकर विश्राम लेता हूँ ।

आचार्य पदकी महिमा

- पटेल अमृतलाल हिरजीभाई (लखतर)

'श्री स्वामिनारायण भगवानने स्वयं आचार्य पदकी स्थापना की । वि.स. १८८२ के प्रबोधिनी एकादशी के उत्सव में वड़ताल में अयोध्याप्रसादजी तथा रघुवीरप्रसादजी को अपने पद पर पदारुढ किया ।

भगवान श्री स्वामिनारायणनें दो देश विभाग किया था । अहमदावाद देश उत्तर विभाग में सप्तमाचार्य के रुप में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी ता. १५-१०-२००४ के दिन समग्र उत्तर विभाग श्री नरनारायणदेव देश की गद्दी पर पदारुढ हुए हैं । प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का पदारोहण महोत्सव एवं जन्मोत्सव ता. २३-१०-०४ शनिवार के दिन श्री सरदार पटेल स्टेडीयम नवरंगपुरा अहमदाबाद में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महारजश्री, पूज्या गादीवाला, प्रत्येक मंदिर के महंत स्वामी, विद्वान संत, पार्षद, ब्रह्मचारी, सत्संगीबन्धु, राजकीय आमंत्रित मेहमान बहुतायत में पधारकर प.पू.ध.धु. १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के पदारोहण महोत्सव तथा जन्मोत्सव को भव्यातिभव्य ढंग से मनाया । विदेश से हजारों की संख्या में भक्तजन आकर इस उत्सव को आचार्य पदकी महिमा समझकर दिव्याति दिव्यं ढंग से मनाया और अपने जीवन को धन्य समझा ।

प्यारे भक्तजन भगवानश्री स्वामिनारायणने देश का विभाजन करके दो गादी बनाई । जिस में अहमदाबाद की गादी का सम्पूर्ण स्वरुप अयोध्यावासियों पर रहे, आत्मीयता रहे इस भाव से उत्तरदेश के लेख में आलेखित किया । जिसने इस गादी रुपि वेदिका पर अपना सम्पूर्ण जीवन न्यौछावर किया, जिसने कुटुम्ब के व्यवहार से दूर रहकर परमात्मा की सेवा एवं सत्संग की सेवा में अपना जीवन समर्पण किया तो ऐसे के ऊपर प्रभु की कृपा न हो तो किसके ऊपर होगी ? जो धर्मकुल श्रौत-स्मार्तकर्म युक्त ब्राह्मण कुल मे बाल्यावस्थासे शुभ संस्कार का सिंचन प्राप्त किया हो, जिसमें स्वयं सर्वावतारी का तेज स्वयं आरोपित हो उसमें किसकी कमीं ? परोक्ष में आचार्य तथा गुरु बहुत हुए है, परंतु सभी परम्परा से आये होंगे । परंतु अयोध्यावासी मे से जो अयोध्याप्रसादजी एवं रघुवीरप्रसादजी को गादी श्रीहरिने दी जिस पर बैठाया, पदारुढ किया, वह गादी, वह पीठ, वह पद सर्वावतारी परमात्मा श्री स्वामिनारायण भगवान की है । फिर तो बाद में शंका ही कहाँ है । अपने जैसा अपने स्थान पर भगवान आरुढ करते हैं अपना सम्पूर्ण तेज उसमें उतार देतें है ।

आत्यंतिक कल्याण का प्रथम आधार स्तंभ मंदिर मूर्तिया है । उन मूर्तियों में धर्मवंशी आचार्य प्राण प्रतिष्ठा करते हैं वही मूर्तिया मुमुक्षुओं के लिए सेव्य हैं । मुमुक्षु सत्संगी वही कहा जायेगा जो धर्मवंशी आचार्य के पास दीक्षा ले । संत, ब्रह्मचारी, पार्षद भी जब आचार्य श्री से दीक्षा विधि प्राप्त करते हैं तभी वे भी मोक्षाधिकारी होते है । पश्चात् वे तिलक, चंदन, तुलसी की कंठी धारण करने के अधिकारी होते है । त्यागाश्रमी को काषायवस्त्र, श्वेतवस्त्र धारण करना होता है । यह सभी प्रक्रिया धर्मवंशी आचार्य द्वारा सम्भव है । इसके साथ भगवान स्वामिनारायणने महामंदिरो में अपने अपर स्वरुपों को प्रतिष्ठित किया उसकी सेवा का अधिकार भी आचार्यो को दिया - "सेवा कार्या यथा विधि" के अनुसार उन स्वरुपों की यथाविधि सेवा धर्म वंशी आचार्यो को स्वयं करनी चाहिए ऐसी आज्ञा की वासुदेवी महादीक्षा प्राप्त किये सन्त, नैष्ठिक ब्रह्मचारी, सेवादीक्षावाले पार्षद, सामान्य दीक्षा वाले सत्संगी सभी के धर्म की रक्षा तथा धर्मपालन कराने का उत्तरदायित्व भगवान स्वामिनारायणने धर्मवंशी आचार्यो को दिया ।

श्रीहरिने जीवों के आत्यंतिक कल्याण का कार्य धर्मवंशी आचार्यो को सौंपा तथा धर्मवंशी आचार्यो

की महिमा भी खुद गाये है । स.गु. निष्कुलानंद स्वामीने लिखा है -

माटे सो धर्म कुल मानजो सौ
करजो एनी सेव,
अन्यजन जेवा एह नहीं एछे
जाणजो मोटा देव ।
एक ब्राह्मणने जाणजो भक्त अति
वणी कहावे हमारो कुल,
एने सेवता सौजन तमो, पामतो
सुख अतुल ।
मन वांछित वात मळशे, वड़ी सेता
एना चरण,
ए छे अमारी आज्ञा सर्वकालमां
सुख करण ।
मन कर्म वचने मानजो एमां संशय
लगाट,
एह हामारे अनेकनो आज करवो छे
ऊद्धार ।
माटे सौ रेहजो एने वचने रे,
त्यागी गृही सौ एमने रे ।
रहेजो धर्मवंशीने गमते रे,
वर्तशो कोई मन मते रे ।
एह कहे तेम सहु करजो रे,
पूछ्या विना तो पग न भरजो रे ।
हाथ जोडीने रेजो हजुर रे,
करी डा'पण पोतानुं दूर रे ।
विघागुण बुद्धीने रे,
एने दबाववा नहि कोई वले रे ।
त्यागी रागी ने कवि कोई होय रे,
तोय एने मानजो सहु कोय रे ।
वाद-विवाद करी वदने रे,
एशुं बोलशो मां कोई दने रे ।
एनी वात उपर वाव अणी रे,
केदी वशोमां मुखे वाणी रे ।
एने होड्य-हठावी हरावी रे,
पोतानी रसोई ना करवी रे ।
पोते समजी पोताने प्रविण रे,
एने समजशोमां गुण दीन रे ।
जेम ए वाले तेम वलजो रे,
एना मां कामकाज भलजो रे ।
एनी मानज्यो सौं आज्ञा रे,
वर्तशोमां कोय वचन विना रे ।
एने राजी राखशो जो तमे रे,
तो तम पर राजी छीर अमे रे ।
एने राजी राखशे जे जन रे,
तेने अमने कर्या प्रसन्न रे ।
कां जे अमोर ठेकाणे ए छेरे,
ते तो प्रवीण होय ते प्रीछे रे ।
बीजा ए मर्म न लहे रे,
भोला मनुष्यने मोलीई रहे रे ।
पण समजवी वात सुधी रे,
अति मति न राखवी रे,
वचन रे वस्या अमे एमा रे,
तमे फेर जाणशो मा रे ।
जे जे जनने थाय अमास रे,
ते तो जामो अमारो प्रताप रे ।
ज्यां ज्यां जाय त्यां जयजीत रे,
ते तो अमे रह्या रुडी रीत रे ।
एनुं जेणे करी सन्मान रे,
तेणे मारुं कर्यं छे निदान रे ।
एम जानीं लेजो सहुजन रे,
एम बोल्या श्री भगवान रे ।

देश विभाग के लेख में भी श्रीहरिने ऐसा कहा है साधु, ब्रह्मचारी तथा सत्संगी समस्त के आप को तथा गादीवाला को आचार्य के रुपमें स्थापित किया गया है। वे लोग निरंतर आपकी आज्ञा में रहेंगे और आपकी सेवा करेंगे और धर्मवंशी दोनो आचार्य के बिना अन्य मतवाला कोई मनुष्य शस्त्र द्वारा, तप तथा वैराग्यादिक गुण से विशेष होकर भी धर्मवंशी के दोनो आचार्य तथा आचार्यपत्नी से अधिक नहीं हो सकता । यह हमारी आज्ञा है जो आप सभी के जीवन कल्याणार्थ दोनो आचार्यों तथा दोनो आचार्य पत्नियों द्वारा आश्रितजन मंत्रदीक्षा पकर श्रेय प्राप्त कर सकते हैं । इन्हे मन वाणी तथा कर्म से आदर करने वाले का इहलोक तथा परलोक दोनो बनेगा । दूसरे का सहारा लेकर इनका विरोध करने वाले का दोनो लोक बिगडेगा ।

भगवान श्री स्वामिनारायण ने देश की दो गादी बनाकर दोनो गादी पर उत्तरदेश में नरनारायणदेव देश के आद्याचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री को नियुक्त किया । दक्षिण विभाग श्री लक्ष्मीनारायण देव देश में श्री रघुवीरप्रसादजी महाराज को गादी पर प्रतिष्ठित किये ।

उत्तर विभाग श्री नरनारायणदेव गादी स्थान के अयोध्याप्रसादजी महाराज के सप्तम वंश में आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री को धर्म के सबसे बडे तथा व्यवस्थापन विधि के श्रेष्ठ के रुप में प्रतिष्ठित किया गया जिसे सभी उत्तरदेश वासियो को समझना चाहिए ।

उत्तर विभाग के सभी संत, ब्रह्मचारी, पार्षद तथा सत्संगीजन द्वारा प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री को प्रतिष्ठा, पूजा सेवा करने से भगवान श्री स्वामिनारायण की प्रसन्नता मिलेगी ।

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव पीठस्थान पदारोहण सन्मान समारोह

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला

सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायणने अपने हाथ से नरनारायणदेव गादी स्थान की स्थापना की उसी पीठ के सप्तमाचार्य के रुप में प.पू. श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने अपने पुत्र लालजी कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराज को १५-१०-०४ को आश्विन शुक्ल द्वितीया के दिन पदारुढ किया । जिसका सन्मान समारोह आश्विन शुक्ल विजया दशमी के दिन २३-१०-०४ को किया गया ।



अहमदाबाद के सरदार पटेल स्टेडियम के विशाल प्रागंण में रखा गया, जिसके सत्कार समारोह में देश विदेश से आदरणीय सन्त हरिभक्त बडी संख्या में तथा राजकीय राष्ट्रीय स्तर के मेहमान उपस्थित थे ।

८-४५ बजे प्रातः काल प.पू. बडे महाराज श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी पार्षद एवं सन्तो के साथ सभामंडप में पदार्पण किये उस समय समग्र सभाने खडा होकर सन्मान किया ।

पू. लालजी महाराजश्रीने दीपक प्रगट करके समारोह का शुभारंभ किया । सुमधुर शहनाई के ध्वनि में षडक्षर मंत्र प्रपूरित होकर वातावरण को मंन्त्र मुग्ध कर दिया । "मंगलमूर्ति महाप्रभु श्री सहजानंद सुखरुप" की स्तुति से समारोह का कार्यक्रम आरंभ किया गया । बाद में "बने आज लाल ..... औढत दुशाल लाल" का कीर्तन गाया गया ।

जेतलपुर संस्कृत पाठशाळा के विद्यार्थी संतोने समूह शांति पाठ किया ।

इस कार्यक्रम में गुजरात राज्य के म.म. राज्यपाल श्री नवलकिशोर शर्माजी पधारे थे । राज्यपालश्रीने वर्तमान पीठाधिपति आचार्यश्री का पुष्पहार से सन्मान किया तो पू. महाराजश्रीने भी मंदिर की प्रतिकृति तथा शाल अर्पण करके राज्यपालश्री का बहुमान किया ।

राज्यपालश्रीने अपने प्रवचन में दोनों आचार्यो को संत शिरोमणी की उपमा देते हुए कहा कि "आज जब सारी दुनिया उपभोक्ता संस्कृति की ओर जा रही है तब श्री स्वामिनाराणय संप्रदाय ने संस्कृति का प्रभाव स्थायी बनाये रखा है । "नव युवक आचार्यश्री भी अपने पिताश्री ने जो सेवा की है वही व्रत और सेवा को बनाये रखे ऐसी शुभ कामना करता हूँ ।

इस सभा में पधारे हुए केन्द्रिय कापडमंत्री श्री शंकरसिंह वाधेला ने अपने प्रवचन में बताया कि "आज जब सभी जगहों पर धर्म का व्यापारी करण किया जा रहा है, तब पूज्य तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने अपना समग्रजीवन सत्संग के लिए समर्पित

करके सम्प्रदाय में व्यापारी करण होने नहीं दिया । आपने गुजरात, देश तथा दुनिया के लोगो को नयी दिशा दी है ।

इतना सब कुछ जिसमें हो वही सादगी से रहसकता है । सादगी आपकी एक आदर्श रही है । आज मानव के रुप में भगवान की तरह आपकी सभी लोग पूजा करते हैं । आप सच्चे अर्थ में भगावन की प्रतिकृति हैं । नये आचार्य श्री भी नई पीढी के लोगो कें लिए नया मार्गदर्शन देंगे ऐसी श्री स्वामिनारायण भगवान को प्रार्थना ।

नरनारायणदेव युवक मंडल की तरफ से विविध प्रदेश के प्रतिनिधिलोग आकर युवा आचार्यश्री को एक प्रतिज्ञा पत्र अर्पण किया । जिस में तन मन धन से हम सभी युवा सत्संगी आपको समर्पित हैं । ऐसी प्रतिज्ञा किये । आमंत्रित मेहमान के रुप में पधारे हुए अशोक भट्ट ने प.पू.ध.धु. कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराज को २१वीं सदी का युवा आचार्यश्री के रुप में प्रशंसा करते हुए बताया की समग्र विश्व आज भौतिक सुखों से दुःखी होता गया है ठीक उसी समय सम्पूर्ण विश्व की नजर भारत की आध्यात्मिकता पर है । आप तीनो मूर्तिधर्म के सेनापति के रुप में विराजमान हैं । धर्म की रक्षा के लिए, नीति की रक्षा के लिए, सत्य की रक्षा के लिए आपका यह सातवां आचार्य पद ऐतिहासिक बना रहे



और २१वीं सदी सत्संग की सदी बनी रहे ऐसी भगवान श्री स्वामिनारायण के चरणों में प्रार्थना ।

इसके बाद विशेष महानुभावों में पद्मविभूषण पंडित श्रीजशराजने अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए गुरु वंदना रुप स्तुति का गान किया । जिसे सुनकर सभाजन मंत्र मुग्ध हो गये ।

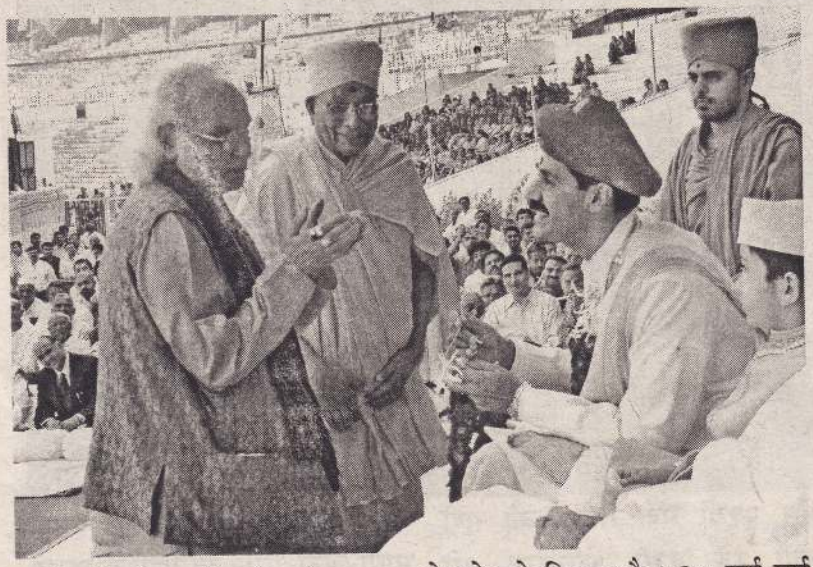
गुरु आज्ञा मेंनिशदिन रहिये....
गुरु महिमा अपरंपार
गुरु चरण रज मस्तक धरिये
भवसागर हंस हंस के तरिये ।

गुरुवंदना की ऐसी स्वरांजलि सभी के हृदय को प्रभावित कर दी । संतो के प्रवचन में प्रथम गांधीनगर सेक्टर-२८ के शा.स्वा. हरिकेशवादसजीने बताया कि जैसे देश का सर्वोच्च पद राष्ट्रपति का होता हैं यदि वह चाहे तो सुप्रीमकोर्ट की मृत्युदंड सजाको रोक सकता है । फिरतो ऐसे पद पर जिसे भगवान स्वामिनारायण ने प्रतिष्ठित किया है यहाँ जो भी शरणागति स्वीकारे उसे काल-कर्म-माया-जन्म-मरण इन सभी के बन्धन का भय नहीं रहता है । यह पद सम्प्रदाय का बन्धारणीय सर्वोच्चपद है ।

पूज्या बिन्दुराजा के दोनो पूत्र रत्न सौम्यकुमार एवं सुव्रतकुमार सभा में पधारे नानाश्री एवं मामाश्री के हाथों पुष्पाशीर्वाद प्राप्त किये ।

सेन्टजेवियर्स स्कूल के फादर श्री मोरान्डो साहब अहमदाबाद म्युनिसिपल कोर्पोरेशन के भूतपूर्व मेयर श्री हिंमतसिंह पटेल, संसद सभ्य श्री ए. के. पटेल साहब, श्री नरहरिभाई अमीन, इत्यादि विविध धारासभ्य लोग इस सभा में आमंत्रित थे ।

अहमदाबाद मंदरि के भूतपूर्व महंत शा.स्वा. पूरुषोत्तमप्रकाशदासजी ने बताया कि आज लाखो युावनों को महान आनंद हुआ है । जब कि युवा आचार्य को गादी पद पर प्रतिष्ठित किया गया है । आपश्री सदा कहा



करते थे कि हमे तो संत तथा सत्संगियो में भगवान दिखाई देते है। इसीलिए हम सभी को आदर से बुलाते है। आपतो स्वयं भगवान के अपर स्वरुप है । ऐसे श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी को हम वंदन करते है ।

१०-३० बजे अतिथिविशेष गुजरात राज्य के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी आये और प.पू. आचार्य महाराश्री का पुष्पहार एवं शाल ओढाकर सन्मान किये । बाद में अपने प्रवचन में बताया कि - आज से ५० वर्ष पूर्व "शुद्ध घी की दुकान" का बोर्ड नही था, घी की दुकान अर्थात् शुद्ध घी की दुकान ही होती लेकिन आज बोर्ड लगाना पडता है, ठीक यही स्थिति स्वामिनारायण सम्पदाय में है, जो मूल सम्प्रदाय है उसे मूल स्वामिनारायण सम्प्रदाय लगाना पडता है ।

गीता के कर्म का सिद्धान्त यहाँ देखने को मिलता है । २० वर्ष पूर्व कोईभारतीय विदेश जब जाता तब विदेशियों को नमस्ते कहकर सम्बोधित करता, लेकिन पीछे १० वर्षो से स्थिति ऐसी हुई है कि भारतियों को जयश्री स्वामिनारायण कहकर अभिवानद किया जाता है । श्री तेजेन्द्रप्रसादजीने विदेश की धरती पर श्री स्वामिनारायण सम्प्रदाय का प्रचार प्रसार करके अद्‌भूत कार्य किया है ।

गुजरात तो स्वामिनारायण सम्प्रदायकी कर्मभूहि है । भक्ति की महिमा की अपेक्षा सेवा की महिमा विशेष है । किसी संस्था को २०-२५ वर्ष लगातार चलाना कठिन है नाना प्रकार की परेशानियां अयी है जबकि २२५ वर्ष से लगातार आधुनिकता प्राचीनता के संमिश्रण के साथ प्रगति के मार्ग पर गतिशील है । मैंने इस मूल स्वामिनारायण सम्प्रदाय के संतो या आचार्य में चमत्कार की बात नहीं सुनी तथा किसी को भ्रमित करके धर्मप्रचार करतेनही सुना गया। यही इसकी विशेषता है । अन्यत्र भक्त लोग भगवान को प्रधानता देते है । यद्यपि इस सम्प्रदाय में आचार्यश्री, संत तथा हरिभक्त मिलकर सत्संग की देखभाल करते है । यही जीवित उदाहरण है । यह सरलता से संभव नहीं है । इसमें तपश्चर्या की आवश्यकता है ।

श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज इस सफलता के लिए अथक परीश्रम किये हैं । सत्संग के लिए कभी निवृत्त नहीं है, युवा आचार्य का लाभ तो मिलता ही हैं । इस प्रकार दो गुनालाभ मिला है । इसका हमें विशेष आनंद है ।

पिताश्री का संस्कार आधुनिक शिक्षण, वारसा, इस प्रकार तीनों श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी को मिला है । जिससे सत्संग में विकाश एवं प्रकाश मिलता रहेगा ।

प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी ने अपने प्रवचन में इस प्रकार बताया कि आज का प्रसंग किसी शब्द से व्यक्त नहीं किया जा सकता ऐसी अनुभूति हो रही है । हम किसी की नियुक्ति करते है तब अपनी पसदंगी के अनुसार करते हैं। भगवान श्री स्वामिनारायणने स्वयं पसदंगी करके इस पद के आचार्य की नियुक्ति की है । और समय समय पर करते आए हैं । इस पद की गरिमा जितनी समझने की

कोशिश करें उतनी ही कम है ।

मैं छोटा था तब स्कूल में सभी विद्यार्थी पूछा करते थे "अरे•! तु कहाँ का राजा है ?" हम कहते "हम छपैया के राजा है" पुनः वे पूछते छपैया कहा आया है ? "हम सात आठ वर्ष के थे इसलिए थोड़ी तकलीफ तो हुई लेकिन तुरत उत्तर दिये कि छपैया सत्संगियो के हृदय में है । वहीं के हम राजा है । इसलिए हम सभी के हृदय में राज करते है । अपना यह मूल सम्प्रदाय स्वामिनारायण सम्प्रदाय का व्यापारी करण नहीं किया । यह हमारे लिए गौरव की बात है । यह सम्प्रदाय २०० वर्ष के थोड़े समय में प्रगति ही नही किया बल्कि मानव सेवा का अधिकार भी प्राप्त किया । श्रीजी महाराज की आज्ञा है कि धर्म के माध्यम से समाज सेवा, दुःखी पीडितो की सेवा करना ।

चीन के युद्ध से लेकर अतिवृष्टि, आनावृष्टि, भूकंप इत्यादि आपत्तियों में सम्प्रदाय के सन्त तथा हरिभक्त लोग गाँव गाँव में सेवा में तत्पर रहे है ।

इन नये आचार्य की नियुक्ति हम नहीं स्वयं श्रीजी महाराजने किया है। हम तो निमित्त मात्र ही हैं । इस दिव्य सभा में विराजमान आदरणीय संत, हरिभक्त तथा उपस्थित महानुभाव सभी लोग नये आचार्य को आशीर्वाद देना । धर्म पालन करना तथा दूसरे से धर्मपालन करवाना यह दोनो



उत्तरदायित्व वहन करने की शक्ति भगवान दें । सन्तो में विशेष आदर देते रहेंगे ऐशा मेरा आशीर्वाद है ।

अन्त में समग्र सन्मान समारोह के मुख्य आधार ऐसे पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजने अपने उद्‌बोधन में इस प्रकार के अमृतवचन बोले ।

सर्व प्रथम तो जो लोग दूर दूर से हमे शुभेच्छा या शुभकामना देने आयें हैं मैं उनका आभार मानता हूँ । यह पगड़ी ऐसी नहीं है कि इससे अनुशासन किया जा सकता है । सबसे बड़ा चमत्कार महाराज ने यह किया कि मनुष्य को मनुष्य बनाया । उन्होने समाज के प्रत्येक मानव का उत्तर दायित्व सेवा से किया है ।

अब तो पगड़ी धारण करने के बाद उत्तरदायित्व बढगया है । सम्पूर्ण सत्संग का प्रेम इस लाल पगड़ी में है । पू. बापूजी ने बालकपन से ही जो सीख दिये कि किसके साथ कैसा व्यवहार करना, कैसे बोलना, किसके सामने झुकना किसके सामने न झुकना इत्यादि को एकदम स्पष्ट कर दिया है ।

श्रीजी महाराजने वेद शास्त्रों का सार रुप शिक्षापत्री के २१२ श्लोकों में अमृतवचन दिये हैं जो आप सभी को सुखी बंनायेगा ।

आज प.पू. महाराजश्रीने अपने जीवन का निचोड यहलाल पगड़ी हमें दिया है जिससे मैं मानता हूँ कि आदरणीय सन्त, हरिभक्त तथा छोटे-छोटे गाँव में रहने वाले हरिभक्त जन का हमें प्रेम मिलता रहेगा । ये सभी भले पीछे बैठे हों लेकिन इनकी सेवा का योगदान बहुत है ।

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान के चरणों में यह श्वांस है उन्ही के लिए यह जन्म मिला है, उन्ही के लिए काम करना है । इन सन्त-

अनुसंधान पेज नं. ५७

NRI हरिभक्तोंकी सराहनीय निष्ठा

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला

NRI यानी "भारतीय विदेशवासी" जब भी अपने देश में आये तब हंमेशा माननीय मेहमान गिनाते रहे ।

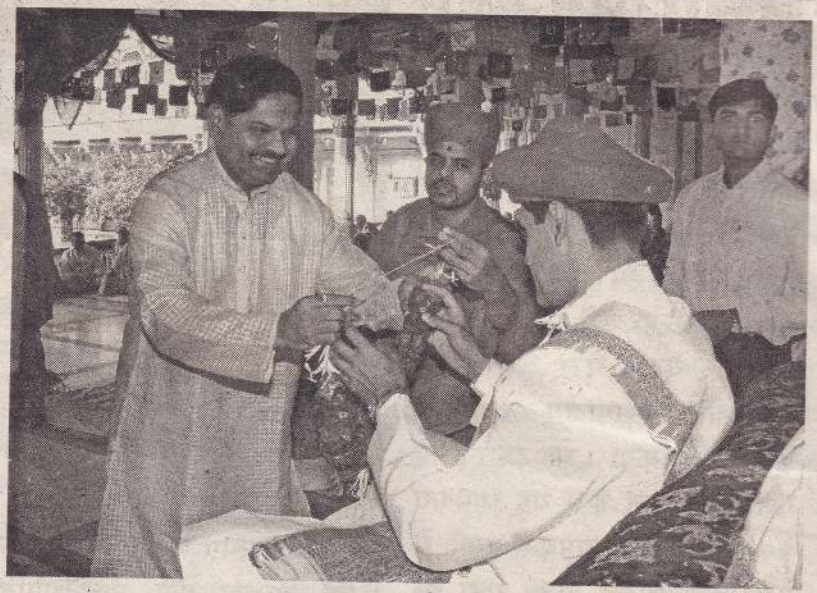
यहाँ हमे बात करनी है अपने संप्रदाय और संप्रदाय के धर्मकुल के परंपरा की निष्ठा से भरे हुए और विदेश के निवासी अपने NRI हरिभक्तोकी,

दि. १५-१०-२००४ को आश्विन शुक्ल द्वितीया के दिन प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का गादी अभिषेक और पगड़ी धारण विधि का अवसर था । तथा विजयादशमी को दि. २५-१०-२००४ के शुभ अवसर पर श्री नरनारायणदेव पीठस्थान का सन्मान समारोह था ।

प.पू. निवृत आचार्य महाराजश्री का एक स्वतंत्र और विराट निर्णय था । उस दौरान समय बहुत कम था।

यूरोप, अमेरीका, केनेडा, ओस्ट्रेलिया, आफ्रिका, दुबई इत्यादि जहाँ जहाँ मंदिर और I.S.S.O. चेप्टर में जैसे जैसे समाचार मिले तुरंत अंतर में उत्साह उत्पन्न हुआ ।

मात्र दो या तीन दिन ही बाकी थे फिर भी सभी हरिभक्त अमदाबाद आने की तैयारी करने लगे । जिसे जिस किसी एरलाईन्स की टिकट मिली उसी में आ गये । १४ अक्टुबर की रात तक डेढसो से दोसो जितने NRI भक्तजन आ गए थे ।



१५-१०-२००४ को सुबह श्री नरनारायणदेव के समक्ष केसर स्नान के समय ये सभी हरिभक्त उपस्थित हो गए ।

श्री हरियाग, गादी अभिषेक विधि प्रसंग, प्रासंगिक सभा तथा आचार्यश्री के उद्‌बोदन की प्रत्येक पल-पल में उपस्थित थे ।

सरदार पटेल स्टेडियम के प्रांगण में दि. २३-१०-२००४ के विजयादशमी के श्री नरनारायणदेव पीठस्थान सन्मान समारोह में NRI हरिभक्त अपने निश्चित स्थान पर शोभायमान हुए ।

वतन से हजारो माईल दूर आत्यमीजनो और आत्मज भाई-बहनो से दूर रहकर, उन्होनो वर्षो से विदेश में आवास किया है । अपने व्यवसाय में भरे हुए Schedule में भी केवल दो दिन में ही इस अैतिहासिक घटना के साक्षी बनने आ गए ।

धर्मकुल के महिमा और परंपरा के लिए इतनी निष्ठा कभी कम कही नही जा शकती । बस इसी "लाल पगड़ी से ही अपना कल्याण है " सुराखाचर की यह बात विदेश में भी सत्संग को जागृत रखती है ।

पूर्वगामी "अद्वितीय आचार्य" प.पू. श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजकी तेजोमय प्रतिभा तथा विद्यमान आचार्य प.पू. श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराज में अपार श्रद्धा तथा अनहद आस्था और विस्वास है । इस प्रकार श्रीहरि द्वारा स्थापित सत्संग का भावि उज्वल है । इसमे कोई शंका नही है ।

जब भी उत्सव, समैया या कोई अैतिहासिक अवशर हो तब NRI हरिभक्त सभी काम छोडकर आ जाते

है । "धर्म संबंधी कार्य तत्काल करना चाहिए ?" शिक्षापत्री की इस आज्ञा को शिरोमान्य रखते है ।

श्री स्वामिनारायण मेगेजीन के विशेषांक में इन सभी NRI की विशेष नोंट लेनी पड़ी । पू. महाराजश्री से लेकर पू. महंत स्वामी सहित सभी आदरणीय संतो और हरिभक्त उनकी निष्ठा को सन्मान करते है ।



यु.के. (लंडन) से पधारे हुए हरिभक्तो में श्री नारण भीमजी हलाई, श्री भावेश कुंमवरजी, श्री रमेशभाई भीमजी, श्री कांतिभाई नारायण, श्री नीतीनभाई हिराणी, श्री परबतभाई, श्री जीतेन्द्रभाई पटेल, श्री कांतिभाई खीमाणी, श्री मनजीभाई करसन वेडीया, श्री नारणभाई मावजी वरसाणी, श्री देवजी हालारीया, श्री नंदुभाई (बोल्टन, यु.के.) कांतिभाई (ओल्डहाम), श्रीहितेशभाई भूडिया, श्री अश्विनभाई (ओस्ट्रेलिया) सुरेशभाई नारण के राई, मूल कच्छ हालार के सभी NRI हरिभक्त है ।

लाखो युवानो के प्राण प्यारे और अपने ही युवा आचार्यश्री का यह अवशर था । इस लिए विदेश से आये हुए युवा सत्संगी लंडन से श्री कमलभाई, श्री दिलीपभाई, श्री दीपकभाई, श्री राजेशभाई, श्री प्रकाशभाई पटेल, श्री रविभाई, श्री हिरेनभाई, श्री नीलकंठभाई इत्यादि मुख्य थे ।

अमेरीका में न्युजर्सी, डीट्रोईट, बोस्टन, शिकागो, लोस ेन्जलेस, लेकलेन्ड, फ्लोरीडा से कई युवा सत्संगी आये थे । जिसमें श्री प्रेमजीभाई केराई, श्री देव केराई (एल.ए.) श्री चंद्रेशभाई पटेल, अंकित पटेल, तेजस पटेल (बोस्टन), श्री नयनभाई श्री महेशभाई श्री प्रहलादभाई पटेल (न्युजर्सी), श्री मणिभाई पटेल (फ्लोरिडा) इत्यादी मुख्य है ।

दुबई से प.भ. श्री भीमजीभाई टांक भी पधारे थे । तो I.S.S.O. टोरेन्टो केनेडा चेप्टर से श्री रसिकभाई (रमेशभाई) पटेल भी पधारे थे । शिकागो से विवेक ब्रह्मभट्ट आये थे । बडी संख्या में बहने भी आई थी । लंडन से प्रेमीला बहन, इन्दु बहन, वर्षा बहन पाठक, केनेडा से लीला बहन, न्युजर्सी से लीला बहेन पटेल आदी मुख्य थे ।

लगभग दोसो से तीन सो की संख्या में इस अैतिहासिक सुवर्ण अवशर को मानने के लिए पधारे NRI लोगो में केवल कुछ लोगो के नाम बताए गए है । बाकी लोगो के नाम भले न बताये गए हो किन्तु उनकी इस धर्मकुल और श्री नरनारायणदेव के प्रति निष्ठा सराहनीय ही है ।

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव पीठस्थान पदारोहण सन्मान समारोह

अनुसंधान पेज नं. ५५नुं

हरिभक्तों की सेवा करनी है । बडे बडे महानुभाव भी बहुत प्रेम करते हैं । यही प्रम है । इन सभी उत्तरदायित्व का भार वहन करना है सामने बैठे हुए नरनारायणदेव तथा उनके सामने बैठे हुए हमारे पिताश्री इन दोंनों को प्रसन्न करना है । तभी दुनिया प्रसन्न रह सकेगी । जैसे गणपतिजी मां बाप की प्रदक्षिणा करके सब कुछ हस्तामलकवत् कर लिए थे, यही भावना मेरे जीवन में रहे ऐसी प्रभु के चरणों में प्रार्थना ।

पचास हजार से भी अधिक संख्या में आये हुए देश विदेश के भक्तजन तथा सन्तवृन्द एवं महानुभाव मेहमान लोग उपस्थिर हैं ।

अहमदाबाद मंदिर के महन्त स्वामी निर्गुणदासजीने सभा संचालन करके सम्पूर्ण उत्तरदायित्व को निभाया था ।

सत्संग के नये पदारोहण समारोह के निमित्त संस्कार करने हेतु पधारे हुए सभी लोगों को नजदीक से देखने की एक विशेष ललक थी ।

अन्त में सभी सत्संगीजन खड़े होकर नये आचार्य के चरण का स्पर्श किये तथा जन्म दिन की शुभेच्छा भी दिये ।

सत्संग समाचार



अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव के सांनिध्य में दीपावली का उत्सव सम्पन्न

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के सांनिध्य में अहमदाबाद मंदिर में कालीचौदश को ता. ११-११-०४ के दिन धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री के कुलदेवता श्री हनुमानजी महाराज का पूजन अर्चन तथा आरती प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने किया । दीपावली को ता. १२-११-०४ के दिन जिनमूर्तियों को भगवान स्वामिनारायणने प्रतिष्ठित किया था उन मूर्तियों के सामने अन्नकूट का छप्पन भोग लगाकर प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा बड़े महाराजश्री एवं लालजी महाराजश्रीने अन्नकूट की आरती उतारी थी । दर्शनार्थ भावुक भक्तजन दोपहर के १२ बजे से सायंकाल ५ बजे तक दर्शन का लाभ लिये । दूरदर्शन की कैमराटीमने तथा ई.टी.वी. की कैमरा टीमने अन्नकूट का जीवंत प्रसारण करके गुजरात की करोडों जनता को अन्नकूट के दर्शन का लाभ दिया । जिसके लिए दूरदर्शन न्युज एडिटर श्री प.भ. धीरजभाई काकडिया तथा प.भ. सतीषभाई मोरी



(ई.टी.वी. डाईरेक्टर) को खूब खूब धन्यवाद । सायंकाल समूह महालक्ष्मी पूजन एवं शारदा पूजन सायंकाल ६ बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा बडे महाराजश्री के हाथों से वेद विधि से सम्पन्न हुआ था । मंदिर का विशाल सभा मंडप ध्वजा-पताका तथा लाल कलर के सुन्दर वस्त्रो से वेष्टित अति सुहावना लग रहा था । वेंद परम्परा गत पूजन विधि कराने के आग्रही हरिभक्तजन अधिक संख्या में उपस्थित रहे । पू. महंत स्वामी की प्रेरणा से दोनो कोठारी स्वामी तथा स्टाफ गण इस प्रसंग पर उत्तम सेवा का कार्य किये थे । इतने अधिक हिंसाबी रजिस्ट्र थे कि उनका रखरखाव करना और व्यवस्थित भक्तों को मिलजाय इसके लिए कोठारी स्वामी तथा अन्य के सहयोग से कार्य सरल हो सका । दूसरे दिन से ही पूजित रजिस्टरोंको देना प्रारम्भ कर दिया गया । यह सेवा प्रसंशा के योग्य है । अन्नकूट की सेवा उत्तम स्वामी, मुक्तजीवन स्वामी, धर्मप्रकाश स्वामी इत्यादि संतोने को.स्वा. ब्रह्मविहारी के निर्देशानुसार पवित्रता एवं शुद्धता से

कार्य सम्पन्न किया। श्री नरनारायणदेव देश के ५०० जितने हरि मंदिरों में अन्नकूट प्रसाद का वितरण किया गया। जिसमें सन्त, पार्षद, हरिभक्त सभी मिलकर सेवाका कार्य करके श्रीजी महाराज एवं धर्मकुल की प्रसन्नता प्राप्त किये।

- शा. सत्यप्रकासदासजी

बद्रिनारायण मंदिर में २३वां पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद हाथों से अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर में वेदविधि से उत्सव सम्पन्न किया गया था। पाटोत्सव के यजमान प.भ. नारायणभाई ईश्वरभाई अहमदाबाद वाले ते। कथापारायण वक्ता शा.स्वा. श्रीजी प्रकाशदासजी हाथीजल वाले के अमृतमयीवाणी से सम्पन्न हुई। बद्रिनारायण मंदिर के मुख्यपुजारी रावलजी द्वारा प.पू. महाराजश्री का सम्पन्न किया गया था।

- महंत स्वा. गोलोकविहारीदासजी

श्री नरनारायणदेव धार्मिक परीक्षा की सूचना

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से श्री नरनारायणदेव धार्मिक शिक्षण विभाग द्वारा धार्मिक परीक्षा ता. १९-१२-०४ रविवार को सभी केन्द्रो परली जायेगी। प्रत्येक केन्द्र के संचालक अपने विस्तार की उत्तर पुस्तिका प्राप्त करलें।

समय :

प्रातः ८-०० बजे से १०-३० बजे तक

संचालक श्री नरनारायणदेव धार्मिक शिक्षण विभाग

श्री स्वामिनारायण मंदिर अमदावाद

धरियावद (राज.) मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा

समस्त सत्संग को सहर्ष बताते हुए आनंद हो रहा है कि सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधीश्वर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से राजस्थान के उदयपुर जिले में सुन्दर रमणीय शान्त विस्तार धरियावद में डेढ वर्ष के अल्प समय में तीन सिखर का मंदिर तैयार हो रहा है, जो मारबल के पत्थरों से सुसज्ज हैं। जिसकी प्राण प्रतिष्ठा विधि ता. १४-२-०५ से २०-२-०५ तक धूमधामसे सम्पन्न की जायेगी। बहुत सारे हरिभक्तों ने अपनी सेवा की है लेकिन जिन भक्तों की सेवा बाकी हो वे तथा जो इस प्रसंग में भागलेना चाहते हैं वे अपनी सेवा लिखाकर लाभ ले सकते हैं।

संपर्क

महंत शा.स्वा. ईश्वरजीवनदासजी गुरु शा. पी.पी. स्वामी

श्री स्वामिनारायण मंदिर धरियावद

श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर

श्री नरनारायणदेव गादी के सबसे विशाल मंदिर करजीसण का द्वितीय पाटोत्सव

आश्वीन कृष्णपक्ष-१३ को (धनतेरस) के दिन यहाँ के मंदिर के पाटोत्सव के उपलक्ष्य में दंढाव्य प्रदेश लीला चरित्र पारायण सिद्धपुर गुरुकुल के संचालक शास्त्री सिद्धेश्वर स्वामी के वक्ता पद पर अ.नि.प.भ. पटेल हरिजीवनदास परिवार के यजमान पद पर संपन्न हुआ। सुबह को अहमदाबाद के पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. लक्ष्मीस्वरुपा अखंड सौभाग्यवती गादीवालाश्री, प.पू. श्री १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, .पू. श्रीराजा, अ.सौ.प.पू. बिन्दुराजा तथा साथ में चि. सौम्यकुमार और चि. सुव्रतकुमार पधारे थे। इस अवशर पर विशाल शोभायात्रा निकाली गई थी। वहाँ से पू. महाराजश्री और पूज्य लालजी महाराजश्री मंदिर में पधारे थे। और ठाकुरजी की आरती उतारी थी। फिर सभा में पधारे थे। सभा संचालन शा. विश्वप्रकाशदासने किया था। मंदिर के महंत पा. जसुभगत का साल ओढ़ा कर सम्मान कर आशीर्वाद दिए थे।

इस अवसर पर 'कीर्तन कलाप' नामकी पुस्तक का विमोचन प.पू. महाराजश्रीने किया था। मुख्य यजमान प.भ. प्रहलादभाई पटेलने प.पू. महाराजश्री का पूजन कर आशीर्वाद प्राप्त किया था और प्रासंगिक प्रचन भी किया था. प.पू. आचार्य महाराजश्री केन्या से सीधे ही यहाँ पधारे सब हरिभक्त खूब प्रशन्न हुए थे। सभी हरिभक्तों ने और यजमानोने आचार्य महाराज और लालजी महाराज को हार पहनाकर आशीर्वाद प्राप्त किया था। विसनगर से श्री उदयनभाई महाराजा तथा प्रतापपुरा के युवक मंडल ने रात्री कीर्तन भक्ति का सुंदर कार्यक्रम किया था। श्री कनुभाई पाटोत्सव के सहयजमान और विष्णुभाई भोजन के मुख्य यजमान थे।

- प्रहलादभाई वी. पटेल, न्युजर्सी

राजस्थान मारवाड के हरिभक्तों को सूचना

श्री नरनारायणदेव पीठ के श्री स्वामिनारायण मंदिर, वाली में कोई

भी हरिभक्त दान-धर्मादा दे तो उसकी पक्की रसीद प्राप्त कर के ही धर्मादा का दान करे । रसीद के बगैर दिया गया दान धर्मादा निरर्थक होता है ।

- कोठारी, वाली मंदिर

विदेश सत्संग वृत्तान्त

विदेश सत्संग समाचार

डिट्रोईट (I.S.S.O., U.S.A. चेप्टर) श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा

श्री नरनारायणदेव पीठ के I.S.S.O. द्वारा स्थापित U.S.A. के डिट्रोईट शहर में नया भव्य शिखरबद्ध मंदिर का निर्माण होते ही प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा आशीर्वाद से दि. ६-८-२०४ से १२-९-०४ पर्यन्त मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में भागवत कथा, विष्णु याग और अनेक विविध कार्यक्रमो का आयोजन किया गया था ।

ता. ६-८-०४ से ता. १२-९-०४ तक श्रीमद् भागवत कथा पारायण पू.शा. श्री योगेन्द्रभाई भट्ट (पीजवाला) के वक्तापद पर सम्पन्न हुआ । ता. १०-९-०४ से १२-९-०४ तक विष्णुयाग का सुंदर आयोजन किया गया । डिट्रोईट शहर के राजमार्गो पर ११ सितम्बर को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की ठाकुरजी के साथ शोभायमान गाडी में संत पार्षद तथा हजारों हरिभक्तों के साथ भव्य शोभायात्रा निकाली गयी ।

ता. १२-९-०४ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथों से श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज, श्री नरनारायणदेव, श्री लक्ष्मीनारायणदेव आदि स्वरुपों की प्राणप्रतिष्ठा वेदविधि से धूमधामसे सम्पन्न की गई । I.S.S.O. के हजारों हरिभक्तों ने तथा U.S.A. चेप्टर के हरिभक्तों ने दर्शन करके दिव्यानंद प्राप्त किया । पश्चात् कथापारायण, विष्णुयाग की पूर्णाहुति की गयी । सत्संगीबहनों को दिव्य सुख देने के लिए लक्ष्मीस्वरुपा प.पू. अ.सौ. गादीवाला पधार कर दिव्य दर्शन का लाभ दिया ।

इस प्रसंग में मुख्य यजमान नीचे अनुसार थे डॉ. अरविंदभाई पटेल, अ.सौ. धर्मिष्ठा बहन । श्रीहरिकृष्ण महाराजश्री मूर्ति के यजमान प.भ. मनोजभाई तथा राजेश्वरी ब्रह्मभट्ट । श्री राधाकृष्ण देवकी मूर्ति के यजमान उत्तर गुजरात कडवापाटीदार ४२ गोण समाज । श्री लक्ष्मीनारायण देव मूर्ति के यजमान प.भ. तुषारभाई तथा प्रीति बहन पटेल । श्री नरनारायणदेवकी मूर्ति के यजमान प.भ. घनश्यामभाई तथा कोकी बहन पटेल । प.भ. राजुभाई तथा मोनाबहन पटेल । श्रीमद् भागवत पारायण के यजमान प.भ. हिंमतभाई तथा कंचन बहन खेर । प.भ. नटवरभाई तथा रंजनबहन सोलंकी महाविष्णुयाग के यजमान प.भ. कांतिभाई तथा सविता बहन पटेल प.भ. भोलाभाई तथा मंगुबहन पटेल थे । इसके अलांवा अनेक हरिभक्त धर्म प्रेमीजन यजमान बनकर प.पू. महाराजश्री के दर्शन का दिव्य लाभ लेकर आशीर्वाद प्राप्त किये ।

ता. ४-९-०४ से १५-९-०४ तक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री को हरिभक्तों ने अपने अपने घरों में पदार्पण करवाया । मुमुक्षुओं ने गुरु मंत्रदीक्षा ली तथा कंठी धारण किये ।

इस प्रसंग में संतो में से शा. पूर्णप्रकाशदासजी शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी (छपैया भू.पू. महंत) देव स्वामी (धोलका भू.पू. महंत) आदि संत उपस्थित थे । २००० से भी अधिक हरिभक्त सत्संग का लाभ लेकर धन्य बने थे ।

- I.S.S.O. डिटोईट चेप्टर

वोशिंग्टन बुवी मेरीलेन्ड (I.S.S.O., U.S.A. चेप्टर)

दो अक्टूबर शनिवार को सायंकाल २॥ बजे सत्संग सभा, भजन, कीर्तन, वचनामृत कथा का आयोजन किया गया । कितने हरिभक्त सभा में उपस्थित रहे । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कृपा प्रसाद से यहाँ का सत्संग सुंदर चल रहा है । - कनुभाई पटेल

ओकलेन्ड (न्युजीलेन्ड I.S.S.O., चेप्टर) में श्री स्वामिनारायण मंदिरका भूमि पूजन

ओकलेन्ड में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहा I.S.S.O. द्वारा संस्थापित नूतन मंदिर के भूमि पूजन का कार्य विजया दशमी, शनिवार ता. २३-१०-०४ के दिन दोपहर में ३ बजे वेद विधि से सम्पन्न किया गया । इस प्रसंग पर महापूजा का भी आयोजन किया गया । पूजन विधि में हरिभक्तों ने भाग लिया । पूजन विधि श्री नंदलालभाई तथा यहाँ के भारतीय मंदिर के पुजारी श्री उपेन्द्रभाई ने करवाई । इस प्रसंग पर सैंकडो भाविक लोग उपस्थित थे । इस मंदिर में सहयोग करने वालों का स्वागत किया गया ।

भूमि पूजन के बाद श्रीजी महाराज की कृपा से मेंघ नें पुष्पवृष्टि की । सभी सभाजनों को आज ही के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य श्री

कोशलेन्द्रप्रसादजी के गादी अभिषेक का शुभ समाचार दिया गया। हरिभक्तों ने पूजन का लाभ लेकर धन्यता का अनुभव किया। इस सुन्दर उत्सव का वातावरण इतना सुन्दर लगता था कि मानो श्रीहरि यहाँ विराजमान हो गये हों।

भूमि पूजन के बाद मंदिर निर्माण का कार्य खूब बेगशील बनाया गया था।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृति अच्छी चल रही है। - कांतिभाई पटेल, जयंतिभाई पटेल, बिपीनभाई ठक्कर तथा अरुणभाई सोनी।

श्री कच्छ सत्संग स्वामिनारायणा मंदिर नाईरोबी का सार्धशताब्दी महोत्सव

कच्छ प्रदेश से वर्षो पूर्व व्यापार हेतु बहुत सारे कच्छी पटेल सत्संगी आफ्रिका खंड के केनिया, युगांडा आदि देसो में जाकर निवास किया। दूसरे देशों में भी जाकर श्री स्वामिनारायण धर्म की अपने जीव की तरह रक्षण किया। अपने आने वाली नई पीढी को बताया और मूल से पोषण किया वहाँ पर भव्य मंदरों का निर्माण कराकर श्री नरनारायणदेव पीठाधपति प.पू.ध.धु. आचार्य माहाराजश्री के वरद् हाथों से मूर्ति प्रतिष्ठा की गयी। आफ्रिका में नाईरोबी, मोम्बासा, कम्पाला, दारेसलाम, नुकुरु, नडोला आदि शहरों में आपने कुल ७ मंदिरो का निर्माण हुआ है। यहा भुज मंदिर के संत सत्संग को नूतनता प्रदान करते रहते हैं।

यहाँ केनिया के नाईरोबी शहर में

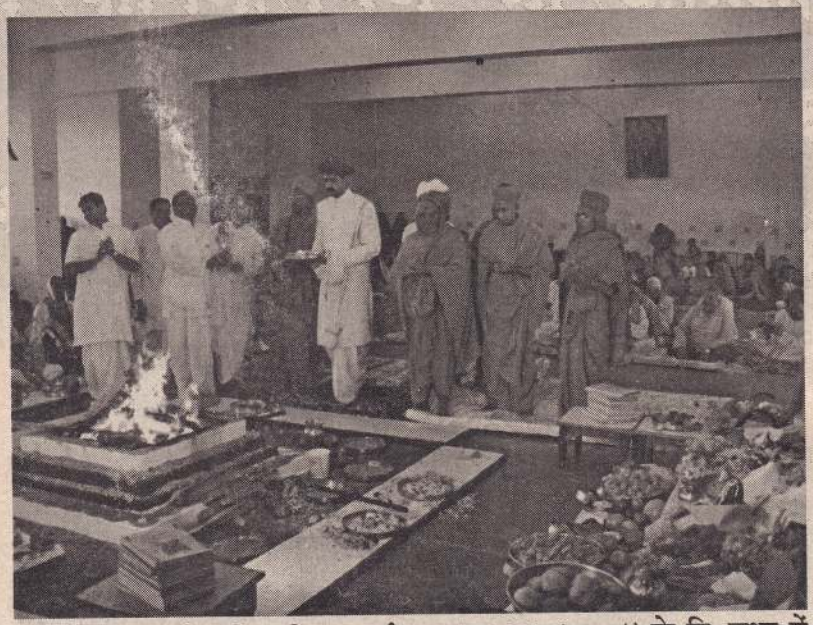


क.स. श्री स्वामिनारायण मंदिर का ५० वर्ष पूर्ण होने से सार्ध शताब्दी महोत्सव का आयोजन प.पू. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से भुज के महंत स्वामी की प्रेरणा से सम्पन्न किया गया। ता. २४-१०-०४ से ३१-१०-०४ तक सार्ध ताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में कथापारायण पोथीयात्रा, शोभायात्रा, विष्णुयाग आदि कार्यक्रमो को धूमधाम से सम्पन्न किया गया।

ता. २४-१०-०४ रविवार को देश विदेश से आये हुए हरिभक्तों का स्वागत संतो द्वारा गिया गया। बाजेगाजे के साथ पोथीयात्रा विश्रांति भवन से सभा मंडप तक गयी।

ता. २५-१०-०४ को प्रातः ११ बजे श्रीमद् सत्संगी जीवन कथा शा.स्वा. परमहंसदास तथा सायंकाल की कथा स्वा. श्री प्रकाशदासजी के वक्ता पद पर हुई।

सायंकाल एरपोर्ट पर श्री स्वामिनारायण संप्रदाय के उत्तर विभाग के आचार्य महाराजश्री



कोशलेन्द्रप्रसादजी (जिनकी आचार्य पद पर आरुढ होने के बाद प्रथम विदेश की यात्रा थी) उतरे कि हजारो हरिभक्त अपने प्राण प्यारे आचार्य महाराज श्री के दर्शन स्वागत करने के लिए उमड पडे थे । केनिया देश के दो मिनिस्टरों की उपस्थिति में V.I.P. लोंच में पू. महाराजश्री का स्वागत किया गया था । यहाँ से पूज्य महाराजश्री अपने निवास स्थान पर पदार्पण किये ।

सायंकाल ५ बजे श्री कच्छ सत्संग स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के स्वागत में हाजरो हरिभक्त एवं बहनो द्वारा उपस्थित होकर मस्तक पर मंगल कलश रखकर भारतीय संस्कृति की परम्परा का उत्सव किया गया था । प.पू. महाराजश्री के वरद् हाथों से सार्धशताब्दी महोत्सव के आकार को धारण करने वाली सुन्दर केक का कटिंक करके भव्य एक्जीविशन सभी के दर्शनार्थ खुला छोड दिया गया था ।

ता. २६-१०-०४ के दि. सभा में मंदिर के ५० वर्षो की प्रवृत्ति का आलेखन करते हुए ग्रंथ का विमोचन प.पू. आचार्य महाराजश्रीके वरद हाथों से हुआ ।

ता. २७-१०-०४ को शरद पूर्णिमा के दिन मंदिर की प्राणप्रतिष्ठा के महोत्सव की ५०वी सुवर्ण जयंतीका शुभदिन था । प्रातः ७ से १० बजे तक विष्णुयाग की विधि प.पू. महाराजश्री के वरद् हाथों से वेदविधि से संपन्न किया गया । जिसका बड़ी संख्या में हरिभक्तों ने लाभ लिया ।

मंदिर के सिंहासन पर विराजमान भगवान श्रीहरि के मूर्ति का अभिषेक, अन्नकूटोत्सव तथा दीपमालाओं की सुन्दर आरती श्रीहरि के सातवें वंशज प.पू. आचार्य महाराजश्रीने की । जिसका दर्शन अलौकिक था । वहीं पर बहनों के मंदिर में श्री नरनारायणदेव की मूर्ति प्रतिष्ठा वेद विधि से सम्पन्न की गयी । सायंकाल शरदोत्सव तथा महाप्रसाद के प्रसंग पर सार्द शताब्दी महोत्सव की प्रतिकृति के समान पुष्पहार श्री कच्छ सत्संग स्वामिनारायण मंदिर के कार्यवाहक कमेटी की तरफ से प.पू. आचार्य महाराजश्री को पहनाकर भव्य स्वागत किया गया ।

ता. २८-१०-०४ तथा २९-१०-०४ के सायंकाल देश विदेश से आये हुए महेमानों का स्वागत पू. महाराजश्री के वरद हाथों से किया गया । इस प्रसंग के उपलक्ष्य में श्री हेमंत चौहाण (लोक गायक) तथा हसमुख पाटडिया के स्वर में नंद संतो द्वारा बनाये गये कीर्तन की सीडी तथा वीडियो केसेट का विमोचन प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से किया गया ।

ता. ३०-१०-०४ के दिन दोपहर में २-३० बडे हेली काप्टर से ग्लोबसिनेमापर उतरकर प.पू. आचार्य महाराजश्री की शोभायात्रा प्रारंभ की गयी । यह शोभायात्रा इतनी भव्य तथा अलौकिक थी कि इससे पूर्व इतनी जन मेदिनी इस प्रकार की शोभा यात्रा में कभी एकत्रित नहीं हुई थी ।

इतनी अद्‌भुत इस यात्रा की रुपरेखा जो केनिया से अपने मंदिर तक लंबी शोभायात्रा थी कि रास्ते में देखने वालों को भी इस यात्रा में शामिल होने की इच्छा हो जाती थी । श्रीहरि के अपर स्वरुप ऐसे नवनियुक्त प.पू. आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का शोभायात्रा में दर्शन करके सभी की आँखे तृप्त हो गयी । मन प्रफुल्लित तथा आनन्दातिरके से युक्त हो गया था । जिसमें नानाविध कार्यक्रम जैसे - घोडा सवारी, लेजिम बेन्ड पार्टी, सत्संग मंडल, केनिया प्रान्त के सुप्रसिद्ध मसाई डान्स

सभी ने अपनी कुशलता का प्रदर्शन किया । सिंह, हाथी, एवं चिता का वेषधारण करके भिन्न-भिन्न प्रदर्शन के माध्यम से सभी के मन को जीत लिया । तथा शोभायात्रा की शोभा को बढाया ।

सम्पूर्ण शोभायात्रा के समय हेली काप्टर से सुगन्धित सुन्दर फूलोंकी वर्षा की गयी थी । हजारो आफ्रिकन प्रजा भी शोभायात्रा का दर्शन करके दिग्मूढ तथा आश्चर्य चकित हो गयी थी । प.पू. महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के साथ विद्वान संत मंडल हजूरी पार्षद तथा मंदिर के चेयरमैनजी सभी लोग श्रृंगारित बाहन में बैठकर लाभ ले रहे थे । मसाई डान्सरों को ऐसी तान चढी की आज लालजी महाराज को प्रसन्न करना है । जिससे वे सभी लंबी-लंबी कूद करके ड्रांस करने लगे । ऐसी प्रजा भी भगवान को पहचान जाती है । पीछे के भाग में बहने भी वेष परिधान करके भारतीय पम्पराका दर्शन कराये हुए भगवान के नाम की जय घोष कर रही थी ।

जब शोभायात्रा अपने गन्तव्य स्थान पर पहुंची तब प.पू. लालजी महाराजश्री अपने स्थान से उठकर मंदिर के पास हजारो गुबाडे शोभा के लगाये गये थे जिसे आकाश में उडाने लगे । युवान शोभायात्रा में सुन्दर वेशपरिधान करके शोभायात्रा की शोभा बढा रहे थे । यह शोभायात्रा नाईरोबी शहर तथा केनिया की प्रजा के लिए चिर स्मरण बनी रहेगी । सायंकाल ६ बजे शोभायात्रा पूर्ण हुई । सायंकाल कथा श्रवण के बाद सभीने प्रसाद ग्रहण किया ।

ता. ३१-१०-०४ को प्रातः ६-३० बजे स्वामी केशवप्रसाददास के मंत्रोच्चार के साथ प.पू. आचार्य महाराजश्री के बरद हाथों से कथाकी पूर्णाहुति की गयी । सभा में भुज के संत तथा अहमदावाद मंदिर के महंत शा.स्वा. निर्गुणदासजी तथा शा.स्वा. पूर्णप्रकाशदासजी आदि संतोने सुन्दर प्रवचन किया । अंत में सभी सभा को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने शुभाशीर्वाद दिया । यजमान हरिभक्तों का सन्मान किया गया । मंत्रीश्रीने तन, मन, धन से सहयोग करने वाले का आभार व्यक्त किया । घनश्याम बाल धुन के युवक युतियों ने सांस्कृति कार्यक्रम मे पुष्पांजलि का प्रदर्शन बडे दिव्य भारतीय ढंग से किया । सभी के मन को मुग्ध कर दिया । दो पहर १२ बजे प्रसंग पूर्ण होने के बाद ६ हजार हरिभक्तोंने प्रसाद लेकर जीवन की धन्यता का अनुभव किया ।

सायंकाल प.पू. महाराजश्री के शुभ सानिध्य में ठाकुरजीकी थाल का तथा रासोत्सव, बाँल धुन मंडल के नव युवकों की तरफ से सम्पन्न किया गया । यहाँ क.स. स्वामिनारायण मंदिर नाईरोबी के सार्ध शताब्दी महोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री प.पू. लालजी महाराजश्री तथा बहनों के धर्मगुरु पूज्या गादीवालाश्री तथा सभी की अत्यन्त प्रेमालु पूज्या गादीवाला तथा सभी की अत्यन्त प्रेमालु पूज्या श्रीराजा के सांनिध्य में उत्सव भव्याति भव्य सम्पन्न हुआ । जो चिर अविस्मणीय रहेगा ।

(समस्त कार्यवाही कमेटीवती सेक्रेटरी श्री जादवभाई हालाई, अध्यक्ष श्री कुंवरजीभाई मनजी केराई)



वाली (राजस्थान मंदिरका बदला हुआ फोन नं. (०२९६९) २८०१२४

छपैया मंदिर का बदला हुआ कोड नं. (०५२६५) फोन नं. पुराना है ।

Design : Praful Kharsani
Photo : Yogesh Bhavsar

॥ श्री नरनारायणदेव पीठस्थान पदारोहण सन्मान स

॥ आमंत्रण पत्रिका ॥

॥ श्री स्वामिनारायणो विजयतेतराम ॥



अवतीर्य निजाक्षरात्परादिहमूर्त्या वत
भुवि भारतजीवशर्मणे त

इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायणे स्वहस्ते संस्थापित करेली श्री
नरनारायणदेव देश अमदावादनी गादी पर अमारा सुपुत्र लालजी
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजीने असीओ आसो सुद-रने शुभ मंगलदीने
ता.२५-१०-२००४ शुक्रवारना रोज पदारुढ कर्या छे॥ तेमनी सन्मान
समारोह आसो सुद-१०॥ विज्या दशमीना पवित्र दिवसे
ता.२३-१०-२००४ शनिवार ना रोज राखवामां आवेल छे॥
तेमां सहभागी थवा आप सौ त्यागी गृही सत्संगीओने हार्दिक
निमंत्रण पाठवीओ छीओ॥

॥ स्ती.॥

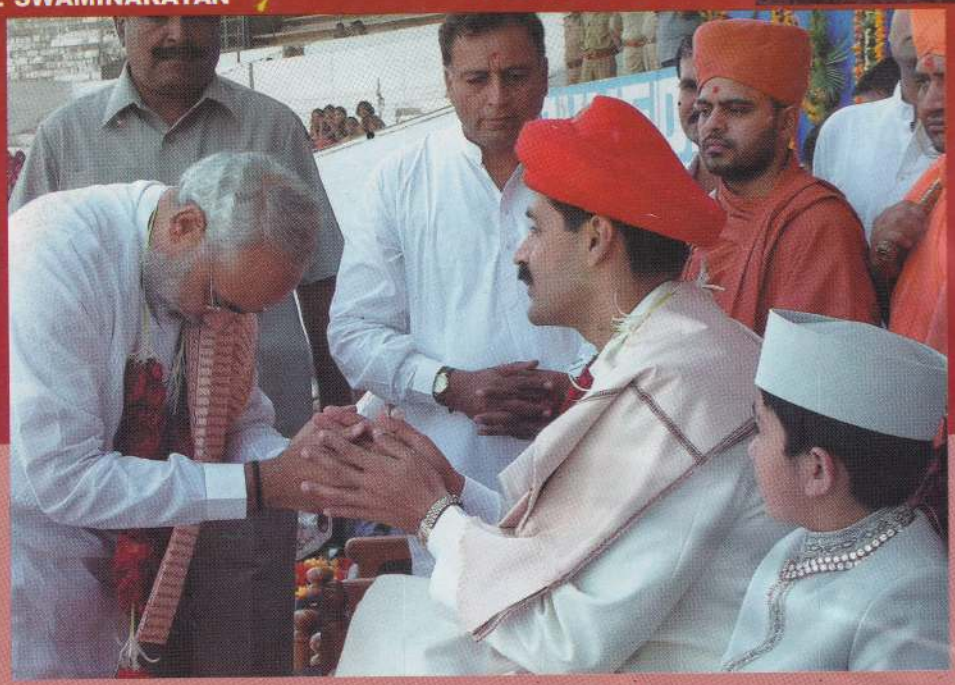
॥ प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज श्री॥



वंदनीय बिदुराजी के युग्म पुत्र रत्न - सर्वश्री सुव्रतकुमार एवम् सौम्यकुमार चौल संस्कारकी पूर्व पूजा समर्पित करते हुए हवेली मंदिर में ।







पदाभिषेक सत्कार समारंभ में उपस्थित माननीय मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी ने अपने आप को सौभाग्यमान पाया । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने शाल-दुशाला द्वारा उनका सम्मान किया ।



श्रीहरि के मूर्त स्म ध.धु. आचार्यश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने निवृत्ति समय का पाटोत्सव अपने बद्रिनारायण मंदिर में भक्ति-भाव से सम्पन्न किया । बद्रिनाथ धाम के महंत पू. श्री राउलजीने शाल एवं पुष्पहार से आचार्यश्री का स्वागत किया ।